

THE CRAPLER



The Central Reserve Police News Letter & Magazine
1986

THE CRAPLER



**The Central Reserve Police News Letter & Magazine
1986**

Contents

Hindi Vol. 15: No. 1

Hindi Vol. 1: No. 1

Hindi Vol. 1: No. 2

Hindi Vol. 1: No. 3

Hindi Vol. 1: No. 4

हिन्दी संस्करण (त्रैमासिक)

क्रैपलर

खण्ड XV अंक I

केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल की पत्रिका

मार्च 31, 1986 (शक चैत्र 10, 1908)



- नेतृत्व: एक अध्ययन
- अधिकारियों की दीक्षान्त परेड
- क्रीड़ा के मानचित्र में के-रि-पु बल का स्थान



प्रधानमंत्री से राष्ट्रपति पुलिस वीरता पदक (मरणोपरांत) पाती हुई, त्रिपुरा की एक घात में मारे गये सहायक कमांडेंट वी.के. खुल्लर की विधवा पत्नी।

क्रे प ल र

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल
की
सचित्र पत्रिका

(हिन्दी संस्करण-त्रैमासिक)

खण्ड XV
अंक I

मार्च 31, 1986
चैत्र 10, 1908

मुख्य सम्पादक :
एच० एस० सेठी

हिन्दी सम्पादक :
जे० एस० शर्मा

[छाया : एस. के. खन्ना]

मुख्य पृष्ठ :

के० रि० पु० बल के 46वें वार्षिकोत्सव की परेड का नेतृत्व करने वाले अधिकारियों को बधाई देते हये प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी।

सम्पादकीय कार्यालय :

द्वारा महानिदेशालय, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, ब्लॉक 1, सी. जी. ओ. कॉम्पलेक्स, लोधी रोड, 110003.

मुद्रक—सी० आर० पी० एफ० प्रेस, नई दिल्ली-110072

प्रकाशक—महानिदेशक के० रि० पु० बल की ओर से एच० एस० सेठी।

सम्पादकीय

किसी भी अर्द्ध सैन्य बल के इतिहास में, ऐसे अवसर विरले ही पाये जाते हैं, जब देश के प्रधान मंत्री उसके वार्षिकोत्सव पर सलामी लें। के० रि० पु० बल को अपनी 46वीं वर्षगांठ पर ऐसा ही सौभाग्य मिला। पहले प्रधान मंत्रियों ने के० रि० पु० बल की किसी न किसी बटालियन का निरीक्षण किया था; किन्तु के० रि० पु० बल के इतिहास में यह प्रथम अवसर था, जब प्रधान मंत्री (श्री राजीव गांधी) ने वार्षिकोत्सव पर सलामी ली और अन्य प्रधान मंत्रियों की तुलना में, इस बल को अधिक निकट से देखा तथा समस्त देश के पुलिस अधिकारियों के मस्तिष्क में उभरती हुयी कितनी ही समस्याओं पर, उन्होंने विस्तार से चर्चा की। साथ में, केन्द्रीय गृहमंत्री श्री एस. बी. चव्हाण तथा आन्तरिक सुरक्षा गृह राज्य मंत्री, श्री अरुण नेहरु ने इस बल के वरिष्ठ अधिकारियों के सम्मेलन को सम्बोधित किया। इस अंक में, उन भाषणों का सम्मिलित होना स्वाभाविक ही है।

नौ वर्षों के उपरान्त, मंत्रीमंडल के सचिवालय के विशिष्ट ब्यूरो के अधिकारियों के साथ, के० रि० पु० बल के सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों का एक दल, आन्तरिक सुरक्षा अकादमी, के० रि० पु० बल, आबू से उत्तीर्ण हुआ। उसकी भव्य दीक्षान्त परेड की भी इस अंक में परिचर्चा है।

इस बल के अधिकारियों के लिये अतीव रुचि के विषय—‘नेतृत्व’ पर, वाद-विवाद को भी इस अंक में सम्मिलित करने का कार्य चालू रखा है।

—(ह०) एच० एस० सेठी

I. रिपोर्टाज :

- (क) पुलिस कर्मियों के लिये संशोधित आचार संहिता
- (ख) गृहमंत्री का जिम्मेदारी पर बल
- (ग) के० रि० पु० बल में बारी-बारी प्रशिक्षण
- (घ) प्रशिक्षण के आधुनिकीकरण पर गृहराज्यमंत्री का आग्रह
- (च) फोटो प्रतियोगिता

लेख :

- (क) नेतृत्व : एक अध्ययन, ले०—बी चक्रवर्ती
- (ख) क्रीड़ा के मानचित्र में के० रि० पु० बल का स्थान ले०—एस. एच. सेठी

III. क्रीड़ा क्षेत्र :

IV. कहानी :

इन्तजार, ले०—सहायक कमांडेंट निर्मल सिंह, 78 बटालियन

कविता :

- (क) पथ विचलित कभी नहीं होना, रचयिता—स० उ० नि० हंसराज ओझा
- (ख) आधुनिक जीवन और मानव, रचयिता—अनुभाग अधिकारी नानकराम हीरा

VI. विविधा :

- (क) विज्ञान के बढ़ते चरण
- (ख) सूक्ति सुधा
- (ग) पहेलियाँ

क्रेपलर अंग्रेजी में भी प्रकाशित होती है। इसमें प्रकाशित सामग्री के प्रयोग के लिए, कृपया मुख्य संपादक को लिखें। इसमें प्रकाशित सामग्री का आधिकारिक दृष्टिकोण के सर्वथा अनुरूप होना आवश्यक नहीं है।

पुलिस कर्मियों के लिये संशोधित आचार संहिता

सरकार ने देश के पुलिस कर्मियों के लिये निम्नलिखित संशोधित आचार संहिता विहित की है :

1. पुलिस को भारतीय संविधान के प्रति निष्ठा रखनी होगी और उसमें दिये गये नागरिक अधिकारों का वह आदर तथा समर्थन करेगी।

2. विधिवत् पारित किसी भी कानून की आवश्यकता और औचित्य पर पुलिस को सन्देह नहीं करना चाहिये। पुलिसजनों को, बिना भय या कृपा के या दुर्भावना या बदले की भावना के, कानून को दृढ़ता और निष्पक्षता पूर्वक पालन कराना चाहिये।

3. पुलिस को अपने अधिकारों और कार्रवाइयों की सीमाओं को पहचानना और आदर करना चाहिये। पुलिसजनों को न्यायपालिका के कार्यों को हड़पना या हड़पने का आभास तक नहीं देना चाहिए तथा मनुष्यों से बदला लेने और अभियुक्तों का दण्ड देने के लिये, अभियोगों पर जजी-निर्णय नहीं देना चाहिये।

4. कानून पालन कराने या व्यवस्था बनाये रखने में, जहाँ तक व्यवहार्य हो, पुलिस को फुसलाने, परामर्श तथा चेतावनी के मार्ग अपनाने चाहिये। जब बल का प्रयोग अनिवार्य हो ही जाये, तब स्थितियों के अनुरूप अहास्य न्यूनतम बल का ही प्रयोग किया जाये।

5. पुलिस का प्रमुख कर्तव्य है, अपराध और अव्यवस्था की रोकथाम करना और उसे यह जान लेना होगा कि इन दोनों की अनुपस्थिति ही, उसकी दक्षता की कसौटी होती है न कि उनसे सुलझाने में पुलिस कार्यवाही का दीखता हुआ साक्ष्य हो।

6. पुलिस को यह मानना होगा कि पुलिसकर्मी जनता के सदस्य हैं, भेद इतना सा है कि उन कर्तव्यों की ओर पूर्णकालिक ध्यान देने को, वे समाज के हित में और उसकी ही ओर से, नियुक्त हुये हैं, जिनको करना सामान्यतः प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है।

7. पुलिस को यह समझना चाहिये कि कर्तव्यों के पालन की दक्षता, जनता से पाये जाने वाले इच्छापूर्वक सहयोग की मात्रा पर निर्भर होगी। बदले में, अपने आचार-व्यवहार की स्वीकृति पाने तथा जनता से आदर और विश्वास पाकर बनाये रखने की योग्यता पर, यह आश्रित होगी।

8. पुलिस को अपने ध्यान में सदा जन कल्याण की भावना रखनी चाहिए और जनता के प्रति विचारशील तथा सहानुभूतिपूर्ण होना चाहिये। पुलिस जनों को व्यक्तिगत सेवा और मित्रता का हाथ बढ़ाने के लिये सदा तैयार रहना चाहिये तथा धन और सामाजिक स्थिति का ध्यान किये बिना, सब किसी को आवश्यक सहायता देनी चाहिये।

9. पुलिस को स्वाथ से ऊपर उठकर कर्तव्य को सर्वोच्च स्थान देना चाहिये, आतंक, अनादर या उपहास के समय शान्त रहना चाहिये और दूसरों के प्राण बचाने के लिये, अपना जीवन बलिदान करने को तैयार रहना चाहिए।

10. पुलिस को विनम्र और अच्छे व्यवहार वाला होना चाहिये; पुलिस कर्मियों को विश्वसनीय तथा निष्पक्ष होना चाहिये; उनमें साहस और मान होना चाहिये तथा उन्हें अपना चरित्र निर्माण करना चाहिये और जनता का विश्वास पाना चाहिये।

11. सर्वोच्च कोटि की ईमानदारी, पुलिस की प्रतिष्ठा का मूलभूत आधार होता है। यह समझकर, पुलिस जनों को अपना जीवन नितान्त स्वच्छ रखना चाहिये, आत्मनियंत्रण विकसित करना चाहिये तथा अपने निजी और सरकारी जीवन में, क्या मन और क्या कर्म से, सच्चा और ईमानदार होना चाहिये, जिससे जनता उन्हें आदर्श पुरुष माने।

12. पुलिस जनों को यह जानना चाहिए कि उच्च कोटि के अनुशासन को बनाये रखने से, कानून के अनुसार कर्तव्य पालन से, कमानाधिकारियों के वैध निदेशों की पूर्ण आज्ञाकारिता से, अपने बल के प्रति परम निष्ठा से तथा स्वयं को निरन्तर प्रशिक्षण और तत्परता की स्थिति में रखने से ही, राज्य को उनका पूरा-पूरा उपयोग अधिक से अधिक सुनिश्चित हो सकता है।

13. एक धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक राज्य के सदस्य होने के नाते, पुलिस को निरन्तर यह चेष्टा करनी चाहिए कि अपने पूर्वग्रहों से ऊपर उठे और धार्मिक, भाषायी और क्षेत्रीय या वर्गीय विभिन्नताओं से ऊपर उठकर, सभी भारतवासियों में भाई-चारे की भावना तथा सामंजस्य को बढ़ावा दे तथा महिलाओं और समाज के अलाभान्वित वर्गों को अनादृत करने वाले रीति-रिवाजों का परित्याग करे।

पाठकों से अनुरोध

3 फरवरी 1986 को महानिदेशालय की मासिक बैठक में, यह निर्णय हुआ है कि इस पत्रिका का नाम बदला जाये। नये उपयुक्त नाम के लिये, पाठकों के सुझाव आमंत्रित हैं।

साथ ही, 'केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल' के विषय पर एक ऐसे 'गीत' बनाने का अनुरोध है, जिसकी बाद को उत्तम धुन बन सके। सर्वश्रेष्ठ गीत-लेखक को 2,000

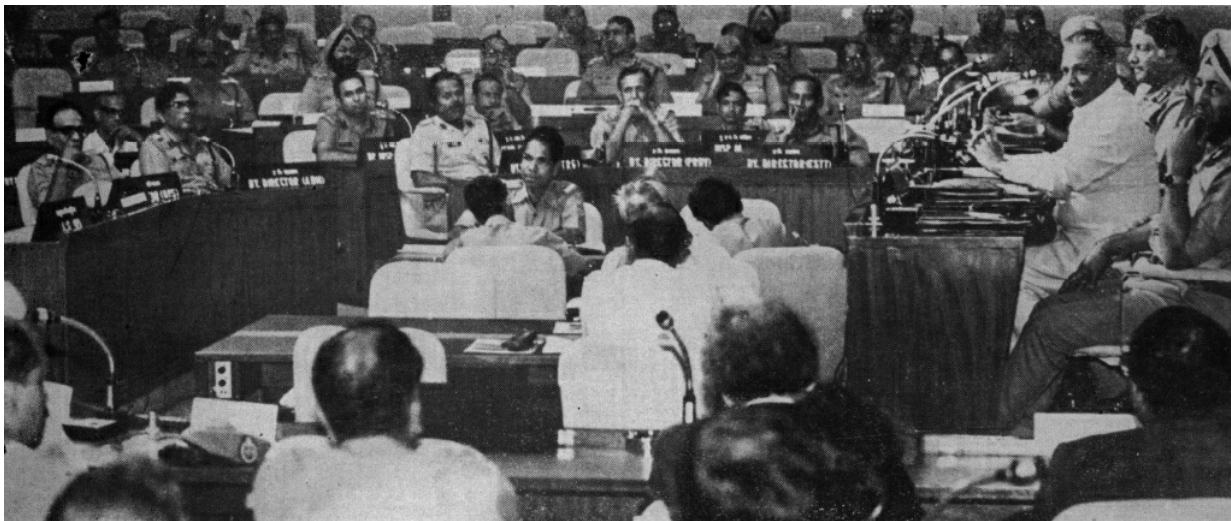
रु० का पुरस्कार दिया जायेगा। इसी प्रकार उस गीत की सर्वोत्तम धुन बनाने वाले को 4,000 रु० का पुरस्कार मिलेगा। प्रविष्टियाँ शीघ्रातिशीघ्र, किन्तु जून के अन्त तक, मुख्य सम्पादक जन सम्पर्क विभाग, महानिदेशालय, के० रि० पु० बल, सी० जी० ओ० कॉम्पलेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली 110003 पर अवश्य पहुँच जानी चाहिए।

संकट (प्रतिफल) निधि से अधिक सुविधायें

महानिदेशक की अध्यक्षता में 5 फरवरी 1986 को आयोजित केन्द्रीय संकट (प्रतिफल) निधि की शासीनिकाय की बैठक में, सेवारत कर्मियों की मृत्यु होने और सेवारत कर्मियों को अशक्त घोषित होने पर, उन्हें अधिक सुविधायें देने का निर्णय लिया गया है।

सेवारत कर्मियों की मृत्यु पर, उसके निकटतम सम्बन्धी को अब 17,000 रुपये की एकमुश्त अनुदान के साथ, 20 वर्षों के लिए 400 रु० प्रतिमास पेंशन मिलेगी। सरकार द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं के अतिरिक्त, ये धनलाभ और मिलेंगे।

पूर्णतः अशक्तता के मामलों में, एक कर्मियों को 15,000 रु० के एक मुश्त अनुदान के साथ, 15 वर्षों तक 200 रु० प्रतिमास पेंशन मिलेगी, जबकि अशक्तता के अन्य नेमी मामलों में, केवल 15,000 रु० का एक मुश्त अनुदान दिया जायेगा।



गृहमंत्री का जिम्मेदारी पर बल

नई दिल्ली में, 29 अक्टूबर 1985 को श्री एस० बी० चव्हाण, केन्द्रीय गृहमंत्री ने कहा—“अधिकार के प्रतीक होने के नाते वर्दीधारी सिपाहियों पर जनता के प्रति बड़ा उत्तरदायित्व तथा जिम्मेदारी है। उनके कार्य ऐसे होने चाहियें, जिनसे जनता और सरकार के बन्धन दृढ़ और जुड़े रहें।”

श्री चव्हाण, नई दिल्ली के विज्ञान भवन में के० रि० पु० बल के वरिष्ठ अधिकारियों के सम्मेलन में बोल रहे थे। इस संदर्भ में मंत्री महोदय ने कहा कि इस बल की बहुमुखी भूमिका ने [जिसमें राजद्रोह तथा आतंकवाद की चुनौतियों से मुकाबला तथा मानवीय कृत्यों का पालन सम्मिलित है] के० रि० पु० बल को जनता का कण्ठहार बना दिया है।

श्री चव्हाण ने कहा ‘सरकार के० रि० पु० बल के कठोर सेवाभारों से परिचित है, जो प्रतिकूल परिस्थितियों में अधिक व्यस्त रहने के फलस्वरूप, जिसके कर्मी विश्राम तथा राहत नहीं पा सके हैं। उनको अत्यावश्यक विश्राम देने के लिए सरकार एक योजना बना रही है।

देश में शान्ति तथा सुदृढ़ता का वातावरण बनाने के लिए, के० रि० पु० बल द्वारा दिये जा रहे सहयोग की उन्होंने प्रशंसा की। मंत्री महोदय के भाषण का अविकल रूप निम्न प्रकार है :—

“हमारे देश में बड़ी-बड़ी घटनाओं के विशेषतया इस युग में आज अपराह्न आपके मध्य में स्वयं को पाकर मैं अतीव प्रसन्न हूँ।”

“देश में सुदृढ़ता बनाये रखने में, के० रि० पु० बल को एक बड़ी भूमिका निभानी पड़ती है, जिससे भारत की जनता के जीवन की गुणवत्ता के सामाजिक एवं आर्थिक विकास के कार्यक्रम में सुधार किया जा सके। कानून पालिनी प्रकृति को बनाये रखने

के लिए, जनता के कुछ वर्गों के व्यवहार को संशोधित करना आवश्यक है।”

“जीवन-स्तर को विश्वस्त रूप से सुधारने के लिए अग्रसर होता हुआ भारत जैसे विशाल गणतंत्र के वास्ते, नियंत्रक बलों को शान्ति और सुदृढ़ता के वातावरण को पैदा करना लाजिमी हो जाता है। इस सन्दर्भ में, के० रि० पु० बल को एक मूल्यवान और सक्रिय भूमिका निभानी है।

“मुझे पता लगा है कि चार वर्ष बाद 1989 में, के० रि० पु० बल अपनी स्वर्णजयन्ती मनाने जा रहा है। विभिन्न स्वार्थों से विविध दिशाओं की ओर खींची जाती हुयी जनता को एकता के सूत्र में बांधे रखने में, ऐसे पुरातन बहुमुखी बल ने अत्यधिक योगदान किया है। अपने विकास तथा प्रगति के लम्बे इतिहास में, इस बल ने अपने अनेक अधिकारियों और जवानों की प्राणाहुतियाँ दी हैं, कई अलंकरण और पुरस्कार पाये हैं, गोलाबारूद के साथ अनेकों राजद्रोहियों, वाँछित विद्रोहियों और आतंकवादियों को बन्दी बनाया है तथा सबसे बढ़कर, संकटों और विपत्तियों से पीड़ितों को राहत और सहायता प्रदान की है। इस बल की बहुरंगी भूमिका ने इस संगठन को भारतीय जनता का चहेता बना दिया है।”

“आदर्श स्थिति तो तब होगी, जब बल का प्रयोग कम से कम हो और जनता अपनी देखरेख स्वयं अधिक से अधिक करे। बहरहाल, ऐसी स्थिति तभी हो सकेगी, जब जिस जनता के लिए हम गंभीर रूप से चिन्तित हैं, उसमें ही समझ और जागरूकता उत्पन्न हो।”

“लोकोक्ति है कि कायर हर दिन मरते हैं, जबकि वीरपुंगव केवल एक ही बार पराक्रमी मृत्यु का आलिंगन करते हैं। सेवा-भक्ति के उद्देश्य और आदर्शोक्ति का अनुपालन, के० रि० पु० बल में हुआ है, जिसके लिए अनेकों ने अपने जीवन बलिदान किये हैं; बहुतों को विकलांग होना पड़ा है और उनसे भी अधिक कर्मियों को सेवा के लिए अशक्त होना पड़ा है। यह बल अधिकारी-उन्मुख संगठन है। के० रि० पु० बल एक ऐसा संगठन भी है, जो अपने जवानों के चरित्र तथा संस्कृति को बनाता तथा रूपायित करता है। ये उच्चस्तर के अधिकारी ही हैं, जिन्हें जवानों को पूर्वनिर्दिष्ट लक्ष्यों पर पहुँचने के लिए प्रेरित करना चाहिये। वाँछित उद्देश्यों को पाने के लिए आवश्यक निर्देश देने के वास्ते, इस सम्मेलन में उपस्थित अधिकारियों को एक परमावश्यक भूमिका निभानी है।

‘सारे देश में इस बल के छितराये प्रविस्तारण के कारण, स्थानीय अधिकारी निर्णय लेने में स्वाधीन से होते हैं और उनकी बुद्धिमत्ता तथा प्रौढ़ता, मानव स्थितियों से उभरते हुये परिणामों पर महान प्रभाव डालती हैं।

“देश के विभिन्न कोनों में यूनिटों की कार्रवाई से सरकार का नाम और प्रतिष्ठा भी परस्पर जुड़ी है। अधिकार के प्रतीक होने के नाते, वर्दीधारी सिपाहियों की जनता के प्रति बड़ा उत्तरदायित्व तथा जिम्मेदारी है और अतएव उनके कार्यों को सन्तुलित और परिमापित करना पड़ता है, ताकि सरकार और जनता का बन्धन दृढ़ और गठित रहे।”

“आज की स्थिति में, के० रि० पु० बल के दशन और रुख को मनुष्यों की आशाओं और आकांक्षों के तरंग-आयामों के अनुकूल ढालना होगा। इसके लिये, व्यवहार में लचीलापन, समझदारी, समझौते की भावना और साथ में, जनता का विश्वास बनाये रखने की इच्छा शक्ति की आवश्यकता है। सरकार के सबसे अधिक पुराने और बड़े अर्द्ध सैन्यबल होने के नाते, के० रि० पु० बल के कंधों पर सबसे अधिक जिम्मेदारी है। हमें यह सुनिश्चित करना है कि इस बल के क्रियाकलापों के द्वारा, जनता सरकार की निष्पक्ष छवि देख सके।

“युनेस्को की प्रस्तावना में उल्लेख है—क्योंकि युद्ध मनुष्य के मस्तिष्कों में शुरू होते हैं, मनुष्यों के मस्तिष्कों में ही शान्ति रक्षा का निर्माण होना चाहिये।’ अतएव, अपने व्यवहार तथा कार्यवाही से जन साधारण में विश्वास पैदा करके शान्ति बनाये रखना, के० रि० पु० बल का परमधर्म है, जिससे जनसाधारण के सुधार के लिये, जनता की अनुमति से सरकार कारगर रूप से कार्य कर सके। जैसा स्वामी विवेकानन्द ने कहा है— ‘जो दूसरों के लिये जीते हैं, वे ही केवल जीवित हैं; शेष सब जीवित की अपेक्षा मृत हैं।’ शान्ति-व्यवस्था बनाये रखने के लक्ष्य से देश के दूर क्षेत्रों में सेवा करते हुये, इस नीति का पालन करना होगा।

“मुझे पता है कि के० रि० पु० बल को, आराम के निम्नतम स्तर तक के अभाव वाले आदिम सुविधाओं के अजनबी क्षेत्रों के सहित प्रतिकूल परिस्थितियों में, कठिन सेवाभार उठाने पड़ते हैं। इसके जवानों को राजद्रोह, उग्रवाद, आतंकवाद इत्यादि से निपटना पड़ता है, जिसके लिये उनकी कुशलता को वांछित आक्रमण और बेधनशीलता बनाये रखने के हेतु, लगातार तेज करना है।

‘इन्हीं दिनों, विषम परिस्थितियों में जनशक्ति के अत्यन्त उपयोग के कारण, प्रशिक्षण की बड़ी उपेक्षा हुई है और अब कर्मियों में पुनः शक्ति प्रदान करने के लिये, कुछ चैन-विश्राम देने के वास्ते, स्थिति को उलटना होगा। इस उद्देश्य को पाने के लिये, हम योजना बना रहे हैं : किन्तु उसकी सफलता, अनेकों बाहरी तथ्यों पर निर्भर करती है। इसी प्रकार, सैनिक की क्षमता और गुणवत्ता को सुधारने के लिये प्रशिक्षण को कारगर साधन बनाने के वास्ते, प्रशिक्षण-संस्थानों में प्रशिक्षकों की दक्षता को बढ़ाना होगा। मुझे विश्वास है कि आप इन विषयों पर सूक्ष्मतापूर्वक करीबी से विचार कर रहे होंगे।’

गणतंत्र दिवस पर के० रि० पु० बल की प्रभावशाली टुकड़ी

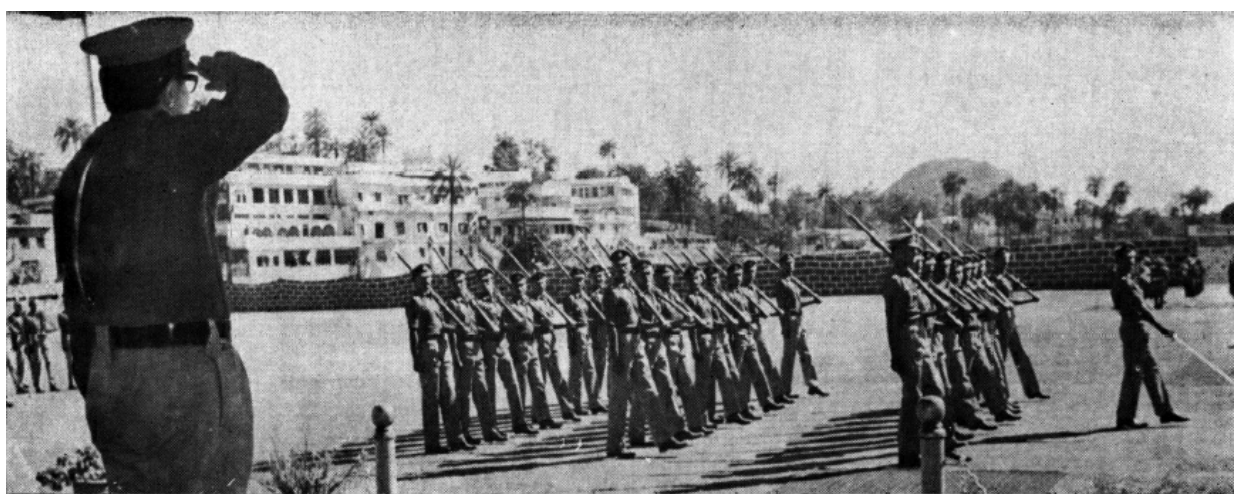
इस वर्ष, गणतन्त्र दिवस परेड के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की टुकड़ी में

विभिन्न पदों के 74 जवान थे और उसका नेतृत्व श्री आर० एन० सिंह, पुलिस उपाधीक्षक, ने किया।

कलाईदार किरचों से सुसज्जित 7.62 रायफलों को लिये, सभी छै फुटे लम्बे चुस्त प्रदर्शन करने वाले जवानों की यह परेड, सभी प्रकार से प्रभावशाली थी।

उनकी वर्दियों में नीले रंग का पुट था। सिर पर गहरे नीले रंग के पग पर धारीदार नीली पट्टी, आसमानी 'तर्रा' और सुनहरी 'झालर' थी। के० रि० पु० बल के प्राधिचिह्न वाला एक नीला स्कार्फ (समाल) उनकी ग्रीवात्रों को सुशोभित कर रहा था। पद-कन्धे के नीचे नीली सर्ज की पट्टी वाली अंगोला कमीज वे पहने हुये थे और बायीं बाजू पर, के० रि० पु० बल का यूनिट चिह्न था। कमर में एक नीला कमर बन्ध था, जिसके ऊपर सफेद चर्मपेटी थी।

काले जूतों के ऊपर सफेद पट्टियाँ खूब भेद दर्शा रही थीं।



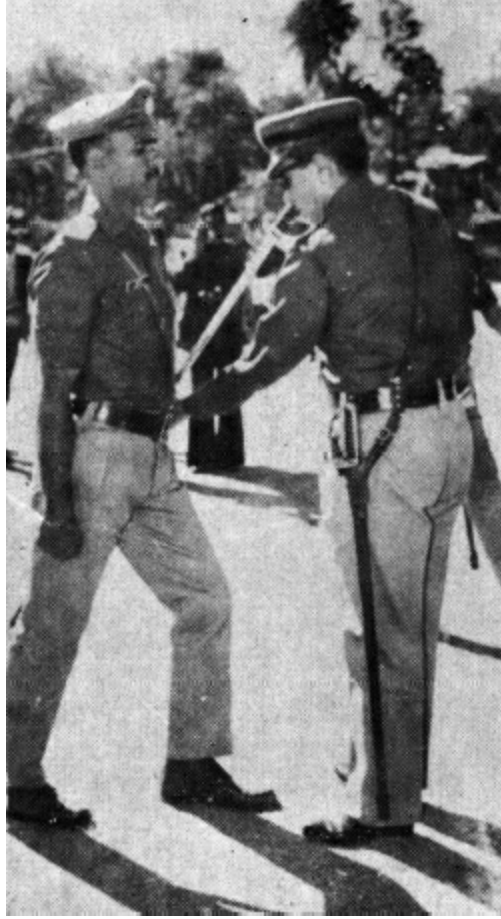
आन्तरिक सुरक्षा अकादमी, माउण्ट आबू में सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों की दीक्षान्त परेड में सलामी लेते हुए श्री एस० डी० पाण्डेय, महानिदेशक, के० रि० पु० बल।

के० रि० प्र० बल में बारी-बारी से प्रशिक्षण की सुनिश्चितता

सारे देश में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की प्रत्येक कम्पनी को हरेक वर्ष बारी-बारी से प्रशिक्षित करने की दीर्घकाल से इस बल की चली आ रही मांग को केन्द्रीय सरकार ने स्वीकार कर लिया है। इस वर्ष के प्रथम दिन से यह निर्णय लागू हो गया है। अभी तक, इस बल को प्रशिक्षण देने का समय नहीं मिल सका था, क्योंकि इसकी जनशक्ति हर समय सक्रिय सेवा में व्यस्त रहती थी।

आन्तरिक सुरक्षा अकादमी, माउण्ट आबू में 21 दिसम्बर 1985 को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल तथा मंत्री मण्डल सचिवालय के विशिष्ट सेवा ब्यूरो के सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों की दीक्षान्त परेड की सलामी लेते समय, श्री एस. डी पाण्डेय, महानिदेशक, के०रि०पु० बल ने यह घोषणा की।

महानिदेशक ने बताया कि के०रि०पु० बल की नई ग्यारह बटालियनें अपना प्रशिक्षण पूरा कर मार्च 1986 के अन्त तक प्रविस्तारण के लिये तैयार हो जायेंगी। साथ ही, न्याय-व्यवस्था की वर्तमान स्थिति के संदर्भ में विशेष आवश्यकता की पूर्ति के लिये, एक महिला-बटालियन के गठन के लिये, शीघ्र ही भर्ती प्रारम्भ होगी। आन्तरिक सुरक्षा की बढ़ती जरूरतों तथा आतंकवाद से उत्पन्न स्थिति से सुलझने के लिये, के०रि०पु० बल का आधुनिकीकरण करना होगा। परेड के चुस्त प्रदर्शन के लिये श्री पाण्डेय ने प्रशंसा की।



श्री वी० के० सदानन्दन को सम्मान खड्ग प्रदान करते हुए श्री पाण्डेय

28 अधिकारीगण—के० रि० पू० बल के 20 और विशिष्ट सुरक्षा ब्यूरो के 8 पुलिस उपाधीक्षक बनने के लिये उत्तीर्ण हुये। विशिष्ट सुरक्षा ब्यूरो के श्री वी. के. सदानन्दन को सर्वांगीण सर्वोत्तम प्रशिक्षणार्थी घोषित किया गया और उसे सम्मान-खंग को प्रदान किया गया। रजत पदक श्री भूपतसिंह चौहान सर्वश्रेष्ठ बहिरंग (प्रशिक्षणार्थी) तथा श्री प्रदीप कुमार सिंह (सर्वश्रेष्ठ अन्तरंग प्रशिक्षणार्थी) को दिये गये। तीन लोटन टाफियाँ—1. सर्वोत्तम 'वक्ता' की श्री आर. के. सिंह को 2. सर्वश्रेष्ठ 'लक्ष्यभेदक' की श्री दीपक मोजेज और 3. सर्वश्रेष्ठ 'खिलाड़ी' की, श्री राकेश चन्दर को प्रदान की गई।

नेतृत्व : एक अध्ययन

लेखक—बी० चक्रवर्ती

अब्राहम जालेजानेक ने एक बार कहा था 'नेतृत्व की समस्या जिम्मेदारों स्वीकार करने में है।'

अपने-अपने कार्यों को उत्साहपूर्वक तथा विश्वास के साथ पूरा करने के लिये, दूसरों को मना लेने की योग्यता को ही नेतृत्व की परिभाषा कह सकते हैं। हैरोल्ड कुट्ज़ और सिरिल ओ' डोनेल के अनुसार, "उत्साह में काम करते समय ललक, सच्चाई और प्रबलता झलकती है, विश्वास में अनुभव का तथा तकनीकी योग्यता का आभास मिलता है।"

नेता में मार्गदर्शन, संचालन, निदेशन तथा दूसरों से आगे बढ़ने की योग्यता होनी चाहिये। यद्यपि नेता उसी समूह का होता है; किन्तु दूसरों से भिन्न उसकी अपनी अलग पहचान होती है। नेता अपने जत्थे की उसकी क्षमताओं को अधिक से अधिक प्रयुक्त कर लक्ष्यों को पाने के लिये प्रेरित करता है। जत्थे को मार्ग दिखाकर और दूसरों की प्रगति में सहयोग देने के लिए, उनसे आगे बढ़ कर नेता नेतृत्व करता है तथा संगठनात्मक उद्देश्यों को पाने के लिये प्रोत्साहित करता है।

किसी संगठन में उसके सदस्य तब तक उत्साह और विश्वास के साथ काम नहीं कर सकते, जब तक प्रेरणा का, या अवसर का अभाव होगा या प्रतिकूल वातावरण की स्थितियाँ होंगी या मध्यम क्षणी का नेतृत्व होगा। नेतृत्व एक दल को इकट्ठा बाँध देता है और सर्वनिष्ठ उद्देश्यों की ओर अग्रसर कराता है। नेतृत्व का कार्य यह है कि संगठन के सब सदस्यों को अपनी-अपनी अधिकतम क्षमता के अनुसार, संगठनात्मक लक्ष्यों में अंशदान देने के लिये प्रेरित करे।

अभिशाप्त प्रश्न : क्या नेता जन्मजात होते हैं या बनाये जाते हैं ? पुराने समय से, यह प्रश्न समाज शास्त्रियों का ध्यान आकर्षित करता रहा है। 1930 से पूर्व, यह एक दृढ़ विश्वास था कि नेता जन्मजात होते हैं और नेतृत्व के गुण, अर्जित करने की अपेक्षा, विरासत में अधिक पाये जाते हैं। 1930 के पश्चात्, नेतृत्व के विषय में समाज शास्त्रियों की खोजों ने नया मोड़ लिया। फलस्वरूप, कितने ही सामान्य निष्कर्ष रेखांकित किये गये। यह संभव नहीं है कि सभी नेताओं के चारित्रिक गुण-लक्षण और क्षमताओं का एक ही आधारभूत ढाँचा हो। नेताओं के व्यक्तिगत लक्षण महत्वहीन नहीं हैं; किन्तु परिस्थितियों के अनुकूल वे अनिवार्य रूप से परस्पर में अत्यधिक भिन्न होते हैं।

आधुनिक अनुसंधान : आधुनिक सभी खोजें यह अन्तिम निर्णय नहीं देती हैं कि नेतृत्व के लिये, व्यक्तिगत लक्षणों की कोई आधारभूत शाश्वत सहिता नहीं है। हाल के अनुसंधानों ने यह बताया है कि नेतृत्व को जानने के लिये, नेता के निजी गुणों की परिमित सीमाओं से आगे हमें, अपने क्षितिजों को बढ़ाना होगा।

समाज शास्त्रियों द्वारा किये गये आधुनिक खोजों ने दिखा दिया है कि नेतृत्व में चार महान विचरणशील तत्व हैं —(क) नेता की विशेषतायें (ख) संगठन के सदस्यों के रवैये, तथा अन्य निजी गुण (ग) संगठन की खुबियाँ और (घ) सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थितियाँ। खोजों के निष्कर्षों से यह पता चलता है कि नेतृत्व का इन विचरण शीलताओं के मध्य एक सम्बन्ध है।

नेता और पारोस्थाते का सम्बन्ध मूल रूप से चक्करदार है। संगठनात्मक ढाँचा और नीति, शिखर प्रबन्धकों द्वारा स्थापित होती है। एक बार उनके स्थापित होने पर, वे नेतृत्व की सीमायें बनाते हैं, जो संगठन को स्वीकार होंगी। बहरलाल, ऊपर, नीचे और बाहर के प्रभाव संगठनात्मक खूबियों में परिवर्तन लाते हैं, फलतः नेतृत्व-ढाँचे की स्वीकार्य परिभाषा फिर बनाते हैं। यही सिद्धान्त सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक स्थिति पर भी लागू होता है। इस युग के विस्तृत वातावरण को, उन्नीसवीं या बीसवीं सदी के शुरू में वाँछित नेतृत्व से भिन्न नेतृत्व की जरूरत है। आधुनिक युग के नेता नये आयाम दे रहे हैं, जिन्हें भविष्य में, नये नेताओं की जरूरत होगी।

नेता के कौशल : अपने भूमिका के व्यवहार में, नेता तीन विभिन्न कौशल प्रयुक्त करता है : तकनीकी, मानवीय और सांभोधिक। तकनीकी कुशलता, किसी भी प्रकार की प्रक्रिया और तकनीक में मनुष्य के ज्ञान और दक्षता को कहते हैं। एक समुचित दल बनाने और पारस्परिक क्रिया करने की योग्यता में, मानवीय कौशल झलकता है। सांभोधिक कौशल का सम्बन्ध विचारों से होता है। यह नेता को सारांशों को सफलतापूर्वक सुलझने में तथा (माडेल) प्रतिमान बनाने और योजनायें तैयार करने में सहयोग देता है। वह अपने संगठन के अन्दर और बाहर जत्थों के बीच सम्बन्धों को समझने में उसकी मदद करता है।

नेता की प्रमुख जिम्मेदारी, सार्थक उद्देश्यों की ओर अपने दल को प्रेरित करने की होती है। दल के सदस्यों को सोचना चाहिये कि अपने साधनों और उपलब्ध नेतृत्व के द्वारा, उन्होंने अंशदान के लिए कोई महत्वपूर्ण वस्तु पाली है।

एक पुलिस अधिकारी को प्रभावी बनने के लिये पुलिस विज्ञान को जानना होगा और विशिष्ट पुलिस कुशलताओं को विकसित करना होगा। उसे अपने दल को समझना चाहिये, कुशलतापूर्वक पारस्परिक क्रियायें करने के योग्य होना चाहिये, और एक उत्तम दल बनाने में सफल होना चाहिए। साथ में, निज संगठन में प्रगतिशीलता के लिए, उसमें व्यापक दृष्टि और धारणा के विस्तृत क्षितिज होने चाहिये। समाज के प्रति सेवालक्ष्य को पाने के लिये, उसे अपने अधीनस्थ कर्मियों को प्रेरित करना होगा।

नेतृत्व और मनोबल : जब नेतृत्व प्रभावी होता है, तब उच्च मनोबल और अनुशासन उत्पन्न होता है। एफ. जी. रीथलिसवर्ग ने सही ही कहा है- 'जो शारीरिक रचना को दैहिक स्वास्थ्य है, सहकारी पद्धति को वही मनोबल है।' मनोबल के मूल्य को कम नहीं आँका जा सकता।

कीथ डैविस के शब्दानुसार 'संगठन के सर्वोत्तम हितों में, अपनी यथाशक्य योग्यता के अनुसार स्वेच्छापूर्वक सहकारिता के प्रति तथा अपने कामकाज और वातावरण के प्रति व्यक्तियों तथा दल के रुख को, मनोबल कहते हैं। उच्च मनोबल को कई तत्व प्रभावित और मदद करते हैं। उसमें, 'उसके नेतृत्व की गुणवत्ता तथा नेतृत्व द्वारा बनाये लक्ष्य, सामान्य बन्धन, समादर और गर्व झलकता है।'

संगठन पर उच्च मनोबल अधोलिखित प्रभावों को डालता है—

(1) संगठनात्मक लक्ष्यों के प्रति खुशी-खुशी सहयोग (2) संगठन और नेतृत्व के

प्रांते निष्ठा (3) उत्तम अनुशासन या नियमों-विनियमों और आदेशों का स्वेच्छापूर्वक अनुपालन (4) मजबूत संगठनात्मक सहन शक्ति या संकटों के समय, उनसे मुकाबला करने को संगठन की शक्ति (5) संगठन को सौंपे कार्य में उच्चकोटि की रुचि (6) प्ररुचि का समुचित प्रदर्शन और (7) संगठन में गर्व।

कोई भी पुलिस अधिकारी, अपने जवानों में असंतोष को भांप सकता है। यदि अपने जवानों के रुखों के विविध परिवर्तनों के प्रति वह जागरूक है, तब अपने जवानों के गिरे हुये मनोबल के समय, वह सामयिक कदम ले सकता है। अपने लोगों के प्रति वह सदा सजग रहता है। पुलिस जवानों के रुखों तथा व्यवहारों से पुलिस अधिकारी का नेतृत्व झलकता है।

पुलिस अधिकारी को ऐसे साधन खोजने चाहिये, जिनसे जवानों को सन्तुष्टि मिले। किसी अन्य दल के मनुष्यों की भाँति पुलिस जवान, अपने आपको अभिव्यक्त करने की तथा अपने भावों और विचारों को प्रकट करने की मौलिक आवश्यकता का अनुभव करते हैं। पुलिस अधिकारी को उनकी बातें सुनने के लिये तैयार रहना चाहिये। नेता के सुनने तथा अपने जवानों की समस्याओं और अभिव्यक्तियों से निपटने का ढंग ही नेता के रूप में उसकी सफलता की कुंजी है।

नेतृत्व और अनुशासन—आर्थर आर. पेल के अनुसार, ‘अनुशासन की वह मास्तिष्किक स्थिति है, जो स्वेच्छापूर्वक और तुरन्त आज्ञापालन और समुचित व्यवहार के लिये तत्परता पैदा करती है।’ सामूहिक लक्ष्यों को पाने में अनुशासन मदद करता है और इसलिये मनोबल से उसका घनिष्ठ सम्बन्ध है। श्री एस. सी. मिश्रा के शब्दों में—‘उच्च मनोबल और अनुशासन मिल कर, संगठनों की कुशलता को उस स्तर पर पहुँचा देते हैं, जिसे प्रबन्ध बहुत पसन्द करता है।’

किसी भी संगठन में, दबाव के समय अनुशासन स्थिरता लाता है। सभी नेता अपने अधीनस्थों को प्रेरित कर अपने निर्णयों के अनुपालन का उद्देश्य बनाते हैं। आज्ञापालन तात्कालिक होना चाहिए। पुलिस में यह प्रशिक्षण के साथ, अनुशासन से प्राप्त होता है।

निर्णय प्रक्रिया—किसी नेता के गुणों में से एक है तुरन्त निर्णय लेने की योग्यता। कुछ नेता यह पाते हैं कि अपने साथ काम करने वाले दलों को अन्तर्ग्रस्त कर, वे अपने निर्णय का अपेक्षाकृत अधिक कारगर समर्थन और कार्यान्वयन पाते हैं। काम कराने के लिये, अपने मनुष्यों को प्रभावित करने के खातिर, कोई अनुभवी नेता निम्नलिखित आदर्श स्वरूपी नेतृत्व के उपायों को प्रयुक्त कर सकता है—

1. बताना—इस ढंग से, नेता समस्या को पहचानता है; वैकल्पिक समाधानों को समझता है तथा कार्य करने की अपनी रणनीति को दल के सदस्यों को बताता है। अधिकारी अपने जवानों के भावों का अनुमान शायद नहीं लगा सकता है और अन्तिम विश्लेषण में, नेता का निर्णय ही चलता है।

(2) विक्रय—अपने निर्णय को स्वीकार कराने के लिये, नेता लोगों को यह दिखा कर प्रेरित करता है कि वह निर्णय दल के लक्ष्यों को पाने में मदद करेगा।

(3) **परीक्षण**—किसी समस्या के लिये नेता एक समाधान प्रस्तुत करता है; किन्तु अपने आलोचकों को सुनने के बाद ही, वह अन्तिम निर्णय लेता है।

(4) **परामर्श**—दल के सभी सदस्य किसी समस्या के विषय में विचार-विन्मय करते हैं और शुरू से ही अपने-अपने समाधान बताते हैं। नेता सभी तथ्यों को इकत्रित कर अपने निर्णय का समन्वय करता है।

(5) **मेलजोल**—यह लोकतांत्रिक या भागग्राही निर्णय लेने की पद्धति है। दलीय निर्णय को मानने के लिये, वह पहले से ही स्वीकृति देता है।

निर्णय लेने के ढंग का चयन, नेता के व्यक्तित्व और प्रशिक्षण, अन्य सदस्यों तथा स्थिति की किस्म पर निर्भर करता है।

नेतृत्व और संचार—आजकल नेता की मूर्द्धन्य समस्या को एक शब्द में कहा सकता है—संचार व्यवस्था (पर्सनल जर्नल-अप्रैल 1966)। संचार व्यवस्था का अर्थ एक मनुष्य से दूसरे को सूचना और जानकारी पहुँचाने के हैं। यह अर्थों का आदान प्रदान होता है, और होता है वह उपाय, जिससे एक नेता दूसरों के पास कार्य निर्देशन के लिये पहुँचता है। संचार की प्रक्रिया दोहरी है—आरंभ और प्राप्ति।

संचार का ध्येय, कार्य करने और सक्रिय सहयोग कार्य करने की दक्षता और कार्य करने की इच्छा की कुशलता पाने के लिये आवश्यक सूचना को देना है—भाषा, आँकड़ों, ग्राफिकों (रेखा चित्रों) और कार्टवाई के चिह्नों द्वारा, मनुष्य सूचना देते हैं। कारगर संचार व्यवस्था तब उभर कर आती है, जब सभी व्यक्ति और दल समझदारी से पारस्परिक प्रक्रियाएँ करते हैं। संगठनात्मक संरचना में में अपने से ऊँचे-नीचे व्यक्तियों के साथ, नेता सहाकारिता-पूर्वक कार्य करता है।

पुलिस सेवा में पारस्परिक आदर और सहकारिता की जरूरत रहती है। सामान्य उद्देश्य को पाने के लिये, सेवा के हरेक सदस्य को संयुक्त चेष्टा करने की जरूरत में, नेता क्षैतिज और लम्बवत्-दोनों दिशाओं रहती है। सहकारिता को उत्पन्न करते हैं।

नेतृत्व और प्रशिक्षण—अपने जवानों के नेता के रूप में, पुलिस अधिकारी अपने जवानों को विकसित तथा अपनी कार्यक्षमता को कारगर बनाने के लिये, हरेक साधन का प्रयोग करता है। हरेक पुलिस अधिकारी को प्रशिक्षण के मौलिक सिद्धान्तों को जानना चाहिये और अपेक्षाकृत अधिक प्रभावी प्रशिक्षक और अपने जवानों का तुलना में, अधिक उत्तम नेता बनने के लिये, प्रशिक्षण की उष युक्त प्रक्रियाओं को भी जानना चाहिए। एक पुलिस अधिकारी को प्रशिक्षण के इन मौलिक सिद्धान्तों को अपनाना चाहिए—

(1) **प्रेरणा**—सिद्धान्त यह है कि जब कोई मनुष्य सीखना चाहता है, तभी सीखना अत्यधिक कारगर होता है।

(2) **बलवर्धन**—जब कुछ प्रोत्साहन या पुरस्कार दिया जाता है, तब मनुष्य सर्वाधिक सीखता है।

(3) **प्रतिपुष्टि**—परिणामों का ज्ञान होना चाहिए। गलतियों को पकड़ना और

सँभालना चाहिये। कारेवाई के बाद, यथा शीघ्र प्रातिपाष्टे करनी होगी।

(4) **प्रशिक्षण**—प्रशिक्षण तभी सबसे अधिक प्रभावी होता है, जब प्रशिक्षार्थी प्रशिक्षण की प्रक्रिया में सक्रिय भाग लेता है।

(5) **पुनरावृत्ति**—किसी भी प्रशिक्षण को आत्म चालित होने के लिये, पुनरावृत्ति होनी चाहिये।

(6) **तत्परता**—सिद्धान्त के अनुसार, तत्परता या रुचि की मात्रा प्रशिक्षण-प्रक्रिया पर प्रभाव डालती है।

(7) **वातावरणीय प्रभाव**—मनुष्य के प्रशिक्षण की तत्परता, प्रशिक्षार्थी के मेलजोल और उसके अड़ोस-पड़ोस से, प्रभावित होती है।

(8) **मान्यता**—किसी प्रशिक्षार्थी को सर्वाधिक संतोषजनक सिद्धि तब है जब उसकी प्रगति को मान्यता प्राप्त हो।

नेतृत्व के ढंग—सामान्यतः सकारात्मक, सहयोगी और सदस्योन्मुख नेतृत्व की शैलियाँ वांछनीय हैं। सकारात्मक नेतृत्व, दण्ड पर बल देने के स्थान पर वित्तीय या अन्यथा पुरस्कारों पर जोर देता है। सहयोगी प्रबन्ध, नेता के अधिकार का विकेन्द्रीकरण करता है। यह खुली छूट के प्रबन्ध से भिन्न होता है, इसमें अपने उद्देश्यों और समस्याओं के समाधानों के लिये, प्रधान को अपने दल पर निर्भर होना पड़ता है। सदस्योन्मुख नेतृत्व से उच्च मनोबल पैदा होता है और दलीय उद्देश्य पूर्ण होते हैं।

एक सदस्योन्मुख नेता, दल के सदस्यों को प्रतिष्ठित पुरुषों के रूप में मानता है। वह आवश्यकताओं और आकाँक्षाओं को समझता है और उनके मानवीय मान को सम्मान देता है। वह 'संघ' भावना का सृजन करता है, अपने जनों का विकास करता है और उनकी समस्याओं हल करने में उनकी मदद करता है। दूसरी ओर, कार्योन्मुख नेता का यह विश्वास होता है कि उत्तम उपायों की खोज निकालने से, मनुष्यों को निरन्तर व्यस्त रखने से और उनको उत्तम कार्य के लिये उकसाने से, अच्छे फल मिलते हैं। किन्तु भय या पैना मारने से प्रशासन करने का युग अब लद गया। अब नेता 'चलो चलो' नहीं कहता है; अपितु वह कहता है—'आओ चलें।'

निष्कर्ष—समाज को अपनी लाभकारी सेवा प्रदान करने के लिये, पुलिस को ढालने के खातिर, नेतृत्व महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यदि पुलिस से सही प्रकार से नहीं सुलझा गया, तब समाज को वरदान के स्थान पर, वह अभिशाप हो जायेगी। कीथ डेविस ने कहा है 'बिना नेतृत्व के, कोई भी संगठन मनुष्य और मशीनों की कुव्यवस्थित गड़मड़ है।'

प्रशिक्षण के आधुनिकीकरण पर गृहराज्य मंत्री

का आग्रह

श्री अरुण नेहरू, गृह राज्य मंत्री आन्तरिक सुरक्षा ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में उभरती समस्याओं को पहचानने और उनके समाधान निकालने के लिये, इस बलके अधिकारियों से आग्रह किया, जिससे यह बल उत्तरोत्तर प्रगति कर सके।

29 अक्टूबर 1985 को विज्ञान भवन में बरिष्ठ अधिकारियों के सम्मेलन के उद्घाटन के समय, श्री नेहरू ने कहा कि समस्याओं से परिचित होने के लिये वह स्वयं क्षेत्र में जायेंगे और इस बल के लिये कुछ न कुछ ठोस कदम उठायेंगे।

उन्होंने अनुभव किया कि बाहरी शक्तियाँ, भीतरी गड़बड़ियाँ फैला कर, देश की स्थितियों में अस्थिरता पैदा करना चाहती हैं।

बल में नेतृत्व के विषय पर भी उन्होंने चर्चा की तथा अधिकारियों का विविध कोर्सों को करने पर बल दिया।

उनके भाषण के कुछ अंश नीचे उद्धृत हैं

‘जब हमें देश के एतिहासिक परिप्रेक्ष्य पर दृष्टि डालते हैं, तब हम पाते हैं कि एक हजार वर्षों से अधिक आक्रमकों को हमने अपने ऊपर आधिपत्य जमाने दिया। विदेशियों का हमारे ऊपर प्रभुत्व जमाने का मुख्य कारण यह था कि हमने तब एक राष्ट्र के रूप में कभी नहीं उनसे लड़ा। उन्होंने या तो उत्तर को दक्षिण के विरुद्ध या किसी राजा को किसी अन्य राजा के विरुद्ध भिड़ा दिया। किन्तु मूल रूप से हमारा देश सदा विभक्त रहा है। जब कभी हम में आन्तरिक कमजोरी रही, बाहरी शक्तियों ने हमें विस्थापित कर दिया।

‘आज कोई भी पर्वतों पर ढाल-तलवार लिये घोड़े पर सवार नहीं आता है। अब घुसपैठ बड़ी चतुरता की है। सो राष्ट्रीय अखंडता के प्रति हमारी सर्वोपरि वरीयता है और मेरे विचार से, इसका उत्तम कारण है। आज हमारे चारों ओर हरेक व्यक्ति यह देख रहा है कि औद्योगिक, आर्थिक तथा सामाजिक क्षेत्र में, भारत अत्यधिक उन्नति कर रहा है। अतः उनके पास हमें नष्ट या हमारी उन्नति को रोकने का सर्वोत्तम उपाय यही है कि हमें देश के भीतर लड़ाते रहें। घुसपैठ सदा अन्दर से होती है और यही एक बात है, जिसके प्रति हमें सचेत रहना है। प्रधान मंत्री ने यह स्पष्ट कर दिया है कि इन सब परिस्थितियों में, सरकार की नीति संघर्ष की नहीं, बल्कि मेलमिलाप की है। ऐसी कोई भी समस्याएँ नहीं हैं, जो मनुष्य बैठ कर विचार-विन्मय द्वारा नहीं हल कर सकता है।

‘अब के० रि० पु० बल के संदर्भ में, मैं उन बातों की चर्चा नहीं करने जा रहा हूँ, जिन्हें अख्यर ने उठायी है, क्योंकि वे सक्रिय रूप से हमारे विचाराधीन हैं; किन्तु मैं नेतृत्व और जन-प्रबन्ध के विषय में परिचर्चा करना चाहूँगा। इस सभा में, के० रि० पु० बल के सभी वरिष्ठ अधिकारी अब हैं। हरेक अपने अधिकार क्षेत्र का नेता है।

“आष पर संसार भर के सर्वाधिक घातक हाथियार या संचार-व्यवस्था हो सकती है; किन्तु यदि आप पर अभिप्रेरक बल नहीं है, तब संसार भर के सब उपकरण आपके किसी काम नहीं आयेंगे। वास्तव में, नेतृत्व को परिभाषा करना कठिन है। नेतृत्व न तो कोई जन्मजात है और न ही कक्षा में कोई सीखता है। यह ज्ञान से आता है। आप पीछे से नेतृत्व नहीं कर सकते; आपको अपने जवानों के लिये स्वयं को उदाहरण बनना होगा।

“प्रशिक्षण को सभी स्तरों पर उचित ध्यान देना होगा। हमें यह विश्लेषण करना होगा कि क्या के० रि० पु० बल के वर्तमान प्रशिक्षण ढाँचे में परिवर्तन की आवश्यकता नहीं है। हमें भावी आवश्यकताओं पर पहले से ही ध्यान देना होगा।

“कभी कभी प्रशिक्षकों को और भी अधिक प्रशिक्षण की जरूरत होती है। वरिष्ठ अधिकारियों को प्रशिक्षण कोर्सों को करना होगा, क्योंकि शिक्षा ग्रहण करना एक निरन्तर प्रक्रिया है। यदि हमें भविष्य में अच्छी कार्रवाई करनी है, तब हमें अपनी कुशलता को नवीनतम बनाना होगा। हम पर आने वाले वर्ष के लिये प्रशिक्षण प्रक्रियाओं की और नयी पद्धतियों की व्यापक समय सारिणी बनवानी होगी।

“मुझे विदित है कि के० रि० पु० बल बड़ी कठिन परिस्थितियों में काम कर रहा है। मैं केवल क्षेत्रीय स्थितियों के विषय में ही नहीं कह रहा हूँ, किन्तु सभी स्थितियों के विषय में बोल रहा हूँ चाहे वे शस्त्रों के विषय में हो, या गतिशीलता के विषय में अथवा इस तथ्य के बारे में कि आप पर बहुत कार्यभार है या बहुत थोड़े समय के आदेश पर, विभिन्न स्थानों पर आपको जाना पड़ता है। मंत्रालय में हम इस विषय में समीक्षा कर रहे हैं।

“के० रि० पु० बल ने बहुत कार्य किया है और मेरे विचार से, यह हमारी जिम्मेदारी है कि जनता जाने कि के० रि० पु० बल क्या कर रहा है। दो प्रकार के मनुष्य सदा रहते हैं—एक तो वे बैठे हुये पद्धति के नकारात्मक पहलुओं पर सारे दिन नुक्ताचीनी करते रहते हैं और दूसरे वे प्रतिबन्धों के बीच, कुछ करने, हल खोजने और आगे बढ़ने की चेष्टा करते हैं। मेरी मति में, हम सब दूसरी श्रेणी में आते हैं।

“मैं स्वयं क्षेत्रों में जाकर अपने जवानों से मिलने की सोच रहा हूँ, क्योंकि जब तक हम वहाँ नहीं जायेंगे, हम समस्याओं को सही-सही नहीं समझ पायेंगे। हम इन विषयों में कुछ-न-कुछ ठोस कदम उठाने की चेष्टा करेंगे। जैसा पहले मैं कह चुका हूँ, जवान हमारे सब से बड़े मालमता हैं और यही वह वस्तु है, जिसे हमें अध्ययन करना है। विश्लेषण करना है और बनानी है उसके लिए भविष्य की योजना।

“हम हरेक मनुष्य की, हरेक घर की आरक्षा नहीं कर सकते। एक वर्दीधारी सिपाही अधिकार का प्रतीक होता है और मेरे विचार से, हम सब को इकट्ठे होकर, यह सुनिश्चित करना होगा कि वर्दी को जनता से आदर मिले और वह इस आदर के योग्य है।”

39 बटालियन की प्रशंसा

सितम्बर 1985 में हुए पंजाब चुनाव के समय, 39 बटालियन के० रि० पु० बल द्वारा की गई सेवा के प्रशंसा के उपलक्ष्य में, भटिण्डा के उप-आयुक्त ने 5,000 रु० का नकद पुरस्कार दिया। 29 सितम्बर 1985 को, इस बटालियन द्वारा आयोजित 'बड़ा खाना' में उन्होंने, वरिष्ठ पुलिसाधीक्षक तथा अन्य जिलाधिकारियों के साथ भाग लिया।

नव वर्ष का संकल्प



नव वर्ष की पूर्व सन्ध्या पर, कमांडेंटों को लिखे अपने पत्र में, श्री एस. डी. पाण्डेय, महानिदेशक, के० रि० पु० बल ने जवानों को हर प्रकार से देखभाल के लिये तथा देश के प्रति सेवा भक्ति की परम्परा को अनुचालित करने के लिये आग्रह किया।

निम्नलिखित उसका मूल रूप है :—

“जब तक आपको यह पत्र मिलेगा, तब तक नव वर्ष आरम्भ हो चुका होगा। मैं आपके और आपके परिवार के लिये 1986 मंगलमय होने की कामना करता हूँ।

“पिछले मास की प्रमुख घटना असम के चुनाव थे। उसे शान्तिपूर्वक कराने में,

हमारे बल ने यथाशक्ती अपना अतीव महत्वपूर्ण अंशदान किया। के० रि० पु० बल को प्रशंसा प्रकट करने के लिये, असम के पुलिस महानिदेशक और विशिष्ट सचिव, गृह मंत्रालय ने गौहाटी से खुद मुझे उसी दिन फोन किया। इन चुनावों में निरत जवानों ने हमारा सिर ऊंचा उठाया है।

“और तब, पंजाब, मिजोरम, अन्य पूर्वोत्तर राज्य तथा देश में अन्यत्र सेवारत अन्य सहस्त्रों जवान, के० रि० पु० बल की आदर्शोक्ति ‘चलते रहो’ का अथक अनुपालन करते हुये, चुपचाप तथा अनदेखे यत्नों द्वारा मातृभूमि में आन्तरिक शान्ति और स्थिरता को सुनिश्चित करने में भरसक चेष्टा कर रहे थे। के० रि० पु० बल के इन ‘प्यारे’ अधिकारियों और जवानों को, जिनमें से अनेकों को मैंने पिछले मास क्षेत्र में निरत देखा था, आपके द्वारा मैं अपना अभिवन्दन और 1986 को एक बहुत ही आनन्ददायक तथा समृद्धिशाली वर्ष होने की कामनायें भेजता हूँ।

“मैं एक दो सुझाव देना चाहूँगा। नव वर्ष के संकल्प के रूप में विचार करने की एक रीति है और यह कभी भी कोई बचकानी बात नहीं है। नव वर्ष के दिन, अपने सामान्य अभिविन्यास, अपने व्यवहार और पहचान की बारीकी से छानबीन करने तथा उसमें से हर वस्तु को अपने लिए ‘छीनने’ की इच्छाओं और प्रवृत्तियों को निकाल फेंकने का और उनके स्थान पर, ‘देने’— सेवा करने की इच्छा को अंकुरित करने का संकल्प हम क्यों नहीं करें?

के० रि० पुलिस जैसे बल की सदस्यता, इस संकल्प को साकार करने का उत्तम अवसर प्रदान करती है। अपने अधीनस्थ जवानों की हर सम्भव देख-रेख करके तथा अन्यथा अपनी जिम्मेदारियों को अपेक्षाकृत अधिक निष्ठा और कुशलतापूर्वक निभा करके, हम ‘देने’ का कार्य और सेवा कर सकते हैं। इस प्रकार, हम के० रि० पु० बल की ईमानदारी और सेवा की दृढ़ स्थापित उन परम्पराओं को परिरक्षित तथा पालित पोषित कर सकेंगे, जिन्हें हम सब एक मूल्यवान तथा पवित्र वपौती के रूप में पाते हैं।

“एक बहुत बड़ी बात—यह हो सकती है, किन्तु एक जुते पशु की भाँति पुराने चक्करों में काटने के स्थान पर, उच्च उद्देश्य बनाना कहीं उत्तम है। और अन्त में, मैं यह कहना चाहूँगा कि ‘छीनने’ के स्थान पर ‘देने’ की प्रत्येक सच्ची चेष्टा, सर्वप्रथम तो हमारे और हमारे परिवारों के लिये कल्याणप्रद सिद्ध होगी और साथ में, अपने बल और अपने देश की उन्नति में बह सहायक होगी।”

क्रीड़ा के मानचित्र में के० रि० पु० बल का स्थान

लेखक—एच. एस. सेठी

देश के दौड़कूद के क्षितिज पर एक महानक्षत्र का उदय हुआ और वह महानक्षत्र था केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का गुरबचन सिंह रणधावा। तब से के० रि० पु० बल ने कभी मुड़ कर पीछे नहीं देखा : उसने देश की क्रीड़ा के मानचित्र में एक विशेष स्थान बना लिया है।

गुरबचन एक आरव्यायिका था। अर्जुन पुरस्कार पाने, जकार्ता में आयोजित एशियाई खेलों में डिक्थलन में स्वर्ण पदक जीतने, 6'-6" ऊँची कूद, 1962 के भारत जर्मन प्रतियोगिता में 3.5" भाला फेंक, बेंगलूर में आयोजित एशियाई खेलों के परीक्षणों में 6,912 अंक बना कर और आज भी अक्षुण्ण स्थापित 1964 वाला 110 मी० बाधा का 14 से० का रिकार्ड बना कर, चार रिकार्ड स्थापित करने में वह सर्वप्रथम भारतीय था। मिलिखा सिंह के बाद, वही दूसरा भारतीय था, जो ओलिम्पिक खेलों में फाइनल तक पहुंचा।

जबकि गुरबचन ओलिम्पिक खेलों का अगुआ रहा, अथक परिश्रमी नन्हा महान खिलाड़ी हरीचन्द ने उसका अनुसरण किया। 1976 में आयोजित मांट्रियल ओलिम्पिक खेलों में, 10,000 मी० दौड़ को 29 मि० से कम में पूरा करने वाला वह पहला एशिया वासी था। 1978 में हरीचन्द खूब चमका, जब उसने 5,000 मी० और 10,000 मी० दौड़ों में एशियाई खेलों में कीर्तिमान स्थापित किये। देश के खेल पत्रकारों ने तभी 1979 में सर्वसम्मति से 'वर्ष के खिलाड़ी' का खिताब उसे दिया। पिछले वर्ष त्रिवेन्द्रम में आयोजित अखिल भारतीय पुलिस खेलों में, उसने 5000 मी० दौड़ में ही केवल भाग लिया और उसमें स्वर्ण पदक जीत कर अपनी अदुभत प्रतिभा का परिचय दिया।

प्रसंगत : अखिल भारतीय पुलिस खेल, ट्रैक और फील्ड (पथ-क्षेत्र) में देश के पुलिस बलों को जयसम्मान पाने का रोचक मंच प्रस्तुत करते हैं। लगभग सभी स्पर्द्धाओं में अभी तक, के० रि० पु० बल और सीमा सुरक्षा बल सर्वश्रेष्ठ प्रतिद्वन्द्वी रहे थे; किन्तु यह उत्साह वर्द्धक बात है कि पंजाब और केरल के दो राज्य सभी स्पर्द्धाओं में अब होड़ लगाते हैं।

पिछले वर्ष, पुलिस खेलों में भी स्वस्थ प्रतियोगिता की भावना प्रमुख रही, जब के० रि० पु० बल और सी० सु० बल में बड़ा बड़ी होड़ा होड़ी रही। त्रिवेन्द्रम के पुलिस खेलों की आठ स्पर्द्धाओं में से, सी० सु० बल दो (कुश्ती और बास्केट बाल) में विजेता रहा; हॉकी में पंजाब पुलिस के साथ विजयी हुआ दौड़कूद में उपविजेता रहा, जबकि के० रि० पु० बल ने कबड्डी, जिम्नास्टिक्स, कुश्ती और बास्केटबाल में उपविजेता होने के साथ-साथ, दौड़ कूद का सिरमौर जीता।

पंजाब, (सी० सु० बल के साथ) हॉकी में विजयी हुआ तथा फुटबाल और कबड्डी में भी उसने प्रथम स्थान पाया। केरल ने वालीबाल में और भारत तिब्बत सीमा पुलिस ने जिम्नास्टिक्स में सिरमौर जीता।

खेलों के आयोजक जानते हैं कि के० रि० पु० बल में, प्रमुख खिलाड़ियों को

बदलते रहने, को एक निरन्तर प्राक्रेया है। अतएव, देश के सभी भागों से उपयुक्त खिलाड़ी पाने की सतत चेष्टा रहती है। साथ ही, अन्तः बटालियन और अन्तर्रंज प्रतियोगिता कर, यह बल सम्भाव्य दक्षता का चयन करता है, प्रशिक्षित करता है और खेलों में खिलाता है। फलस्वरूप, हरेक रेंज में दक्ष खिलाड़ियों की प्रचुरता है।

शायद इसी कारण से, 1978 को छोड़ कर, के० रि० पु० बल पिछले 14 वर्षों से, दौड़ कूद में अखिल भारतीय पुलिस खेलों में चैम्पियन रहा है।

हरीचन्द और गुरबचन के अतिरिक्त, एथलीट रघुवीर सिंह (शाटपुट और चक्का फेंक), प्रदीप कुमार डोगरा (स्टीपल चेज), रसदेव सिंह (मराथन), सुरिन्दर सिंह (मध्यम दूरी) के नाम सरलता से गिनाये जा सकते हैं, जिन्होंने भारत और विदेशों में यश कमाया है।

यद्यपि के० रि० पु० बल ने दौड़ कूद में खूब शक्ति दिखलायी है; किन्तु अन्य स्पर्द्धाओं में उसका स्तर बदलता रहा है। फुटबाल में राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचने के लिये काफी परिश्रम की आवश्यकता है। पिछले दो वर्षों में, कम से कम 10 फुटबाल खिलाड़ियों को भर्ती किया गया है। सो, ऐसी आशा है कि निकट भविष्य में, के० रि० पु० बल, इस स्पर्द्धा में नाम कमायेगा।

इसी प्रकार, यद्यपि के० रि० पु० बल की अच्छी हॉकी टीम है; किन्तु दिसम्बर 1979 वाली कुशलता फिर उसने कभी नहीं दिखायी, जिससे उसने नेहरू हॉकी टूर्नामेंट दिल्ली में जीता था। नेहरू हाकी के अर्द्ध फाइनल में, 1985 में, यह बल अवरोध भंजक में हार गया। टीम का भूतपूर्व कप्तान एस. एस. मान अब शिक्षक है। हाल में, कुछ छटनी हुयी है और टीम में नए रक्त का संचार हुआ है।

सामान्यतः शतरंज जैसे शान्त और सोचसमझ के खेल के लिये, एक अर्द्धसैनिक पुलिस का सम्बन्ध नहीं होता है; किन्तु के० रि० पु० बलके उच्च अधिकारीगण देश में शतरंज के विकास के लिये आयोजक रहे हैं। नासिर अली दिल्ली का तथा राष्ट्रीय स्तर का चैम्पियन रहा है। प्रवीण थिप्से, जो अर्जुन पुरस्कार विजेता रहा है, अब इस बल को छोड़ गया है। बहरहाल, एक उदीयमान शतरंज के खिलाड़ी की भर्ती कर, इस रिक्तता को पूरा करने की आशा है।

खजान सिंह, टी. जे. जैकब, टोकस, राधाकृष्णन और सोम शेखरन, जैसे प्रमुख तैराकों से आज के० रि० पु० बल परिपूर्ण है। पुलिस टीम में इस बल के अधिकांश खिलाड़ी लेने के कारण ही, वर्षों पहले, उसने प्रतिरक्षा सेना को हरा कर चैम्पियन शिप जीती थी और तब से, उसे उत्तरोत्तर उन्नति मिली है। त्रिवेन्द्रम में, पुलिस तैराकी में, यह बल सरलतापूर्वक निरन्तर नवें वर्ष चैम्पियन रहा। एशियाई खेलों में, भारतीय तैराकी टीम में अधिकतर के० रि० पु० बल के जवान थे। अनेक अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में पुरस्कार पाने वाला और इस वर्ष अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित होने वाला खजान सिंह, आस्ट्रेलिया में एरिक आर्नोल्ड से प्रशिक्षण पा रहा है।

के० रि० पु० बल को अपने पास सुखवन्त सिंह, ईश्वरसिंह और सुरेश चन्दर, तीन रुस्तम-ए-हिन्द, रखने का गर्व है। इन प्रतियोगिताओं में दीवान सिंह, दो बार

उपाविजेता रहा है। अन्तराष्ट्रीय ख्याति का एफ. आई. एल. ए. की परीक्षा में सुखवन्तसिंह और दीवानसिंह सफल उत्तीर्ण हुये हैं।

पिछले वर्ष, कुश्ती में पदकों के लिये, के० रि० पु० बल और सी० सु० बल में जीजान से मुकाबला रहा; किन्तु सी० सु० बल 4 स्वर्ण, 3 रजत और 4 कांस्य पदक पाकर जीत गया, क्योंकि के० रि० पु० बल का कुल योग 3 स्वर्ण और 4 रजत पदक रहा।

कुछ उत्तम जिम्नास्टों पर के० रि० पु० बल को गर्व है। पिछले वर्ष, भारत तिब्बत सीमा पुलिस के अन्तराष्ट्रीय खिलाड़ी तपेश देव और अपने ही सहयोगी राजेन्द्रन से मुकाबला होते हुये भी, के० रि० पु० बल का बलराम शील वर्ष का 'सर्वश्रेष्ठ जिम्नास्ट' घोषित हुआ। व्यक्तिगत प्राप्तांक थे—बलराम शील 108.45; राजेन्द्रन, (के० रि० पु० बल) 102.20 और तपेशदेव 99.401। फ्लोर एक्सरसाइज, पोमेल्ड हार्स, रोमनरिंग और पैरेलल बार में, बलरामशील ने स्वर्ण पदक जीते। तदुपरान्त से, बलरामशील को, विदेशों में जाने और बुखारेस्ट में अन्तराष्ट्रीय जिम्नास्टिक्स प्रतियोगिताओं में भाग लेने का अनुभव है।

इस बल की वालीबाल टीम उत्तम है; किन्तु इन्हीं दिनों, त्रिवेन्द्रम के खेलों में, केरल ने खूब धाक जमाई और के० रि० पु० बल, प्रथम तीन स्थानों में से, एक भी स्थान नहीं पा सका, जबकि वहाँ बड़ा ही रोमांचक खेल का प्रदर्शन रहा। केरल के निम्मी जार्ज और सी० सु० बल के बलविन्दर ने दर्शकों को अपने खेल से खूब गुदगुदाया। हर क्षण, स्थिति बदलता हुआ वह रोमांचक संघर्ष था, परन्तु पर्वताकार वी. एन. कुट्टी (के० रि० पु० बल) चमक नहीं सका।

निरस्त युद्ध में, के० रि० पु० बल का अच्छा नाम हैं और जूडो में, जल में मीन के समान इसके जवान प्रसन्न रहते हैं। देश के अन्य पुलिस बलों को इन निरस्त खेलों में प्रशिक्षित करने की जिम्मेदारी इस बल पर है।

कबड्डी में, पिछले वर्ष त्रिवेन्द्रम में, पंजाब ने खिताब जीता जब कि के० रि० पु० बल उपाविजेता रहा।

के० रि० पु० बल में एक डॉक्टर है, जो खेल-चिकित्सा का विशेषज्ञ है और एथलीटों तथा खिलाड़ियों के साथ अधिकतर रहता है।

प्रोत्साहन—भोजन भत्ता, नकद पुरस्कार तथा द्रुत पदोन्नतियाँ, खेल के प्रदर्शन और उपलब्धियों के स्तरों के अनुसार देकर, खिलाड़ियों को प्रोत्साहित किया जाता है। 1975 में, हरीचन्द एक हेड कान्स्टेबल थे और आज वह पुलिस उपाधीक्षक हैं। गुरवचन सिंह रणधावा एक सिपाही के रूप में भर्ती हुये थे और आज वह कमांडेंट हैं। नवम्बर 1985 के राष्ट्रीय खेलों में अपने उत्तम खेलों के लिये, दस खिलाड़ियों की पदोन्नतियाँ हुई हैं।

पिछले वर्ष, वार्षिक खेल सम्मेलन में, यह निर्णय लिया गया कि जो कान्स्टेबल, अखिल भारतीय पुलिस खेलों या किसी अन्तर्रज्य प्रतियोगिता में, छठे स्थान तक के

रिकार्ड को बराबरी करेगा या उसे सुधारेगा, तब उसे लान्स नायक बना दिया जायेगा। जो कोई कान्स्टेबल 'ए' टीम में स्थान पायेगा और अखिल भारतीय पुलिस खेलों में भाग लेगा, उसकी पदोन्नति निर्णयानुसार होगी। हरेक ग्रुप केन्द्र में, सिंडर पथ वाला एक स्टेडियम बनाने का भी निर्णय लिया गया है।

पुलिस खेलों में अन्य प्रतियोगिताओं में अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी स्पर्द्धा भी सम्मिलित हैं। कुछेकों का विचार है कि लक्ष्यभेदन के अतिरिक्त, ये प्रतियोगितायें खेल नहीं हैं, क्योंकि इस ड्यूटी स्पर्द्धा में प्राथमिक चिकित्सा, बेतार और गुप्त लेख विद्या, कल्याण आदि शामिल हैं। बहरहाल, कोई भी यह इन्कार नहीं कर सकता कि ये प्रतियोगितायें पुलिस बलों की कार्यक्षमता को सुधारती हैं।

पिछले दिसम्बर में, पटना में आयोजित अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी स्पर्द्धा में, के० रि० पु० बल, प्राथमिक चिकित्सा में फिर टीम विजेता, लक्ष्यभेदन में उपविजेता रहा तथा उसने 3 स्वर्ण, 1 रजत और 4 कांस्य पदक, बेतार तथा गुप्तविद्यालेखन में पाये। लक्ष्यभेदन में, के० रि० पु० बल के पास सितारा तथा अन्तर्राष्ट्रीय लक्ष्यभेदक तेजेन्दर सिंह ढिल्लों है। उस पर उत्तम अनुभव है। उसने भारत में हुये एशियाई खेलों में देश का प्रतिनिधित्व किया; आस्ट्रेलिया में एलेक्स टैस्की और अमरीका के फ्रैंक ब्रिगज—दोनों ओलिम्पिक में प्रशिक्षण पाया है और अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में सरकारी रेफरी होने के लिये, उस पर अर्हता प्राप्त लाईसेन्स है।

परिवार कल्याण मास का मनाना

ग्रुप केन्द्र झड़ौदा कलां ने अक्टूबर 1985 को परिवार कल्याण मास के रूप में मनाया। के० रि० पु० बल के कर्मियों के साथ-साथ छोटे परिवार को पद्धति मानने के लिए, नागरिकों को भी प्रोत्साहित तथा प्रेरित किया गया।

ग्रुप केन्द्र के परिवार कल्याण शिविर में, के० रि० पु० बल के 11 जवान या उनकी पत्नियों ने तथा 72 सैनिक पुरुषों महिलाओं ने वन्ध्यकरण कराया, जिसको आयुर्वेद कालेज अस्पताल मेरठ की डॉ० (श्रीमती) ऊषा शर्मा ने सम्पन्न किया।

संकट कोष लाभ

अक्टूबर, नवम्बर और दिसम्बर 1985 में, संकट कोष से, के० रि० पु० बल के 45 मृत कर्मियों के परिवारों को 2,25,000 रु० देना स्वीकृत हुआ।

सेवा से अशक्त घोषित 36 अन्य कर्मियों को भी, 2,70,000 रु० की धन राशि दी

गई।

46वें वार्षिकोत्सव की कुछ झलकियाँ

पुलिस प्रशिक्षण पर प्रधानमंत्री के विचार

1. आधुनिक उपकरणों की उपलब्धि हो।
2. निरन्तर तथा उत्तरोत्तर उत्तम प्रशिक्षण हो।
3. सर्वोत्तम पुलिस अधिकारी प्रशिक्षक बनें।
4. अनुदेश परस्पर प्रभावशाली होने चाहिये, जिससे देश के विभिन्न भागों और सभी स्तरों से प्राप्त अनुभव का आदान-प्रदान हो सके।
5. प्रशिक्षण प्रक्रियाओं, उपायों, उपकरणों, पद्धति के आधुनिकीकरण और मानव के रूप में व्यक्ति के विकास में, उपयुक्त रुचि लेनी चाहिये।
6. पुलिस को ऐसे शस्त्र बनाने चाहिये, जो उसी प्रकार की स्थितियों में मनुष्य की हत्या नहीं करें। पुलिस के लिये, 303 रायफल से भिन्न, विशेष प्रकार की अन्य वस्तु का विकास होना चाहिये।
7. हरेक पुलिस अधिकारी को वाहन चलाना और रेडियो सेट से काम लेना आना चाहिये।
8. पारस्परिक कार्रवाई अपेक्षाकृत अधिक खड़ी (ऊपर नीचे) होनी चाहिये और प्रशिक्षणार्थी साफ-साफ आकर, जो

पढ़ाया जा रहा हो, उसको चुनौती दे सके ।

9. शिक्षा-संस्थानों में 'प्रतिभाशाली' व्यक्तियों को आकर्षित करने के लिये, समुचित प्रोत्साहन दिया जाना चाहिये।

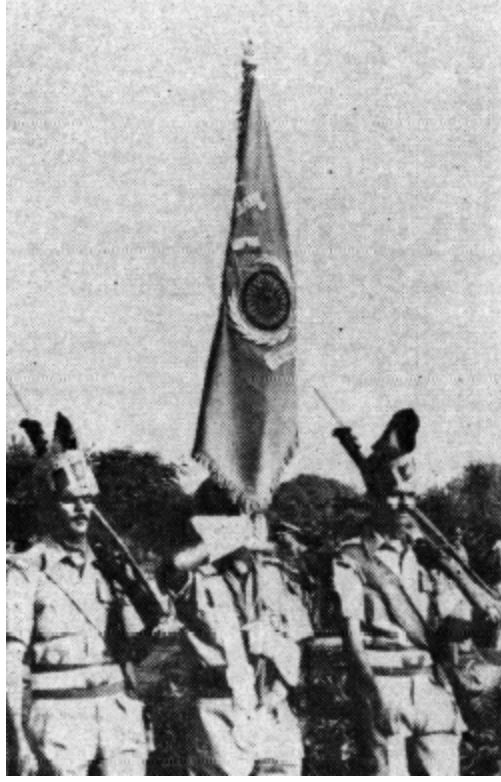
10. आन्तरिक सुरक्षा बनाये रखने के लिये, पुलिस को जनता में विश्वास जमाना चाहिये । सेना तथा अर्द्ध सैन्य बल को जनता द्वारा आमन्त्रित नहीं करना चाहिये ।

11. पुलिस को यह देखना चाहिये कि किस वस्तु की आवश्यकता है तथा यह मालूम करना चाहिये कि उनमें कहाँ कमियाँ हैं और साथ ही, चाहिये खोजना उन कमियों को दूर करने के उपाय ।

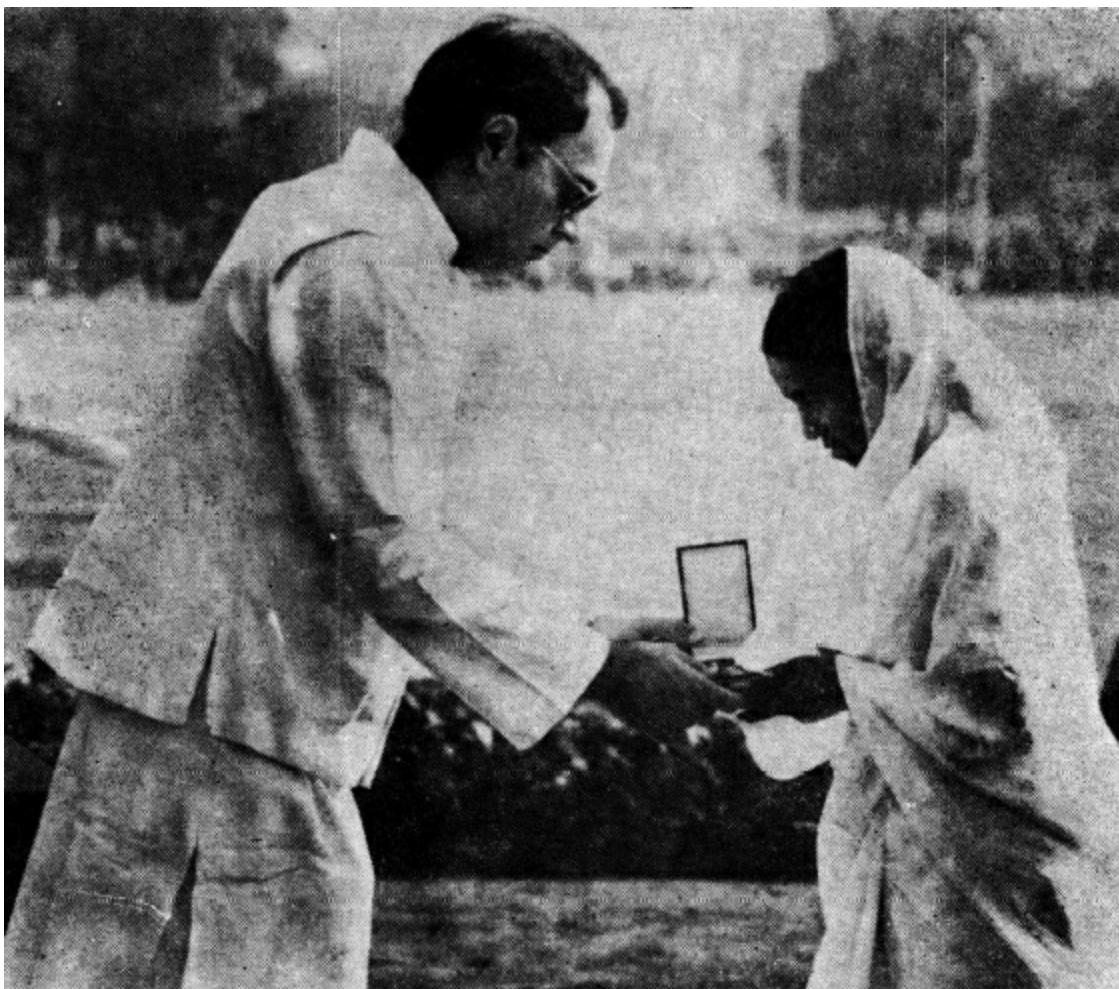
नोट : प्रधान मंत्री के भाषण का अविकल रूप तथा वार्षिकोत्सव के अन्य विवरण पिछले संस्करण में प्रकाशित हो चुके हैं।



श्री राजीव गांधी प्रधान मंत्री, गृह मंत्री श्री एस. बी. चव्हाण और गृह राज्यमंत्री श्री अरुण नेहरू सहित विशिष्ट आगन्तुक ।



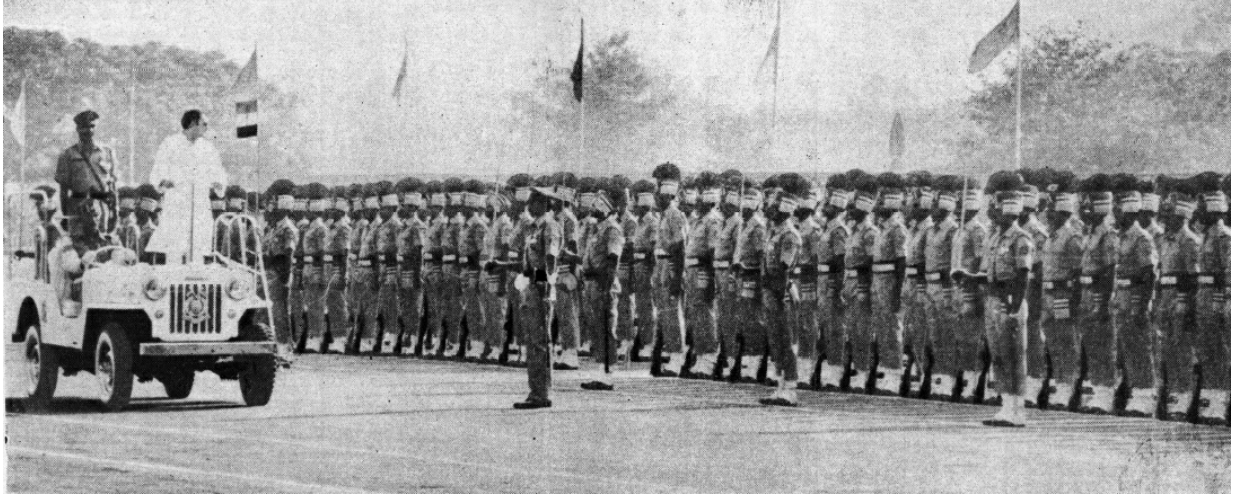
परेड में लाया जाता हुआ के० रि० पु० बल का ध्वज ।



कान्स्टेबल पुष्कर सिंह की विधवा पत्नी को पुलिस वीरता पदक (मरणोपरान्त) देते हुये प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी।



वीरता पदक पाते हुये स्व० सहायक कमांडेन्ट वी० के० खुल्लर की पत्नी श्रीमती वर्षा खुल्लर ।



क्रीड़ा क्षेत्रे

अन्तररेंज दौड़कूद :

अजमेर रेंज को सिरमौर

भुवनेश्वर में 19 से 22 दिसम्बर 1985 तक आयोजित अन्तररेंज दौड़कूद प्रतियोगिता में, अजमेर रेंज ने 161 अंक पाकर, श्रीनगर रेंज को (148 अंक पर) अपदस्थ करते हुये, चैम्पियनशिप ट्रॉफी जीती।

प्रतियोगिता का मुख्य आकर्षण था पिछले दो कीर्तिमानों को भंग कर, नये रिकार्ड स्थापित करना। ये दोनों रिकार्ड चार-दिवसीय प्रतियोगिता के अन्तिम दिन स्थापित हुये, जिसमें सारे देश के लगभग 500 खिलाड़ियों ने भाग लिया था। प्रदीप डोगरा और आर. एस. बल जैसे अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ियों के भाग लेने पर, अन्य रिकार्ड भंग होने की आशा थी, किन्तु उन्होंने शायद अपनी शक्ति आगामी अखिल भारतीय पुलिस खेलों के लिये संभाल रखी।

अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी रसदेवसिंह (गौहाटी) ही केवल अपवाद था। कष्टदायक मॅराथन दौड़ में, उसने 2 घं० 23 मिनट 45.4 से० के अपने ही कीर्तिमान को भंग कर, 2 घं० 19 मि० 10 से० में पूरा किया। ए. एस. यूनम (श्रीनगर) और रथ मॅराथन विजेता रामभगत ने भी पिछले कीर्तिमान भंग कर, क्रमशः द्वितीय और तृतीय स्थान पाये।



4 x 400 मी० रिले का विजेता अजमेर रेंज का चौगुडा चन्दवीरसिंह, के लाची, गुरदयाल सिंह और मोदी बलर



पोलवाल्ट में नया कीर्तिमान निर्माता बलजीत सिंह [कलकत्ता]

एक दूसरी कीर्तिमान भंजन-चेष्टा कलकत्ते के बलजीतसिंह द्वारा पूरी हुई। अक्टूबर 1980 से प्रेम चन्द्रन के 4.01 मीटर वाले चले आ रहे रिकार्ड को भंग कर, वह पोलवाल्ट स्पर्धा में 4.20 मी० ऊँचा कूदा। मंगलसिंह (इम्फाल) को रजत और सूर्योदयनन (दिल्ली) को कांस्य पदक मिला।

एशियाई स्वर्ण पदक विजेता रघुबीर सिंह बल ने रामपुर रेंज की ओर से दो स्वर्णपदक जीते, जब उसने घन फेंक (56.56 मी०) और चक्का फेंक (47.08 मी०) में

प्रथम स्थान पाये। ये द्वारेयाँ उसकी पहली रेकार्ड द्वारेयाँ से कम थीं।

3,000 मी० स्टीपल चेज में, अन्तर्राष्ट्रीय प्रदीप कुमार डोगरा (दिल्ली) को रजत पदक पर सन्तोष करना पड़ा, जबकि उदीयमान शम्सुद्दीन (अजमेर) ने 8 मि० 54 से० में दौड़ कर, स्वर्ण पदक पाया। कुलविन्दर सिंह (श्रीनगर) तृतीय रहा।

200 मी० और 400 मी० दौड़ों को गुरुदेव सिंह [श्रीनगर] ने क्रमशः 23.6 से० और 50.5 से० में पूरा कर, दोहरी विजयें पायीं। दक्षिण एशियाई संघ प्रतियोगिता में ढाका में सुरिन्दर सिंह होने के कारण, उसके सहयोगी गुरदयाल सिंह को 400 मी० [बाधा] दौड़ में स्वर्ण पदक पाने में, कोई कठिनाई नहीं हुई। उसने 56.9 से० में वह दौड़ पूरी की।

चन्दबीर सिंह [अजमेर] ने भी 800 मी० और 1,500 मी० दौड़ों को क्रमशः 1 मि० 54.8 से० और 3 मि० 58.4 से० पूरा कर, दोहरी जीतें पायीं।

कष्टदायक 10,000 मी० दौड़ में, एन. शशिधरन [हैदराबाद] ने 31 मि० 20 से० में पूरा कर स्वर्ण पदक जीता। ऑलिम्पिक खिलाड़ी हरीचन्द का अनुज जीतराम [श्रीनगर] को द्वितीय स्थान मिला, जब कि पिछले वर्ष का विजेता ए. एस. यूनम [श्रीनगर] तृतीय रहा।

उदीयमान कमलदीप [मद्रास] ने लौह गोले को 14.55 मी० फेंक कर प्रथम स्थान पाया, जबकि पूर्व विजेता पी. एस. मान [हैदराबाद] द्वितीय और एस. एस. बल तृतीय रहा।

वर्तमान विजेता आर. एस. मारियायी [हैदराबाद] ने 100 मी० की तेज दौड़ को 11.2 से० में पूरा कर 'प्रतियोगिता के सर्वाधिक फरटि के धावक' की पदवी अपने पास ही रखी।

राजेन्दर कुमार (श्रीनगर) प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित हुआ। इस कौशल के आधार पर, उसे कान्स्टेबल से लांस नायक के पद पर उन्नति कर दी गई।

श्री जे. बी. पटनायक, उड़ीसा के मुख्यमंत्री ने प्रतियोगिता उद्घाटन किया तथा श्री अनूपसिंह देव, वाणिज्यमंत्री, उड़ीसा ने अन्तिम दिन पुरस्कार वितरित किये।

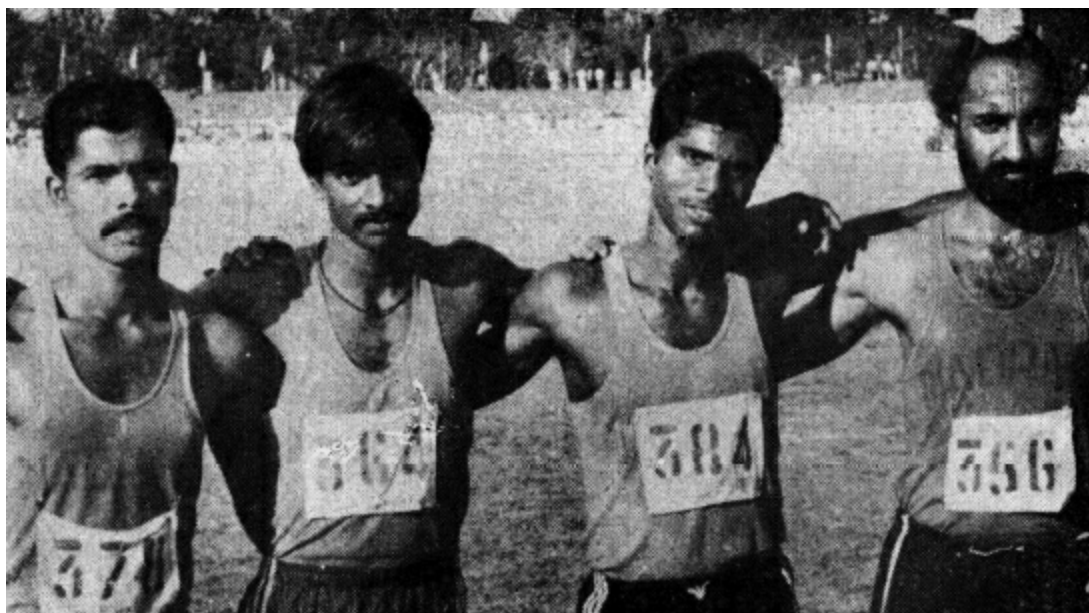
परिणाम इस प्रकार रहे :

100 मी० दौड़ : आर. एस. मारियायी [हैदराबाद] 11.2 से० I; राजेन्दर कुमार [श्रीनगर] 11.3 से० II. और देवाशीष राई [है०] 11.6 से० III.

200 मी० दौड़ : गुरुदेव [श्रीनगर] 22.6 से० I; दलजीतसिंह [मद्रास] 22.9 से० II और आर. एस. मारियाई [है०] 23.2.5 से० III.



मुख्यमंत्री जे० बी० पटनायक से स्वर्णपदक पाता हुआ 800 मी० दौड़ का विजेता चन्दबीर सिंह



4X100 मी० रिले का विजेता, मद्रास का चोगड्डा—पी० पासी, रावर्ट, सत्यशोलन, और दलजीत सिंह

400 मी० दौड़ : गुरुदेवसिंह [श्रीनगर] 50.5 से० I; सर्वजीतसिंह [पटना] 50.6 से० II और एस. तिरके [गौहाटी] 51.0 से० III.

800 मी० दौड़ : चन्दबीरसिंह [अजमेर] 1:54.2 से० I; गुरनामसिंह [दिल्ली] 1:56.0 से० II और जगन्नाथन [इम्फाल] 1:57.0 से० III.

1,500 मी० दौड़ : चन्दबीरसिंह [अजमेर] 3:58.4 से० I; गुरनामसिंह [दिल्ली] 3:59.09 से० II और पी. के. डोगरा [दिल्ली] 4:02 से० III.

5,000 मी० दौड़ : शम्सुद्दीन [अजमेर] 14: 42 से० I; एन. शशधरन [हैदराबाद] 14:45.4 से० II और जीतराम [श्रीनगर] 14:52.6 से० III.

10,000 मी० दौड़ : एन. शशधरन [हैदराबाद] 31:20 से० I; जीतराम [श्रीनगर] 31:24 से० और ए. एस. यूनम [श्रीनगर] 31:54 से० III.

110 मी० [बाधा] : तरनजीतसिंह [श्रीनगर] 14.9 से I; गुरुदयाल सिंह [अजमेर] 15.5 से० II और नासिर हुसैन [श्रीनगर] 15.7 से० III.

400 मी० [बाधा] : गुरुदयालसिंह [अजमेर] 56.9 से० I; कैलाश बदोरिया [नीमच] 57.6 से० II और नरेन्द्रसिंह [अजमेर] 58.8 से० III.

3,000 मी० स्टीपल चेज : शम्सुद्दीन [अजमेर] 8.54 से० I; पी. के. डोगरा [दिल्ली] 9.12 से० II और कुलबिन्दरसिंह [श्रीनगर] 9. 25 से० III.

चौड़ी कूद : वाई० सत्यशीलन [मद्रास] 6.95 मी० I; सर्वजीतसिंह [पटना] 6.93 मी० II और राजेन्द्रसिंह [श्रीनगर] 6.82 मी० III.

पोलवाल्ट : बलजीतसिंह [कलकत्ता] 4.20 मी० I; मंगलसिंह [इम्फाल] 3.60 मी० II और सुयोधनन [दिल्ली] 3.40 मी० III.

ऊँची कूद : सतबीरसिंह [अजमेर] 1.90 मी० I; रामकुमार [अजमेर] 1.85 मी० II और तरनजीत सिंह [श्रीनगर] 1.80 मी० III.

त्रिकूद : राजेन्द्र सिंह [श्रीनगर] 14.52 मी० I; राबर्ट [मद्रास] 14.18 मी० II. और वाई. सत्यशीलन [मद्रास] 14.05 मी० III.

शाटपुट : कमलदीप [मद्रास] 14.56 मी० I; ए.पी.एस. मान [हैदराबाद] 14.50 मी० II और एस. एस. बल [मद्रास] 13.05 मी० III.

घनफेंक : आर. एस. बल [रामपुर] 56.56 मी० I; जे. एस. भुल्लर [दिल्ली] 50.62 मी० II; और ओमप्रकाश [अजमेर] 50.44 मी० III.

चक्का फेंक : आर. एस. बल [रामपुर] 47.08 मी० I; ए. पी. एस. मान [हैदराबाद] 45.12 मी० II और कमलदीप [मद्रास] 44.92 मी० III.

भालाफेंक : रमाशंकर [अजमेर] 60.64 मी० I, नटराजन [हैदराबाद] 59.48 मी० और वचनदास 58.60 मी० III.

मैराथन दौड़ : रसदेवसिंह [हैदराबाद] 2 घं० 19 मि० 10 से० I; ए. एस. यूनम [श्रीनगर] 2 घं० 19 मि० 16 से० II. और रामभगत [गौहाटी] 2 घं० 19 मि० 53 से० III. सभी नये रिकार्ड।

डिकलॅन : नाजिर हुसैन [श्रीनगर] 5907 अंक I; सुयोधनन [दिल्ली] 5779 अंक II और जनकचन्द [मद्रास] 5225 अंक III.



उड़ीसा के वाणिज्यमंत्री अनूप सिंह देव से सर्वश्रेष्ठ एथलीट की ट्राफी पाते हुए राजेन्द्र कुमार (श्रीनगर)
4X100 मी० रिले : मद्रास रेंज 43.9 से० I; श्रीनगर रेंज 44.0 से० II और
हैदराबाद रेंज 44.3 से० III.
4x400 मी० रिले : अजमेर रेंज 3:29.7 से० I; नीमच रेंज 3:30.4 से० II और
दिल्ली रेंज 3:31.2 से० III.

श्री टी० जी० एल० अय्यर को भावभीनी बधाई

दिनांक 1 नवम्बर, 1985 को रवीन्द्र रंगशाला दिल्ली में, श्री टी० जी० एल० अय्यर, भूतपूर्व महानिदेशक, के० रि० पु० बल को इस बल के अधिकारियों और जवानों ने भावभीनी विदाई दी।



निवर्तमान महानिदेशक श्री टी० जी० एल० अय्यर को रजत नक्काशी का थाल समर्पित करते हुए श्री एस० डी० पाण्डेय

इस अवसर पर बोलते हुए श्री एस० डी० पाण्डेय, महानिदेशक, के० रि० पु० बल ने भूतपूर्व महानिदेशक के मानसिक और मास्तिष्किक गुणों का वर्णन किया।

श्री टी० जी० एल० अय्यर ने इस बल के प्रति स्नेह भाव दर्शाया और उसकी निष्पक्षता और कार्यकुशलता की भूरि-भूरि सराहना की। उन्होंने यह विश्वास प्रकट किया कि श्री पाण्डेय के नेतृत्व में, यह बल उत्तरोत्तर शक्ति पायेगा और सरकार से, और अधिक विश्वास तथा जनता से और अधिक प्रतिष्ठा पायेगा।

भूल सुधार

पृष्ठ 25, स्तम्भ 3, शीर्षक 'दो राजद्रोही बन्दी' के अन्तर्गत, पाठक, 18 बटालियन के स्थान पर 14 बटालियन पढ़ें।

अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी प्रतियोगिता :

**के० रि० पु० बल पर प्राथमिक चिकित्सा का पुनः
सिरमौर**

पटना में 15 से 22 दिसम्बर 1985 तक आयोजित आखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी प्रतियोगिता की प्राथमिक चिकित्सा की प्रतिस्पर्धा में, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने 606.5 अंक पाकर, टीम चैम्पियनशिप अपने पास ही रखी। द्वितीय स्थान पर आने वाली बिहार पुलिस 517 अंको पर पीछे लिघड़ती रही, जबकि उड़ीसा पुलिस 512 अंकों पर तृतीय रही।

व्यक्तिगत स्पर्धाओं में भी, के० रि० पु० बल ने प्रथम चार स्थान पाये। का० अशाक हुसैन ने 75 से 67 अंक पाकर स्वर्ण पदक पाया, जबकि का० आर. ए. ठाकुर ने केवल 1.5 अंक उस से कम पाकर, द्वितीय स्थान लिया। ना० गुरचरनसिंह को 64.5 अंकों पर कास्य पदक मिला। ला० ना० प्रेम शंकर चतुर्थ स्थान पर रहा।

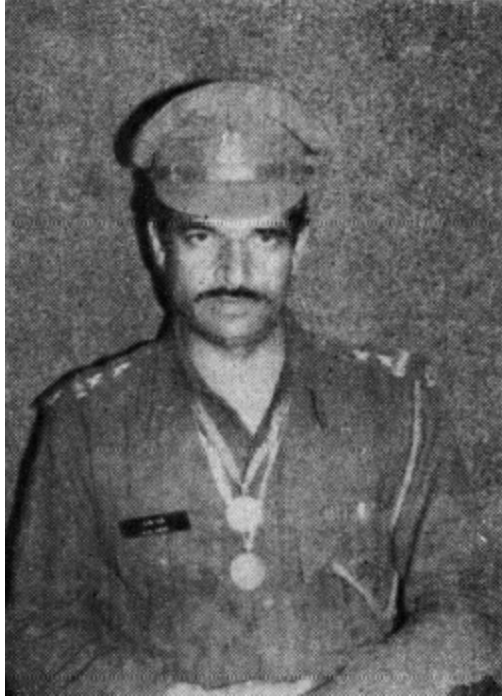
लक्ष्यभेदन

पिछले दिसम्बर में हुयी अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी प्रतियोगिता की लक्ष्यभेदन स्पर्धा में, के० रि० पु० बल को उपविजेता की टाफी पर संतोष करना पड़ा, जबकि सीमा सुरक्षा बल ने सिर मौर जीता। सीमा सुरक्षा बल ने 1175 अंक पाये, के० रि० पु० बल ने 1157 अंक और और तृतीय स्थान पर आने वाली उड़ीसा पुलिस ने 1095 अंक प्राप्त किये।

पिस्तौल लक्ष्यभेदन में, 25 राज्यों और केन्द्रीय पुलिस संगठनों की ओर से 75 लक्ष्यभेदकों ने भाग लिया। के० रि० पु० बल पहले आगे था; किन्तु अन्तिम अभ्यास ने पासा ही उलट दिया, जब सी० सु० बल ने 665 अंक पाये और के० रि० पु० बल को पाँच अंकों से पछाड़ दिया। हे० का० हिम्मतसिंह (के० रि० पु० बल) ने व्यक्तिगत रूप से 228 अंक पाये, जबकि हे० का० रामकिशन सी० सु० बल ने केवल 1 अंक उससे अधिक पाकर, “सर्वोत्तम लक्ष्य भेदक” की उपाधि पायी।

प्रथम अभ्यास में, का० लक्ष्मी शंकर ने 100 अंक पाकर रजत पदक जीता। हे० का० हिम्मतसिंह को द्वितीय अभ्यास में कास्य पदक पर ही संतोष करना पड़ा।

रायफल लक्ष्यभेदन में, सी० सु० बल ने 509 अंक पाकर अपनी वर्चस्विता सिद्ध की, जब कि के० रि० पु० बल 496 अंकों पर द्वितीय रहा। चण्डीगढ़ और बिहार दोनों मिलकर तृतीय रहे। के० रि० पु० बल के का० सी. आर. थंकांचन और सी. पी. स्वामी ने 300 गज प्रोन (झुके) और 300 गज सैप (झटपट चालने) में क्रमशः रजत पदक पाये।



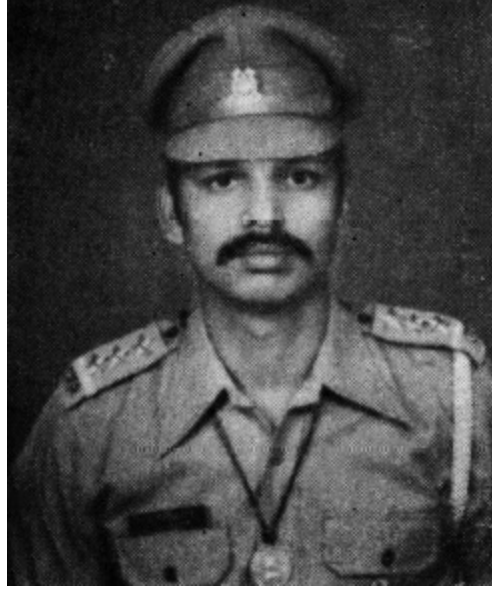
अशोक कुमार ऐरी

बेतार और गुप्तलेख

पटना में आयोजित अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी प्रतियोगिता की बेतार और गुप्त लेख विद्या की स्पर्द्धाओं में, के० रि० पु० बल ने 3 स्वर्ण, एक रजत और 4 कास्यपदकों के साथ, उन दोनों स्पर्द्धा में चैम्पियनशिप ट्रॉफियाँ भी जीतीं।

स० इ० (क्रिष्टों) अशोक कुमार ऐरी ने व्यक्तिगत गुप्तलेख कौशल में, प्रथम स्थान पाया और इ० (क्रिष्टो) ए. विवेकानन्द के संग, टीम स्पर्द्धा में एक लोटन रजत कप पाया।

बेतार में, ना० (रेडियो आपरेटर) प्रतापसिंह ने व्यक्तिगत कौशल में, 100 में से 69.5 अंक पाकर, द्वितीय स्थान पाया। उसे रजत पदक मिला। टीम स्पर्द्धा से, लोटन शील्ड के साथ, के० रि० पु० बल ने 4 कास्य पदक पाये।



ए. विवेकानन्द

कल्याण केन्द्र

पटना में दिसम्बर 1985 में आयोजित अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी प्रतियोगिता के परिवार कल्याण केन्द्र स्पर्धाओं में, के० रि० पु० बल की श्रीमती सलोमी, वरिष्ठ श्रेणी में खेलौने बनाने में सर्वश्रेष्ठ घोषित की गई।

कपूर सिंह बढईगीरी (कनिष्ठों) में सर्वप्रथम रहा। के० रि० पु० बल के अन्य पुरस्कार विजेता हैं—चन्द्रा देवी (वरिष्ठ श्रेणी कसीदकाढ़ी में) द्वितीय, ज्ञान सिंह (कनिष्ठों में) मानचित्र में द्वितीय, तारा देवी (पुलिस प्रौद्योगिक इकाई में वस्त्र निर्माण में तृतीय) और सुधीर कुमार (यांत्रिक पुर्जों में, कनिष्ठों में) तृतीय।

उग्रवादी बन्दी

मैलागाँव के वेहगुड़ी में 10 नवम्बर 1985 को, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 8 कम्पनी की एक टुकड़ी द्वारा मारे गये छापे में, एक प्रमुख उग्रनेता सूर्यकोच बन्दी बनाया गया। उसके पास से, दो स्टेनगन, चार मैगजीन और 9 मि० मी० के चक्र बरामद किये।

ढाका में के० रि० पु० बल के जवानों द्वारा भारत को यशप्राप्ति

ढाका में 20 से 26 दिसम्बर 1985 को आयोजित द्वितीय दक्षिणी एशियाई संघ खेलों में, भारत की ओर से भाग लेते हुये के० रि० पु० बल के तीन तैराकों ने अनेक पदक बटोरे।

100 तथा 200 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक को 11.47 से० और 2:37.78 से० में क्रमशः नये

कोंतेमान स्थापेत कर, स० इ० एस. राधाकृष्णन ने 2 स्वर्ण पदक पाये ।

1,500 मी० फ्रीस्टाइल को 18:10.26 से० में पूरा कर, इ० मोहिन्दर कुमार टोकस ने न केवल एक स्वर्णपदक जीता, बल्कि एक नया रिकार्ड भी बनाया । (यद्यपि यह उसके पिछले कीर्तिमान से कम था)। 1400 मी० फ्रीस्टाइल में, उसने द्वितीय स्थान पाया, जबकि 200 मी० फ्री स्टाइल में, 200 मी० व्यक्तिगत मेडले और 400 मी० व्यक्तिगत मेडले में, उसे कास्य पदकों पर सन्तोष करना पड़ा।

4X400 मी० रिले में, इ० सुरेन्दर सिंह ने भारतीय टीम को स्वर्ण पदक दिलाने में सहयोग दिया।

धुन्दिया विजयी

रवीन्द्र रंगशाला में 14 से 25 दिसम्बर 1985 तक 62 बटालियन द्वारा आयोजित टेनिस टूर्नामेण्ट में, श्री सुरेश धुन्दिया, संयुक्त सहायक निदेशक (संगठन) विजयी रहे । दिल्ली में निरत के० रि० पु० बल के अधिकारियों के बीच में ही यह प्रतियोगिता सीमित थी। उन्होंने फाइनल में, श्री वी० एस० कंग, कमांडेंट, 37 बटालियन को हराया।

युगल (डबल) फाइनल में, श्री वी. लक्ष्मी नारायणन, उप सहायक निदेशक (परिचालन) के साथ, श्री पी. के. मेनन, सहायक निदेशक (परिचालन) ने श्री वाई. एन. कश्यप, कमांडेंट 62 बटालियन के साथ आर. घेई को परास्त किया।

श्रीमती बी. एल. वोहरा ने पुरस्कार वितरित किये।



सर्वोत्तम माना गया के० रि० पु० बल का अधिकारी

श्री सुरेश शर्मा, पुलिस उपअधीक्षक, के० रि० पु० बल, जो आजकल नागरिक विमानन विभाग में डेपूटेशन पर हैं, मनीला। (फिलीपीन्स) के नागरिक विमानन प्रशिक्षण केन्द्र में नागरिक सुरक्षा कोर्स को करते हुए, सर्वश्रेष्ठ अधिकारी माने गये। विभिन्न एशियाई देशों से आये 22 प्रशिक्षणार्थियों में, श्री शर्मा ही केवल अकेले भारतीय थे। वह आई० सी० ए० ओ० को अभिसदस्यता। (फेलोशिप) के लिये, यह कोर्स कर रहे थे।

नागरिक विमानन विभाग में पिछले तीन वर्षों से डेपूटेशन पर नियुक्त, श्री शर्मा को विमान अपहरण विरोधी उपायों के विषयों में, अनेक महत्वपूर्ण कार्य सौंपे गये।

इससे पूर्व, श्री शर्मा ने औद्योगिक और विमानन सुरक्षा से सम्बद्ध अनेक कोर्सों को वरेण्यता पूर्वक उत्तीर्ण किया था।

शस्त्र और रणनीति तथा डी० सी०पी० डबल्यू में उच्च संचार व्यवस्था में भी वह प्रथम रहे थे।

श्री शर्मा, सैनिक स्कूल, कुंज पुरा [हरियाणा] के छात्र हैं और एम० एस० सी०; एल० एल० बी० हैं। उन्होंने जन प्रबन्ध में भी डिप्लोमा किया है और अब दिल्ली विश्वविद्यालय से एम० बी० ए० कर रहे हैं। वह अच्छे खिलाड़ी भी हैं।

पंजाब और असम में के० रि० पु० बल की भूमिका की सराहना

I. पंजाब

श्री टी० जी० एल० अय्यर तत्कालीन महानिदेशक, के० रि० पु० बल को लिखे अपने पत्र में, श्री अर्जुन सिंह, पंजाब के भूतपूर्व राज्यपाल के वहाँ सुचारु रूप से मतदान कराने में के० रि० पु० बल द्वारा की गई सेवाओं की सराहना की है।

1 अक्टूबर 1985 वाले पत्र में, उन्होंने लिखा है :—

“आपकी उदार सहायता तथा शुभकामनाओं से, पंजाब के शान्तिपूर्ण तथा सुचारु मतदान कराने में हम सफल हुए हैं। जनशक्ति, बल तथा उपकरणों द्वारा दी गई आपकी सकल सहायता और सहयोग के लिये, मैं अतीव आभारी हूँ। आपके जवानों ने अतिशय कठिन परिस्थितियों में बड़ा शानदार कार्य किया और वे हमारी सराहना तथा आभार के पात्र हैं।

II. असम

श्री सी. सुब्रह्मण्यम्, पुलिस महानिरीक्षक से० IV, के० रि० पु० बल को लिखे अपने पत्र में, श्रीमती पी. पी. त्रिवेदी, मुख्य सचिव असम ने गत दिसम्बर में हुये मतदान के समय के० रि० पु० बल द्वारा दी गयी सहायता के प्रति, अपना और असम सरकार का

भारों आभार प्रकट किया है। पत्र में लिखा है--‘आपकों और आपके जवानों की जानकारी से तथा सभी वाँछित सहायता देने की आपकी इच्छा से, हमारा कार्य सचमुच में बहुत सरल हो गया।’

उसमें आगे लिखा है—‘शान्तिपूर्वक और सुचारु रूप से मतदान कराने में, के० रि० पु० बल ने बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है। अपने महत्त्वपूर्ण तथा समुचित व्यवहार के कारण, आपके अधिकारियों और आपके जवानों ने असम की जनता का चित्त जीत लिया है। उन्होंने अपनी सेवायें, निष्ठा तथा अतीव कुशलता से की हैं।’

श्रीमती त्रिवेदी ने पत्र के अन्त में यह कामना की है कि के० रि० पु० बल “जनता का आदर और सद्भावना आगे भी प्राप्त करता रहेगा।”

इन्तजार

लेखक—निर्मल सिंह

ज्यों ज्यों रात सुबह की ओर आगे बढ़ती है, त्यों-त्यों मेरा डर भी बढ़ता जाता है। कई बार तो ऐसा लगता है कि मैं खौफ के हाथों अपने होश खो बैठूंगा और ड्राइंग रूम में ही दम तोड़ दूंगा। अगले दिन लोगों को पता चलेगा कि मैं दुनिया से चल बसा हूँ।

यों तो मैं भारत में सर्विस पर था। इतनी आमदनी जरूर थी कि किसी के आगे हाथ नहीं फैलाना पड़ता था। लेकिन बेहतर जिन्दगी की चाह, दुनिया भर की दौलत की रेलपेल और अपने भविष्य की उज्ज्वलता, मुझे यहाँ खींच लाई थी। इस बात को हुए लगभग 20 वर्ष हो चुके हैं।

हजारों मनौतियाँ मान कर मैंने सीमा को पाया है; उसकी हर छोटी-बड़ी इच्छा को पूरा किया है। सीमा को भी इन सब बातों का ज्ञान है। वह यह भी जानती है कि मैं रूहानी तौर पर उससे जुड़ा हूँ और वह मेरी हर सांस में शामिल है।

हर सप्ताहान्त पर, मुझे वह दिन अक्सर याद आता है, जब सीमा ने पहली बार अपने फ्रेंड के साथ प्रोग्राम बनाया था और मुझसे इसकी इजाजत चाही थी। मैं ड्राइंग रूम में बैठा था। टेलीविजन देख रहा था। पास में मेरा पुत्र परविन्दर बैठा था। बाहर सीमा की अभिन्न हृदय फ्रेंड जो कार में बैठी इन्तजार कर रही थी और सीमा सवाल बनी मेरे सामने खड़ी थी। मैंने इधर-उधर की बात कर उसे टालना चाहा; लेकिन उसने आश्चस्त स्वर में कहा—‘पापा, मैं आपको यकीन दिलाना चाहती हूँ कि मैं कोई ऐसा कदम नहीं उठाऊँगी, जिससे आपको कोई आघात पहुँचे।’ मुझे वरवश तब

कहना पड़ा 'यों तो तुम पर पूरा भरोसा है; लेकिन इस इंग्लैंड के वातावरण से डर —' सुनते ही सीमा खिलखिला पड़ी और खिल्ली उड़ाती हुई बोली—“ओह डैड, आप तो बिल्कुल भारतीय हैं। इतने साल से यहाँ रहते हुए भी, आपकी विचार धारा नहीं बदली।”

“हो सकता है; मगर तुम्हें जानना चाहिए कि माहौल किसी को नहीं छोड़ता; चाहे किसी का चरित्र कितना ही ऊँचा क्यों न हो।”

“सुनो डैडी,” मेरी टाई की गाँठ ठीक करते हुए उसने कहा—

‘गुमराह तो वे होते हैं, जो माहौल को जानते नहीं हों; पर मैं तो सोसाइटी के ऊँच नीच से भलीभाँति परिचित हूँ। फ्रेंड के साथ शाम गुजारना कोई बुरी बात नहीं है।’

“मगर शाम ही क्यों, सारा दिन पड़ा है; तब कौन रोकता है ?

“ओह डैडी, जिसको गलत कदम उठाना है, वह दिन के उजाले में भी उठा सकता है।”

“यूनीवर्सिटी में पढ़ कर, तुम्हारे विचार काफी आजाद हो गये हैं।”

“लेकिन खराब नहीं हुये हैं। आप ही बताइये कि एक युवती को व्यक्तिगत आजादी नहीं मिले, तब उसे कितनी घुटन होने लगती है।’

मैं एक लम्बी साँस लेकर मौन हो गया। मुझे आभास हुआ कि विद्रोह कुछ ही आगे सिर उठाये खड़ा है। मैं कनिया कर बोला—

“जाने को मैं नहीं रोक सकता और न ही कोई पाबन्दी लगा सकता हूँ। पर मेरी बच्ची, इतनी प्रार्थना कर सकता हूँ कि तुम्हारे बाप की इज्जत तुम्हारे हाथ में है।”

सीमा ने आश्चस्त भाव से मेरा भाल चूमा और कहा ‘आप चिन्ता नहीं करें। मैं जल्द आऊँगी।’

सीमा के जाते ही, उसकी माँ ने घर सिर पर उठा लिया ‘तुम खुली छुट्टी देकर, उसे बर्बाद कर रहे हो।’

“ओफो, तुम यह क्यों नहीं सोचती कि सीमा अब वालिग है। किसी तरह रोकने - पर, वह गलत कदम उठा सकती है और कानून उसका समर्थन—’

“भाड़ में जाये तुम्हारा कानून। हमने उसे जन्म दिया है, कानून ने नहीं।”

इसे सुनते ही, परबिन्दर हँस पड़ा ‘मम्मी, तुम बड़ी इन्ट्रोसेंट हो। यह इण्डिया नहीं, इंग्लैंड है। सोलह वर्ष के लड़के लड़की यहाँ पूर्ण स्वतन्त्र हैं। वे कुछ भी रोकटोक कर सकते हैं, कहीं भी रह सकते—’

“चुप रहो, तुम अभी सोलह के नहीं हुये—”

‘केवल एक मास की ही तो बात है, तब मैं अपनी चिन्ता आप कर लूँगा।’

“क्या कहा ?” पत्नी की मुद्रा ही प्रश्न चिह्न बन गयी। फिर मेरी ओर मुखातिब होकर बोली ‘लड़की तो हाथ से गई तो गई—अब तो इसके पर निकलने लगें। ओफ ! पाँच

वर्ष पहले, मेरी बात मान ली होती, और भारत लौट गये होते तब क्यों यह दिन देखने को मिल...”

मेरी सहनशक्ति समाप्त हो चुकी थी। मेरा मस्तिष्क सन्तुलन खो बैठा था। मैं तेजी से बाहर निकल गया—तब भी पत्नी की कड़वी-कसैली बातें कान में गूँजती रहीं।

हाँ, तो ठंडी रात आगे बढ़ रही है। मैं पन्ने पर आँखे गुड़ोये बैठा हूँ; जो पिछले पन्ने पर पढ़ा है वह कुछ भी याद नहीं। घड़ी की ओर देखा, तो बड़ी सुई तीन पर पहुंच चुकी है। सारा इंग्लैंड नार्वे की वर्फांनी हवाओं में सिमटा सा रहा है; किन्तु एक अकेला मैं जाग रहा हूँ : या जाग रही होगी सीमा, जीवन को बर्बाद करती हुई। सामने मेज पर सीमा और परविन्दर का बचपन का फोटो रखा है। कैसी मासूमियत है उनके चेहरे पर। मेरी एक ठंडी साँस निकल पड़ती है। ‘ओफ ! यह मासूमियत, यह शराफत जवान होते ही कहाँ चली जाती है ? हम दूसरों की नींद और मुस्कराहट क्यों छीन लेते हैं ? धिक् ! अजनबी देश की गंध हमारे बच्चों को भी हमसे अजनबी बना रही है।’

मैं किसी भय से नेत्र मूंद लेता हूँ। मस्तिष्क के पर्दे पर चलचित्र चलने लगते हैं। मेरी पत्नी मुझ से कह रही है—‘हमारे बच्चे जिस ढंग से यहाँ के बच्चों में घुलमिल रहे हैं और उनके रंग में रंगते जा रहे हैं; तब वह दिन दूर नहीं जब वे महज सुरतशक्ल में हिन्दुस्तानी रह जायेंगे, वरना वह ऊपर से नीचे तक दिलौ दिमाग से अंग्रेज हो जायेंगे।’

‘नहीं, नहीं, ऐसा मत सोचो’ मैं हाथ हिला कर रूलासु स्वर में कह रहा हूँ।

“सोचने की बात नहीं, मैं अपनी आँखों से देख रही हूँ उनके जवान होने पर, मैं उन्हें खो बैठूंगी। प्राणेश यही समय है कि हम भारत लौट चले “भारत, भारत, बस गारत करने की एक ही तुम्हें धुन सवार है। वहाँ पर क्या रखा है। भुखमरी, महंगाई और कठिनाइयों का अम्बार, आबादी की भरमार”

“ठीक है। पर वहाँ इतनी बेहयाई, नीचता तो नहीं है। देखो तो दृष्टि दौड़ाकर, उनके पांव किस धरती में धँसते जा रहे हैं ? कल को उन्होंने अपने मन के कदम उठाये; विदेशी से नाता जोड़ लिया; तब मैं कहीं की न रहूँगी।”

‘अच्छा जी’ कह कर मैं भारत लौटने की योजना बनाता हूँ। यहाँ भी स्थिति बहुत बदल चुकी थी, फिर भी मैं खुश था कि देश स्वतंत्र है; तरक्की कर रहा है। पर यह क्या ? हर मोड़ पर झुगगी झोपड़ियों में निर्धनता झाँक रही है; भुखमरी मुँह फाड़ रही है; महंगाई कमर तोड़ डाल रही है। ओफ, इस वातावरण को मेरे बच्चे कैसे स्वीकार कर पायेंगे; उन्हें कैसी घुटन होगी, परकैच पक्षियों की तरह वे कितने फड़ फड़ायें—

तभी अचानक दूर से किसी कार के आने की ध्वनि होती है और वह धीरे धीरे हमारे घर के सामने रुकती है—मेरा स्वप्निल चित्र हार टूटता है और एक बिभीषिका सुरसा सा मुख फाड़े मेरी हृदय को सिहरा देती है। नहीं, नहीं, वह सुरसा नहीं, वह तो कोई। जानी पहचानी शक्ल होगी, जो मेरा जीवन हराम कर रही है। काँच पर से मैं

नेज हाथ से धुन्ध हटाता हूँ। बाहर सेभारों हिमपात हो रहा है।

मुझे कुछ नहीं दिखलाई देता। मैं लौट कर कुर्सी पर ढेर सा गिर पड़ता हूँ। औफ सन्तान का इन्तजार कितना प्राण लेवा होता है।

मैं फिर ढाढ़स बाँधता हूँ। सीमा बालिग है; मैं क्यों उसका इन्तजार ख्वाहमखाँ करता हूँ। आखिर परन्दे अपने बच्चों को बड़े होने पर अकेला छोड़कर अलग जीवन बिताते हैं या नहीं। 'फिर हम तो इन्सान हैं। मैं तब क्यों परेशान होता हूँ, जब अपनी फ्रेंड जोन को अपने घर वालों से अलग होने की खबर सुन कर, सीमा खुशी के मारे पागल हो जाती है। उसे बधाई देती है। अब तुम बिल्कुल स्वतंत्र पक्षी की भाँति जहाँ चाहोगी, उड़ोगी, जो मन में आयेगा, करोगी।

मेरा कलेजा धक्क करके लगता है। क्या मेरे घर भी यहीं त्रासदी-यही शोकान्तिका तो वर्षा नहीं होगी...और आज रात, उसकी जीती जागती परछाई आती दीख रही है। दरवाजे के खुलने की ध्वनि होती है और होती है प्रविष्ट मेरी प्रतीक्षा की निर्भम मूर्ति। वह दरवाजा जोर से बन्द करती है और बरामदे की बत्ती जला कर जीने की पहली सीढ़ी पर पैर रखकर खड़ी हो जाती है, तथा रेलिंग पर सिर टेक देती है। गुमसुम खोयी खोयी सी धीरे-धीरे फिर चढ़ने का प्रयास-बाले बिखरे, ब्लाउज खुला-चेहरा पीला।

“मझे देख कर ठिठक जाती है और थकी माँदी अवाज में कहती है “डैडी, आप कब मेरा इन्तजार करते रहा करेंगे”

मैं कांपते हुये होंठ हिलाने की चेष्टा करता हूँ और अन्दर उसे लाने को लपकता हूँ। परन्तु वह जल्द मेरा हाथ झटक देती है “आप इतनी रात तक क्यों इन्तजार करते हैं? आपको मेरी फिक्र क्यों इतनी लगी रहती है? अपनी सेहत का आपको बिल्कुल ध्यान नहीं—बेहतर होगा कि मैं—दूसरी जगह—” मैं उसके मुख पर कांपते हाथ रखकर फूट फूट कर रोने लगता हूँ—‘बेटी, ऐसा कभी नहीं करना, वरना मैं कहीं का नहीं रहूँगा। कम से कम अब घर तो आजाती

“तब वचन दें कि आप मेरा इन्तजार कभी नहीं करेंगे। मैं आँख फाड़े उसे देखता रह जाता हूँ, हारे हुये मनुष्य की भाँति निश्शब्द, निस्तब्ध। मेरे नेत्रों के आगे अंधेरा छा जाता है। उसमें केवल रजत ज्योति रह जाती है कहने को ‘हां’।

कविता:

पथ विचलित कभी नहीं होना

[रचयिता—स० उ० नि० हंसराज ओझा, उप महानिरीक्षालय, गौहाटी]

तुम के० रि० पु० बल के प्रहरी हो, पथ विचालित कभी नहीं होना।
 उत्साह तुम्हारा हो ऊँचा, उद्देश्य तुम्हारे अच्छे हों।
 हर रिपु-दल का तुम दलन करो, जब कार्य तुम्हारे सच्चे हों।
 मम याद सतावे तुम्हें कभी, तुम धैर्य कभी भी मत खोना।
 तुम के० रि० पु० बल के प्रहरी हो, पथ विचलित कभी नहीं होना ॥1॥

ममता-माया के बन्धन क्या, नश्वर है निज यह स्वर्णिल तन।
 वीरों का शौर्य-प्रदर्शन ही, बस अमर करे उनका जीवन।
 निज शोणित से तुम सिंचित कर, सुख वैभव के अंकुर बोना।
 तुम के० रि० पु० बल के प्रहरी हो, पथ विचलित कभी नहीं होना ॥2॥

हो सकता है दुख कष्टों के, तुम पर पर्वत गिर कर टूटें।
 रिपु-बज्र कभी भी तुव शिर पर, गर्जन-तर्जन करके छूटें।
 प्राणेश्वर ! हंस कर सह लेना, है काम तुम्हारा नहीं रोना।
 तुम के० रि० पु० बल के प्रहरी हो, पथ विचलित कभी नहीं होना ॥3॥

तुम न्याय-व्यवस्था के रक्षक, नित रखो शान्तिमय जन जीवन।
 आतंकवाद और राजद्रोह, का करके पूरा उन्मूलन।
 मत धूलि बनाना निज जय-यश, जो सदा रहा बिरला सोना।
 तुम के० रि० पु० दल के प्रहरी हो, पथ विचलित कभी नहीं होना ॥4॥

पग रुकें तुम्हारे कभी नहीं, बढ़ते जायें आगे प्रति पल।
 कर्तव्य-मार्ग पर अचल रहें, कर देश भक्ति को नित उज्ज्वल।
 हैं परम्परायें इस बल की, शुभ, उनको कभी नहीं खोना।
 तुम के० रि० पु० दल के प्रहरी हो, पथ विचलित कभी नहीं होना ॥5॥

कम थे, पर मातृभूमि हित तुम, लड़ पड़े चीन-टिड्डी दल से।
 कर दिये, पाक के सभी विफल, धावे तुमने निज भुज बल से।
 है आज इसी यश से गुंजित, भारत का हर कोना-कोना।
 तुम के० रि० पु० बल के प्रहरी हो, पथ विचलित कभी नहीं होना ॥6॥

आधुनिक जीवन और मानव

[रचयिता—नानक राम हीरा, अनुभाग अधिकारी]

इस आधुनिक जीवन की रफ्तार कभी न कम होगी।
भीड़ कभी न कम होगी आवाज कभी न कम होगी।
लगता है मानव पीड़ित है मानसिक तनावों से
काम से जी चुराता है मन लगाता है बातों से
मन की ऐसी हालत से मानव कुछ कर पायेगा ?
जीवन की इस गति से क्या दौड़ लगा पायेगा ?
लगता है मानव थका-हारा कैसे बनेगा जीवन योगी

इस आधुनिक जीवन की रफ्तार कभी न कम होगी।
जान इन्सान की इस भीड़ में सुरक्षित नहीं
चाहे पैदल हो या हो सवार वाहन पर ही
भीड़ से नहीं गुजर पाते जो; शोर में नहीं सुन पाते जो
यही वे लोग हैं कुचले जाते हैं हर रोज जो
इन रास्तों पर बिखरी लाशों की गिनती कभी न कम होगी

इस आधुनिक जीवन की रफ्तार कभी न कम होगी।
मानव अगर तेरे मन की हालत संतुलित रहेगी
तो ये रफ्तार जीवन की तुझे कष्ट न देगी
लगने लगेगा तुझे कि जीवन इतना बोझिल नहीं
इसमें न इतनी तेजी है न इसके शोर में दम ही
जन जीवन की भीड़-भड़ाके से न कभी तुझे दुविधा होगी

इस आधुनिक जीवन की रफ्तार कभी न कम होगी।
कर सकते हो अपने को संतुलित तुम
अगर बोलो कम, सुनो ज्यादा का उसूल अपनाओ तुम
धनवानों को न देख निर्धनों पे नजर डालो तुम
जितनी तेरी चादर है उतना ही पांव पसारो तुम
मन के भटकाव पर काबू पाले, तो जिन्दगी तेरी सुखद होगी
इस आधुनिक जीवन की रफ्तार कभी न कम होगी।

विज्ञान के बढ़ते चरण

रूसी वैज्ञानिकों में 'एनाबोसेनस' नाम की एक दवा विकसित की है जो धूम्रपान करने की इच्छा को दबाती है और धूम्रपान की लत को छुड़ाने के बाद शरीर में होने वाली गड़बड़ियों को कम करती है।

भारतीय आयुर्वेद अनुसन्धान परिषद ने न्यूयार्क से आविष्कृत 'नारप्लांट' का कारगर गर्भ निरोधक पाया है। कैपसूल और रॉड के रूपों में—'नारप्लांट' बनता है। महिला के ऊपरी या निचली बाहु को थोड़ा सा चीर कर, नारप्लांट के छे कैपसूल या दो रॉडें, उसमें रख दी जाती हैं। इन्हें जब चाहे, महिला निकलवा सकती है।

सुक्ति सुधा

चरित्र बनाये रखना सुखकर है; श्रद्धा का होना सुखकर है; ज्ञान का लाभ करना सुख कर है और पाप नहीं करना सुख कर है।

—धम्मपद

वही साधु संत है, जो अपकार करने वाले का उपकार करे।

—संकलित

मूर्ख को उपदेश देने से, दुष्ट स्त्री को पालने से और दुःखित मनुष्यों के मेल से, विद्वान भी दुःखित होता है।

—चाणक्यनीति

॥पहेलियां ॥

जलते जल में कूदता, हुआ पेट जब घाव ।
छोटा तन, दधि लेप कर, नाम बड़ा ही पाव 1
आप नीर कहते मुझे, जब मैं सारा क्षीर ।
व्यंजन मेरे स्वादु के, होते आलमगीर ॥ 2 ॥
मानव जैसे हाथ पग, मानव जैसा गात ।
खेल कूद में लीन नित, घर को नहीं बनात । 3।

उत्तर—1. बड़ा 2. पनीर 3. बन्दर

जनता का मित्र—संगमा

महानिदेशक, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को लिखे अपने पत्र में, श्री पी० वेंकट सुबय्या, राज्यपाल बिहार ने, नवम्बर 1985 में हुए के० रि० पु० बल के 46वें वार्षिकोत्सव पर अपनी प्रसन्नता प्रकट की है।

एक दूसरे सन्देश में, श्री पूर्णो ए० संगमा, केन्द्रीय गृहराज्य मंत्री ने लिखा है 'के० रि० पु० बल को, जनता संकट मोचन मित्र मानती है। के० रि० पु० बल की उपस्थिति, उपद्रवियों को अवरोधक और शान्ति-प्रिय जनता को, सुरक्षा का स्रोत होती है। प्राकृतिक प्रकोपों के समय, दुखी जनों को यह बल सहायता प्रदान करता है। इन्हीं दिनों, आतंकवाद से निपटने में, इसने प्रशंसा पाई है।'

दिल्ली में जवानों को बारिकें

दिनांक 3 जनवरी 1986 को, नई दिल्ली में अंधेरी मोड़ पर हुये एक रंगारंग कार्यक्रम में श्री शिव मोहनसिंह, पुलिस महानिरीक्षक से III के० रि० पु० बल ने इस बल के जवानों के लिये बारिकों का शिलान्यास किया।

इन बारिकों के निर्माण के लिये महानिदेशक, के० रि० पु० बल द्वारा स्वीकृत 9.25 लाख रुपये की धनराशि के फलस्वरूप, यह शिलान्यास हुआ।

इस अवसर पर बोलते हुये, श्री शिवमोहनसिंह ने जवानों को यह आश्वासन दिलाया कि दिल्ली में सेवारत जवानों के लिये, सभी तम्बुओं को निर्मित आवासों में बदलने का यत्न रहेगा।

1985 में के० रि० पु० बल के आठ जवानों की हत्या

1985 में के० रि० पु० बल के आठ सेवारत जवानों ने प्राण गँवाये।

राष्ट्रपति के पुलिस वीरता पदक, दो अधिकारियों और एक सिपाही को मिले और

एक को पुलिस वीरता पदक प्राप्त हुआ। एक हेड कांस्टेबल को प्रधान मंत्री ने जीवन रक्षा पदक प्रदान किया गया।

विगत वर्ष में देश के विभिन्न भागों में के० रि० पु० बल द्वारा 691 उग्रपंथी तथा राजद्रोही पकड़े गये। 210 विभिन्न प्रकार के शस्त्र और विभिन्न शक्ति के 2,562 चक्र गोले, के० रि० पु० बल द्वारा की गई कार्रवाइयों में बरामद हुये।

के० रि० पु० बल की फोटो प्रतियोगिता-1985



कुचलती हिंसा छाया : पी. वी. बेलगामकर

1985 में आयोजित केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की फोटो प्रतियोगिता में, के० रि० पु० बल के कर्मियों से बहुत कम प्रविष्टियाँ मिलीं।

श्री पी. वी. बेलगामकर, सहायक कमांडेंट, ग्रुप केन्द्र, झड़ौदा कलां ने 'कुचलती हिंसा (क्रशिंग वायलेंस)' और 'वर्दी का जादू' (चार्म ऑफ यूनीफार्म) नामक दो फोटो में क्रमशः प्रथम और तृतीय पुरस्कार पाया।

द्वितीय पुरस्कार, श्री आर. सी. सेठी, सहायक कमांडेंट को 'हॉट स्प्रिंग्स की कठोर यात्रा' (आर्डुअस जर्नी टु हॉट स्प्रिंग्स) नामक फोटो पर मिला।



हाट स्प्रिंगज की कठोर यात्रा छाया : आर. सी. सेठी



वर्दी का जादू - छाया : पी. वी. बेलगामकर

श्री बेलगामकर ने अपने दोनों फोटो पर 400 रु० पाये, जबकि श्री सेठी को 200 रु० मिले।



खन्ना द्वारा खींचा हुआ के० रि० पु० बल के एक लांस नायक की विकलांग पुत्री का फोटो, जो 'जूरी प्रशंसा' से पुरस्कृत हुआ।

इस बल में फोटो कला को प्रोत्साहन देने के लिये, फोटो प्रतियोगिताओं को चलाते रहने का निर्णय लिया गया है। इस बल के सभी सदस्यों से निवेदन है कि के० रि० पु० बल को फोटो प्रतियोगिता 1986 के लिये अपनी प्रविष्टियाँ (काले-सफेद फोटो केवल), मुख्य सम्पादक को अप्रैल के अन्त तक भेज दें।

यद्यपि के० रि० पु० बल से सम्बद्ध विषयों को वरीयता दी जायेगी, वैसे विषय-वस्तु पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है।

फोटो 6"x8" के ग्लॉसी (चिकने) कागज पर होना चाहिए तथा फोटोग्राफर का नाम उसके पीछे लिखा होना चाहिये।

सर्वोत्तम तीन फोटो पर, 300 रु०, 200 रु० और 100 रु० के पुरस्कार दिये जायेंगे।

के० रि० पु० बल का फोटोग्राफर प्रशंसित और पुरस्कृत

महानिदेशालय, के० रि० पु० बल के जन सम्पर्क विभाग के इ० सतीश कुमार

खन्ना ने, इन्होंने दिनों में हुई राष्ट्रीय फोटोग्राफी प्रतियोगिता में 'वैशेष जूरी पुरस्कार' और 'जूरी की प्रशंसा' प्राप्त की।

भारत सरकार के फोटो डिवीजन के सहयोग से यूनीसेफ द्वारा आयोजित इस प्रतियोगिता का विषय था—'शिशु पर फोकस (सकेन्द्रण)'।

उसके तीन फोटो, नई दिल्ली में एक प्रदर्शनी में दिखलाये गये।

यूनेस्को के एक पुरस्कार सहित, अनेकों पुरस्कारों के पाने का श्रेय, इन्स्पेक्टर खन्ना को है।

कल्याण और हितकारी निधि से सुविधायें

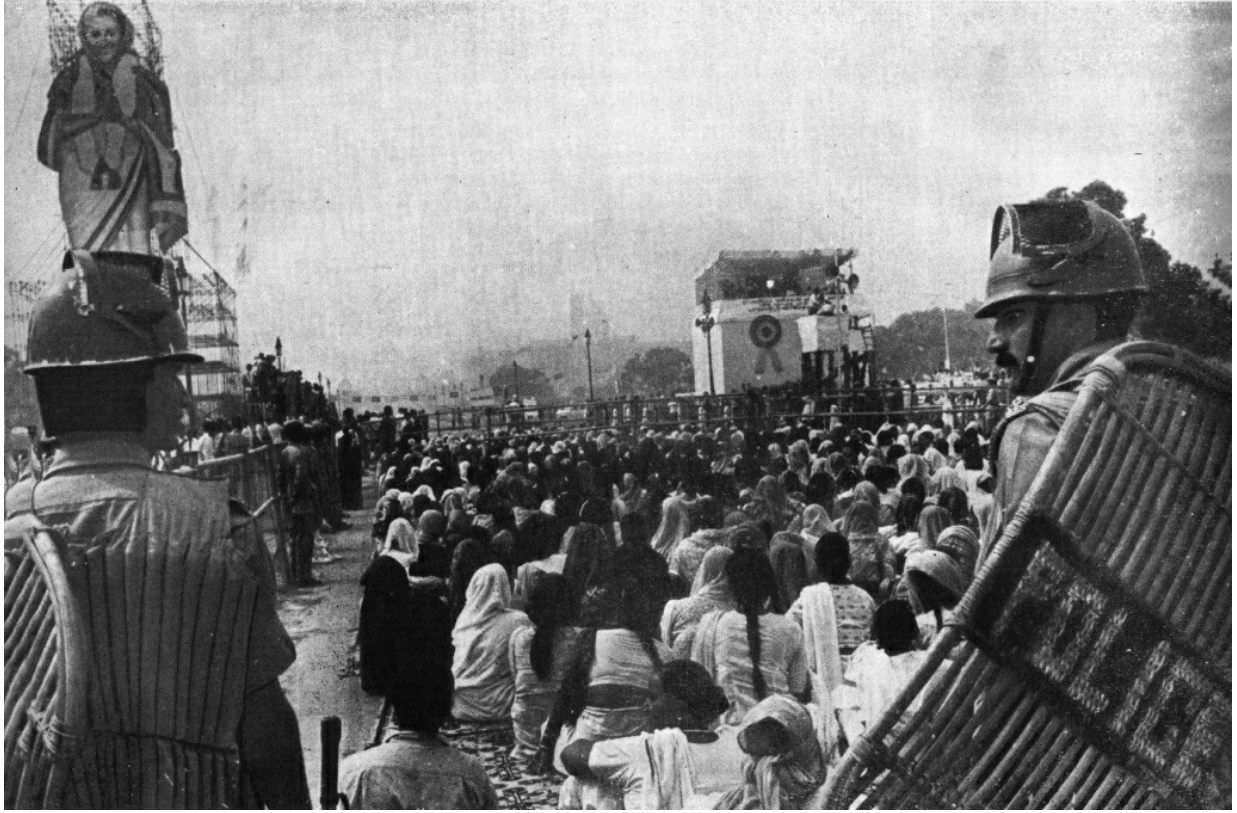
महानिदेशक की अध्यक्षता में 5 फरवरी 1986 को आयोजित केन्द्रीय कल्याण और हितकारी निधि को शासीनिकाय बैठक में अन्य निर्णयों के साथ, यह तय हुआ कि सेवा काल में मृत कर्मियों की उन विधवाओं को भी सिलाई की मशीनें दी जायेंगी, जिनके पति का देहान्त 1981 से पूर्व हुआ था।

यह भी निर्णय हुआ कि दिल्ली में निरत के० रि० पु० बल के कर्मियों की चिकित्सा के लिये, केन्द्रीय कल्याण निधि से 200 रु० प्रतिमास के मान देय पर, एक अवैतनिक दन्त चिकित्सक नियुक्त किया जाये।

शिव स्वरूप अब उप-राज्यपाल

श्री शिवस्वरूप, भूतपूर्व महानिदेशक के० रि० पु० बल ने अब अरुणाचल प्रदेश के उपराज्यपाल का पदभार संभाला है।

सिक्किम के नवनियुक्त राज्यपाल श्री टी० वी० राजेश्वर से, उन्होंने यह पदभार ग्रहण किया है।



नई दिल्ली में 31 अक्टूबर 1985 को स्वर्गीय प्रधान मंत्री इन्दिरा गांधी की प्रथम पुण्यतिथि पर उपस्थित भारी जनसंख्या पर व्यवस्था कायम रखते हुये के० रि० पु० बल के जवान

पत्रिका क्रेपलर के विषय में स्वामीत्व और अन्य विशेषताओं का विवरण

केन्द्रीय समाचारपत्र नियमावलि के नियम 8 के अन्तर्गत फार्म IV]

- | | |
|--|--|
| 1. प्रकाशन-स्थान | नई दिल्ली |
| 2. प्रकाशन: आवर्ति | त्रैमासिक |
| 3. मुद्रक का नाम | एच. एस. सेठी |
| 4. राष्ट्रीयता व पता | भारतीय; ब्लॉक, 1, सी. जी. ओ.
कॉम्प्लेक्स, लोधीरोड नई
दिल्ली-110003 |
| 5. व 6. प्रकाशक व सम्पादक का नाम, राष्ट्रीयता, पता | उपर्युक्त |
| 7. उन व्यक्तियों के (जो पत्रिका के स्वामी हैं) और उन साझेदार तथा शेयरधारी के नाम, राष्ट्रीयता, | -महानिदेशक, केन्द्रीय रिजर्व
पुलिस बल ब्लॉक 1, सी. जी. ओ. |

पता (जिनके साइं या शेयर, कुल पूंजों के एक प्रतिशत से अधिक हैं)

कॉम्प्लेक्स, लोधो रोड, नई दिल्ली-110003 भारतीय

मैं, एच. एस. सेठी, एतद्वारा घोषित करता हूं कि मेरे अधिकतम ज्ञान और विश्वास के अनुसार, उपर्युक्त विवरण सही है।

—(ह०) एच० एस० सेठी
प्रकाशक के हस्ताक्षर



46वें वार्षिकोत्सव पर मार्च पास्ट में सलामी लेते हुये प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी।



46वें वार्षिकोत्सव पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में रुचि दिखलाते हुए प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी ।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की मासिक पत्रिका

सीआरपीएफ समाचार

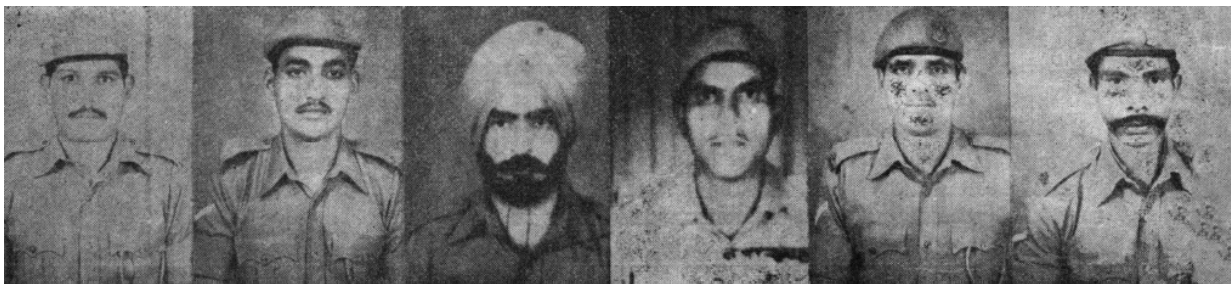
खण्ड I

अंक 1

30 जून, 1986

9 आषाढ़, 1986





लाना० कालीराम, लाना० गिरधारीलाल, (स्व०) ना० रेशसिंह, (स्व०) हे० कां० कन्हैयालाल, लाना० मुहम्मद बशीर, लाना० जे. एस. पिल्लै

जीवन-मरण दोनों में साथी, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवान, सारे भारत के प्रतिनिधि

अमृतसर जिले में 24 मार्च 1986 की सायंवेला अन्य सन्ध्याओं जैसी थी। निशागम पर, मनुष्य अपने-अपने घरों को लौट रहे थे। अब वे अधिक देर बाहर रहने का साहस नहीं करना चाहते थे। अमृतसर के पास, गहरजादा ग्राम में निस्तब्धता छा रही थी, तभी के० रि० पु० बल की छै जवानों की प्रहरी टुकड़ी शान्तिपूर्वक पहरा दे रही थी। उसे छिपे खतरे की क्या खबर थी?

लोग कहते हैं कि कोई 20 आतंकवादी एक ट्रक में आये, ग्राम की दूसरी ओर उसे रोका और वाट जोहने लगे।

सहसा एक सीटी बजी और खाकी बर्दीधारियों पर क़हर पड़ा। ताल के किनारे तथा गेहूं के खेत में आतंकवादियों ने स्वयं को सावधानी से तैनात किया। सारी प्रहरी टुकड़ी अपने क्षेत्र में थी, यद्यपि सेक्शन के सदस्य कुछ दूरी रखे हुये थे। सेक्शन का नेता हे० कां० कन्हैयालाल निशाना बनाया गया, तब भी उसने दम तोड़ने से पहले दो चक्र गोले चलाये। का० मुहम्मद बशीर की बाँह में गोली लगी; परन्तु वह होश संभाले रहा, ताल के तट तक रिंग कर पहुंचा और आतंकवादियों पर फायर किया। एक अन्य का० गिरधारीलाल ने ताल में खड़े होकर आतंकवादियों पर गोलियाँ दागीं।

इसी बीच, मृत हे० का० कन्हैयालाल की कारबाइन दो आतंकवादी ले भागे, किन्तु का० मुहम्मद बशीर और गिरधारीलाल ने गोलियाँ चलाकर, उन्हें गम्भीर रूप से घायल कर दिया।

ना० रेशम सिंह ने, जो सेक्शन के बीचोंबीच में था और जिसके पीछे काली राम और और का० पिल्लै थे, एक दूसरे उस आतंकवादी पर फायर किया, जो पिस्तौल चला रहा था। तभी दो तीन आतंकवादियों ने रेशम सिंह पर हमला किया। वह अन्तिम क्षण तक गुत्थमगुत्था करता रहा। उसकी एस० एल० रायफल को आतंकवादी ले भागे। उनका पीछा का० कालीराम ने किया, जो उनमें से एक को मार डालने में

सफल हुआ।

यह खूनी होली चलती रही। जैसे ही एक अन्य आतंकवादी ने कारबाइन से का० कालीराम को भूना चाहा, वैसे ही का० जे०एस० पिल्लै ने देख लिया और तत्क्षण अपने साथी को बचाने और आतंकवादी को घायल करने के लिये, उसने आतंकवादी पर गोली चलाई और तभी वह उपद्रवी 20 गज लगभग दूर पर गेहूँ के खेत में लड़खड़ाकर गिरते देखा गया।

इसी बीच, आतंकवादियों की टुकड़ा गई और अपने साथी को (जो मार्ग के पार का० गिरधारी लाल का० मुहम्मद बशीर से आहत पड़ा था) उठाकर नौ दो ग्यारह हो गयी।

फायर का शोर सुनकर, के० रि० पु० बल की और जनशक्ति प्लाटून चौकी तथा बाद को, कम्पनी से आ गयी। निकटवर्ती क्षेत्रों में खोज करते हुए, इंस्पेक्टर सुशील कुमार ने एक आतंकवादी को अपने कारबाइन से खोजी टुकड़ी को लक्ष्य बनाते देखा। परन्तु इससे पूर्व कि वह ऐसा कर सके, सुशील कुमार और एक सिपाही ने लक्ष्य बना उसे वहाँ ठौर कर दिया। हताहत आतंकवादियों से एक स्टेनगन और दो रिवाल्वर प्राप्त हुये।

इस प्रकार, दोनों ओर से रक्त तथा अश्रुओं से पूर्ण मुठभेड़ का पटाक्षेप हुआ; के० रि० पु० बल को शत्रु से खुल्लमखुल्ला चुनौती का सफल मुकाबला करने का गर्व था। दो वीरगति पाने वाले शूरवीर हे० का० कन्हैया लाल और ना० (सरदार) रेशम सिंह, क्रमशः हरियाणा और पंजाब के थे। अन्य चार वीरपुंगुवों में कालीराम हरियाणा का, का० मु० बशीर और गिरधारी लाल जम्मू व कश्मीर के एवं का० पिल्लै केरल का था।

कुल मिलाकर, अपनी-अपनी आस्थाओं तथा क्षेत्रों के साथ, सभी छै के छै संक्षिप्त भारत का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। उनमें आतंकवाद से लोहा लेते हुए सारे भारत को देखा जा सकता था।

पदोन्नतियाँ

अमृतसर में 24 मार्च 1986 को 20 सशस्त्र आतंकवादी के उपर्युक्त धावे को विफल करने के उपलक्ष्य में, के० रि० पु० बल के चार सिपाहियों की पदोन्नति कर लांसनायक बनाया गया है।

इस पदोन्नति की घोषणा श्री एस.डी. पाण्डेय, महानिदेशक ने तुरन्त घटनास्थल पर जाकर की। साथ में, इनको एक-एक हजार रुपये दिये गये।

दो अन्य जवान-हे० का० कन्हैया लाल और ना० रेशम सिंह को जो उसी मुठभेड़ में वीरगति को प्राप्त हुये थे, वीरता पदक के लिये संस्तुत किये गये हैं। पंजाब सरकार

ने उनके निकटतम सम्बन्धी को एक-एक लाख को अनुग्रह राशे प्रदान की है।

पटना में 1985 में आयोजित अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी प्रतियोगिता में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की प्राथमिक चिकित्सा टुकड़ी के उन सदस्यों के एक ऊँचे पद की उन्नति कर दी गई है, जिन्होंने प्रथम स्थान पाये थे। वे हैं—का० आशक हुसैन और आर० आर० ठाकुर (दोनों 60 बटालियन के), का० जगत सिंह, ला० ना० प्रेम शंकर और ना० गुरवचन सिंह (सभी 9 बटालियन के)।

स० इ० होशियार सिंह, शिक्षक को 200 रु० का नकद पुरस्कार मिला।

दो अधिकारियों को पुलिस वीरता पदक



जी. एस. राठौड़



भगवानदास

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के दो सदस्यों को राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैलसिंह द्वारा पुलिस वीरता पदक प्रदान किये गये हैं। वे हैं—35 बटालियन के पुलिस उपाधीक्षक जी० एस० राठौड़ और 71 बटालियन के सब इंस्पेक्टर भगवानदास।

24 मई 1985 को यह सूचना पाते ही कि फिरोजपुर के अमृतसरिया गेट पर फायरिंग हुआ है, उस क्षेत्र का थानाध्यक्ष पुलिस की एक टुकड़ी लेकर वहाँ जा धाया।

वहाँ से वह बंसी गेट की ओर उन अभियुक्तों को पीछा करने के लिये बढ़ा, जिन्होंने एक साम्प्रदायिक संगठन के अध्यक्ष को गोलीमारकर खत्म किया था।

बंसी गेट पर, थानाध्यक्ष ने पुलिस उपाधीक्षक जी० एस० राठौड़ के अधीन

के० रि० पु० बल को एक प्रहरी टुकड़ी से उन सशस्त्र आभेयुक्तों को पकड़ने के लिए सहयोग मांगा, जो एक मक्का के खेत में जा छिपे थे। आत्मसमर्पण के लिये कहने पर, उग्रवादी प्रहरी-टुकड़ी पर फायर करने लगे, जिसने खेत को घेर लिया था। आधे घंटे की गोलाबारी के उपरान्त, श्री राठौड़ और सब इन्स्पेक्टर भगवानदास अपने प्राणों की बिल्कुल चिन्ता नहीं किये हुये, दो सशस्त्र उग्रवादियों के पास रिंग कर पहुंचे और उन्हें धर दबोचा। कुछ संघर्ष के बाद, दोनों उग्रवादियों पर काबू पा लिया गया और वे तरसेम सिंह तथा पीपल सिंह निकले।

सम्पादकीय

बहुत समय से, यह अनुभव किया जा रहा था कि हिन्दी की त्रैमासिक पत्रिका से जवानों की आवश्यकतायें पूरी नहीं हो पा रही हैं, क्योंकि उससे सूचना बड़ी देर से मिलती थी। सूचना के नियमित संचार की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुये, महानिदेशक, के० रि० पु० बल ने एक नयी पत्रिका “सी. आर. पी. एफ. समाचार” को मुख्यतः हिन्दी में प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। कलेवर में छोटी होते हुये भी, यह पत्रिका—प्रत्येक वर्ष के—फरवरी, मार्च, मई, जून, अगस्त, सितम्बर, नवम्बर और दिसम्बर—आठ महीनों में प्रकाशित हुआ करेगी। शेष चार महीनों में, (अंग्रेजी) कैपलर सदा की भाँति प्रकाशित होती रहेगी। कैपलर का हिन्दी संस्करण अब प्रकाशित नहीं होगा।

साथ में, यह भी निर्णय लिया गया है कि — (अंग्रेजी) ‘कैपलर’ और ‘सी. आर. पी. एफ. समाचार’-दोनों पत्रिकायें पूर्ण रूप से ग्रुप केन्द्र, नई दिल्ली में स्थापित हमारे ‘प्रेस’ में मुद्रित हुआ करेंगी।

प्रत्येक माह पत्रिका को प्रकाशित करने के लिये हम पर पर्याप्त कर्मचारी वर्ग नहीं है। तब भी, उपलब्ध साधनों से, हम पाठकों की आशायें पूरी करने का यत्न करेंगे। एतदर्थ के० रि० पु० बल से सम्बद्ध सभी विषयों की सामग्री—फोटो (केवल काले-सफेद ही) और लेख इत्यादि भेजने का हमारा अनुरोध है। सभी प्रकाशित कृतियों समुचित रूप से पुरस्कृत होंगी। ‘सम्पादक को पत्रों’, के लिये भी हमारा आमंत्रण है।

(ह०) एच. एस. सेठी, मुख्य सम्पादक

प्रधानमन्त्री जीवन रक्षा पदक



हवलदार रामबचन

हेड कान्स्टेबल राम बचन सिंह, 32 बटालियन के० रि० पु० बल को प्रधानमन्त्री जीवन रक्षा पदक प्रदान किया गया है।

12 अक्टूबर 1984 के तड़के ही, पुलवामा जिले के त्रैल ग्राम के गूजर मुहल्ले में भयंकर अग्निकाण्ड हुना। सूचना मिलते ही, हेड कान्स्टेबल रामबचन सिंह के साथ, सब इन्स्पेक्टर मुरली राम दो सेक्शनों को लेकर अग्निस्थल पर 3.45 बजे जा पहुँचा।

वहाँ पहुँचते ही, के० रि० पु० बल के जवान आग बुझाने में जुट गये। आग से धधकती हुई एक दोतल्ली बिल्डिंग से चीत्कार सुनकर, हेड कान्स्टेबल रामबचन उस ओर जा धाया। यह सुनकर कि एक साठ वर्षीय वृद्ध घर में फँसा पड़ा है, रामबचन स्वयं को एक गीले कपड़े में लपेटकर और निजप्राण की चिन्ता किये बिना, घर में प्रवेश कर गया। वृद्ध को खोजकर उसे बाहर उठा लाया।

वृद्ध को अस्पताल ले जाया गया और प्राथमिक चिकित्सा के उपरान्त, उसकी छुट्टी कर दी गयी, जबकि हेड का० रामबचन मामूली जल गया।

बैंक बचाने में 4 की मृत्यु

दिनाँक 11 फरवरी 86 को मणिपुर (उत्तर) में भारतीय स्टेट बैंक की सेनापति शाखा को नागा विद्रोही जत्थे द्वारा लूटने के प्रयास को विफल करने के दौरान, 7 बटालियन के चार जवानों ने अपनी प्राणाहुति दे दी। मृतक थे—सेक्शनाधिकारी हे० का० नन्दन सिंह, का० बलवन्त सिंह नेगी, का०बी० एल नानैया और रसोइया मिश्री लाल।

उस दिन साढ़े ग्यारह बजे पूर्वाह्न, नागालैंड की राष्ट्रीय समाजवादी परिषद के 15

राजद्रोही, स्वतःघोषित कैप्टन लिविंगस्टन के नेतृत्व में, बैंक के रक्षक के० रि० पु० बल, के सेक्शन पर तीन ओर से चढ़ आये।

पहला जत्था का० नानैन्या सन्तरी के पास पहुँचा और अलक्ष्य फायर कर उसे शान्त करना चाहा तथा उसके विरोध करने पर, उसकी जांघ पर पहले वार किया। दूसरे जत्थे ने बैंक में घुसकर नक़द राशि ले जाना चाही; किन्तु हे०का० नन्दन सिंह, ना० शेर सिंह और का० जयदीप सिंह ने, जो बैंक के भीतर थे, घोर विरोध किया और दुष्प्रयास को विफल कर दिया। विद्रोहियों ने दो एन० सी० ओ० जवानों पर तब फायर किया, जब उन्होंने विद्रोहियों को पकड़ने के लिये पीछा किया। जबकि हे० का० नन्दन सिंह सोलह गोलियों से देह छलनी कराकर धराशायी हुआ, ना० शेर सिंह का जबड़ा, विद्रोहियों की गोलियों से, विकृत हो गया।

विद्रोहियों के तीसरे जत्थे द्वारा अन्धाधुन्ध गोलीचालन से का० बलवन्तसिंह और रसोइये मिश्रीलाल की मृत्यु हुई।

दो एन०सी०ओ० और एक कान्स्टेबल के पराक्रम ने, उस दिन बैंक से 25 लाख रुपये लुटवाने से बचा लिये।

तत्पश्चात् घेराबन्दी में, 21 एम और 22 एम चीनी रायफलों के खाली कारतूस घटना स्थल से मिले। चार संदिग्ध व्यक्ति भी बन्दी बनाये गये।

के० रि० पु० बल की शूरवीरता

पंजाब के विभिन्न भागों में हुई घटनाओं में के. रि. पु. बल से विविध मुठभेड़ों में कम से कम सात तथाकथित आतंकवादियों की मृत्यु की सूचना मिली है।

31 मार्च की रात को, दो आतंकवादियों ने हरिका पट्टी से आती हुई एक फियट कार को रोकते हुए पिस्तौल दिखा कर उसमें बैठे व्यक्तियों से 1,500 रु० लूट लिये। यह सूचना पाते ही, नागरिक पुलिस के साथ, के. रि. पु. बल ने उनका पीछा किया। दोनों ओर से गोलाबारी में, दोनों आतंकवादी मारे गए। उनके शवों से एक •32 बोर की भरी व एक •12 बोर की पिस्तौल और लुटा धन बरामद कर लिया।

वे फिरोजपुर जिले के फतहपुर गांव के सुखदेव सिंह और जिन्द के नांकी गाँव का रेशम सिंह थे।

कालानूर थाने के अन्तर्गत सिहारी ग्राम के निकट 13 अप्रैल 1986 की शाम को, नागरिक पुलिस के संग के० रि० पु० बल की गश्ती टुकड़ी ने दूसरी दिशा से एक जीप आती हुई देखी। के० रि० पु० बल के जवान उस जीप की जाँच को तैयार हो गये। चालक को उल्टे गीयर में डालते देखकर, उन्होंने चुनौती दी। इस पर जीप वालों ने फायर किये। यह गोलावारी आध घण्टे चली। दो आतंकवादी मारे गये और दो जीवित पकड़े गये। मृतक लुधियाना जिले के जगराओ थाने के अन्तर्गत अखाला के

हराजेन्दर सिंह और जसावेन्दरासिंह उर्फ जस्सा थे। 1 सांवेस रिवाल्वर, 32 जीवित कारतूस और 20 खाली कारतूस प्राप्त हुए।

अमृतसर में कले के और चरियाला के बीच 14 अप्रैल 1986 को नागरिक पुलिस के साथ के० रि० पु० बल द्वारा घेराबन्दी करने पर, कुछ आतंकवादियों ने उन पर गोली चलायी। उस गोलाबारी में, तीन आतंकवादी मारे गये और एक स्टेन गन, दो मैगजीन और एक पिस्तौल प्राप्त हुयी।

एक मृतक टूट ग्राम का गुरमेज सिंह था।

भावभीनी विदाई

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के अधिकारियों और जवानों ने श्री शिवमोहन सिंह अपर महानिदेशक को उनकी सेवा निवृत्ति पर, भावभीनी विदाई दी।

पूर्वोत्तर में राजद्रोह, मध्यप्रदेश में डाकुओं और पंजाब में आतंकवाद के विरुद्ध कार्यवाइयों के समय विशिष्ट सेवाभार उठाते हुये, उन्होंने 36 वर्ष सेवा की। चार वर्ष पूर्व, उन्होंने पुलिस महानिरीक्षक (मुख्यालय) के रूप में, के० रि० पु० बल में प्रवेश किया था।

ग्रुप केन्द्रों में क्रीड़ा केन्द्र

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कर्मियों के बच्चों के लाभ के लिए, सभी ग्रुप केन्द्रों में क्रीड़ा केन्द्र खोले जायेंगे।

पुस्तकालय भी इन केन्द्रों में खोले जायेंगे, जहाँ से बच्चों को खेल के विषयों पर पुस्तकें पढ़ने को मिला करेंगी।

जहाँ कहीं भी के० रि० पु० बल के खेल शिक्षक होंगे, वहाँ बच्चों को उनसे खेल-शिक्षा पाने की सुविधा भी दी जायेगी।

प्रधानमंत्री से महानिदेशक की भेंट

श्री एस. डी. पाण्डेय, महानिदेशक, के० रि० पु० बल ने 17 मार्च 1986 को प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी से भेंट की। वैसे तो वह भेंट शिष्टाचारिक थी; किन्तु जवानों के लिये विश्राम और प्रशिक्षण के विषय में प्रधानमंत्री की रुचि दिखलाने के कारण,

वह फलदायक हुयो। महानेदेशक ने प्रधानमंत्रो को जवानों को ओर से आश्वस्त किया कि के० रि० पु० बल, विश्राम की तुलना में प्रशिक्षण पर अधिक जोर दे रहा है और यह आशा व्यक्त की कि निरन्तर प्रयत्न से कम्पनी स्तर के क्रमिक प्रशिक्षण के विषय में अच्छा सन्तोष मिलेगा।

जम्मू-कश्मीर में रक्तदान शिविर

29 मार्च 1986 ग्रुप को केन्द्र बनतालाब में भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी और मेडीकल कॉलेज द्वारा आयोजित आज तक के सबसे बड़े रक्तदान शिविर का उद्घाटन, श्री जगमोहन, राज्यपाल, जम्मूकश्मीर ने किया।

16 महिलाओं के सहित, के० रि० पु० बल के 200 से अधिक जवानों ने शिविर में रक्तदान किया।

अवन्तीपुर में 76 बटालियन के मुख्यालय में उसकी वर्षगांठ पर 1 मई 1986 को एक रक्तदान शिविर आयोजित हुआ। एक सौ एक अधिकारियों, अधीनस्थ अधिकारियों तथा जवानों ने उस अवसर पर रक्त दान किया।

अधिकारियों और जवानों को सम्बोधित करते हुये, राज्यपाल ने विभिन्न अवसरों पर इस बल के जवानों द्वारा उठाये गये सेवाभारों की सराहना की ओर कहा कि राष्ट्र सेवा में इस द्वारा स्थापित की गई उच्च परम्पराओं के लिये देश को गर्व है।

राज्यपाल ने रक्तदान की सराहना की और कहा कि जवान प्रशंसनीय सामाजिक सेवा कर रहे हैं। उन्होंने इस बात की सराहना की कि पिछले शिविर में जबकि केवल 45 जवानों ने रक्त दिया था, इसबार यह संख्या 300 पहुँच गयी है। श्री जगमोहन रक्तदाताओं से मिले और उन्हें अपनी शुभ कामनायें दीं।

11 नवगठित बटालियनों की दीक्षान्त परेडें

दिल्ली :

एअर वाइस मार्शल (रि०) एच. एल. कपूर, उपराज्यपाल, दिल्ली ने ग्रुप केन्द्र झड़ोदाकलाँ में 12 अप्रैल 1986 को आयोजित 84 बटालियन के० रि० पु० बल की शपथ ग्रहण और दीक्षान्त परेड की सलामी ली।

उपराज्यपाल ने परेड के स्तर की प्रशंसा की। यह प्रशिक्षकों तथा सुन्दर प्रशिक्षण के प्रति मूल्यांकन था।

श्री कपूर ने यह विश्वास प्रकट किया कि उस लो गइ शपथ के अनुरूप जवान उठ कर देश की एकता और अखण्डता की रक्षा करेंगे।

परेड में 496 रंगरूट, 21 अधीनस्थ अधिकारी और 9 राजपत्रित अधिकारी थे और उसका नेतृत्व कमांडेंट एम. एम. प्रसाद (84 बटालियन) ने किया।

हैदराबाद :

हैदराबाद में 19 मार्च 1986 को आयोजित 76 बटालियन की दीक्षान्त परेड के अवसर पर, जवानों को सम्बोधित करते हुए, श्रीमती कुमुदबेन जोशी, राज्यपाल, आन्ध्र प्रदेश ने के० रि० पु० बल के गठन काल से ही इसके जवानों द्वारा दर्शायी गई वीरता के दृष्टान्तों की सराहना की।

उन्होंने बताया राष्ट्र का प्रशासनतंत्र, के० रि० पु० बल के कर्मियों की कठिनाइयों से पूर्णरूपेण परिचित है। उन्होंने देश के नागरिकों से इन वीर पुंगवों की सेवाओं को मान्यता देने का आग्रह किया।

इससे पूर्व, उन्होंने श्री जार्ज सी० पोडीपारा, कमांडेंट के नेतृत्व में की गई परेड का निरीक्षण किया और सलामी ली। इस अवसर पर, 652 रंगरूटों ने प्रशिक्षण पूरा किया।

रामपुर :

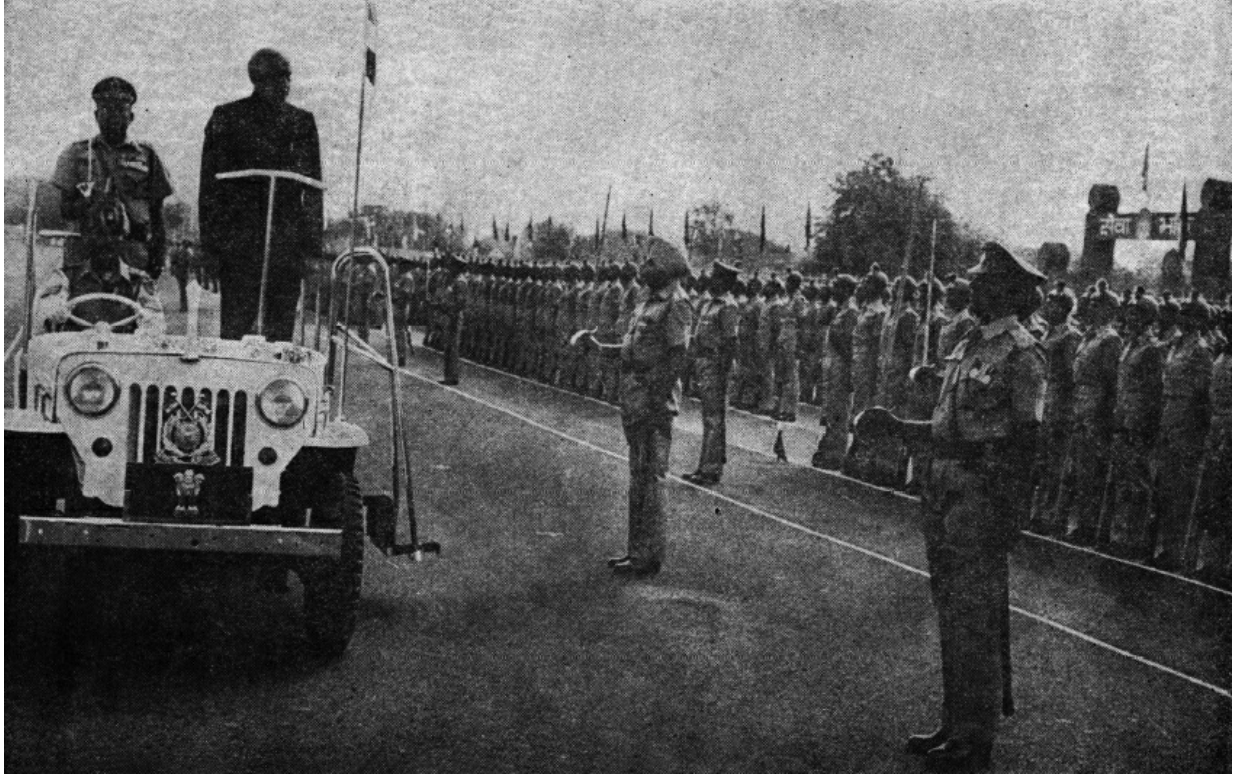
रामपुर में 23 मार्च 1986 को आयोजित 82 बटालियन की दीक्षान्त परेड में 527 रंगरूटों ने शिक्षण पूरा किया। यह बटालियन 1 जून 1986 को ग्रुप केन्द्र के परिसर में गठित की गई थी।

श्री एस०डी० पाण्डेय, महानिदेशक, के० रि० पु० बल ने परेड का निरीक्षण किया और सलामी ली। उन्होंने इन तीन सर्वोत्तम प्रशिक्षार्थियों को पदक प्रदान किये—का० जय सिंह, का० सन्तोष कुमार और का० मुंशी भासके।

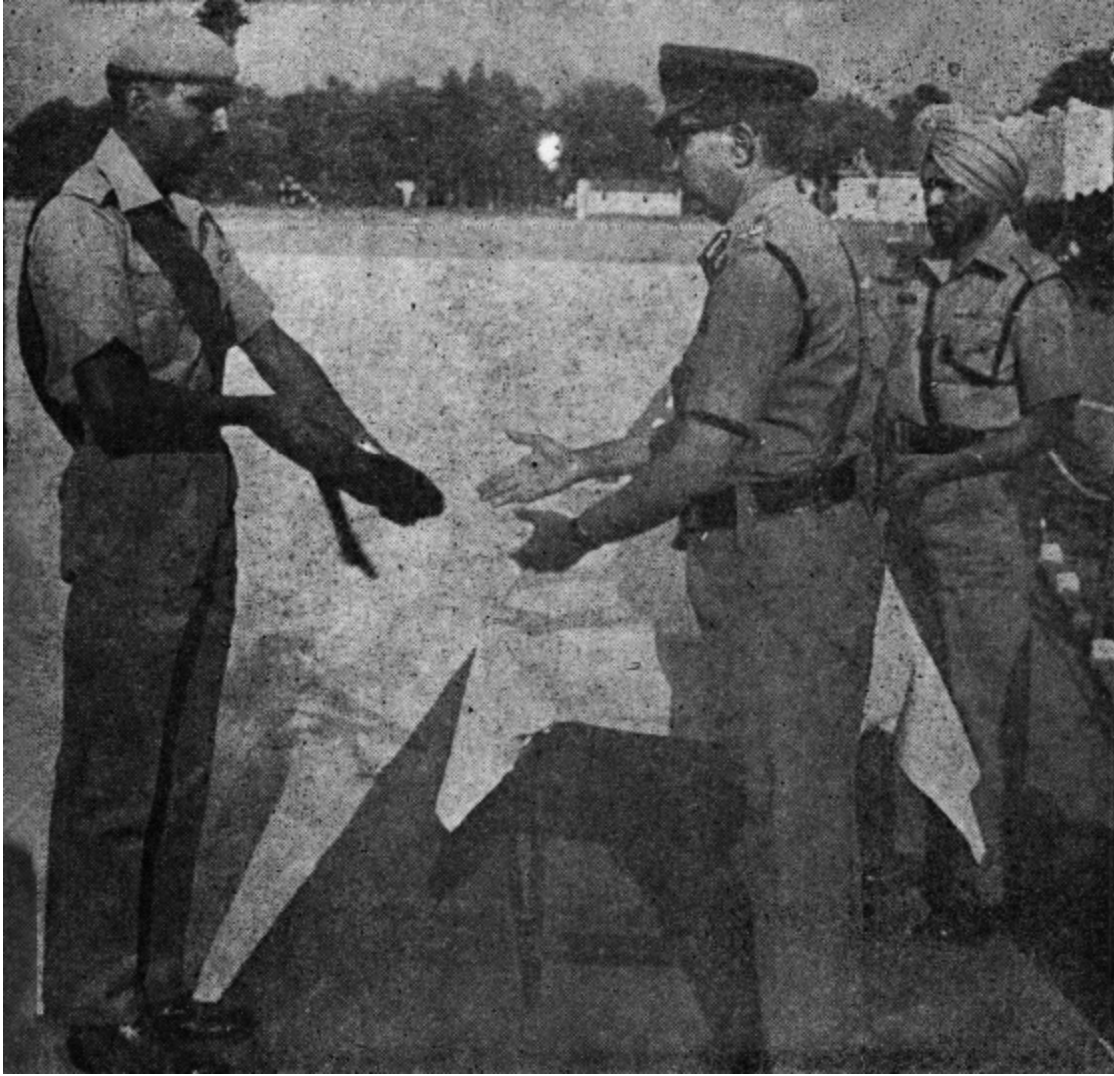
अजमेर :

अजमेर में 23 मार्च 1986 को आयोजित 85 बटालियन की शपथ ग्रहण परेड में 570 जवानों ने राष्ट्र सेवा की शपथ ली।

उस अवसर पर, अपर महानिदेशक श्री शिवमोहन सिंह ने जवानों से अपनी शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक कुशलता को विकसित कर, राष्ट्र सेवा करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि राष्ट्र सेवा, एक उत्तम तथा कठिन कार्य है; किन्तु कठिनाइयों को समुचित प्रशिक्षण और शिक्षा से दूर किया जा सकता है।



दिल्ली में 84 बटालियन की दीक्षान्त परेड का निरीक्षण करते हुए एअर वाइस मार्शल एच० एल० कपूर



रामपुर में का० जयसिंह को सर्वांगीण श्रेष्ठ प्रशिक्षार्थी का पदक देते हुए श्री एस० डी० पाण्डेय, महानिदेशक।

इससे पूर्व, श्री शिवमोहन सिंह ने परेड का निरीक्षण किया और सलामी ली। परेड का नेतृत्व श्री आर०एस० यादव, कमांडेंट ने किया। का० सिकन्दर कुमार (तैराकी प्रशिक्षार्थी), एम० जी० भिवाजी (बहिरंग सर्वश्रेष्ठ) और सेमनिया सिंह (अन्तरंग सर्वश्रेष्ठ) को पुरस्कार दिये गये।

गौहाटी :

गौहाटी में 23 मार्च 1986 को श्री सुखजिन्दर सिंह, कमांडेंट के नेतृत्व में आयोजित एक प्रभावशाली शपथ ग्रहण और दीक्षान्त परेड में, 424 रंगरूटों ने मौलिक शिक्षा समाप्त कर, भाग लिया।

यह प्रथम बार था कि पूर्वोत्तर अंचल में के० रि० पु० बल की कोई बटालियन गठित की गई। इस अवसर पर, के० रि० पु० बल के जवानों ने निरस्त्र युद्ध और वाद्यों का भव्य प्रदर्शन किया।

श्री प्रफुल्ल कुमार महन्त, मुख्यमंत्री, असम ने सलामी ली और जवानों को सम्बोधित किया। उन्होंने भव्य परेड पर सब जवानों को बधाई दी। उन्होंने के० रि० पु० बल के जवानों को यह मंत्रणा दी कि दृढ़ रहते हुए भी, नाजुक स्थितियों में मानवीय एवं दयावन्त रहें। उन्होंने कहा कि के० रि० पु० बल राष्ट्रीय अखण्डता का दृष्टान्त है, क्योंकि इसके जवान देश के सभी क्षेत्रों के होते हैं। अपने कार्यभार को करते हुए, प्रेम-दुलार तथा सद्भावना द्वारा राष्ट्रीय अखण्डता का विरला उदाहरण उन्हें बनाये रखना होगा।



अजमेर में एक सिपाही को पदक प्रदान करते हुए श्री शिव मोहन सिंह, अपर महानिदेशक।

नीमच :

नीमच में 3 अप्रैल 1986 को, 80 बटालियन की दीक्षान्त परेड के अवसर पर, प्रो० चांडी, मध्य प्रदेश के राज्यपाल के० रि० पु० बल के अधिकारियों और जवानों को यह मंत्रणा दी कि हर जवान को ठंडे दिमाग और निष्पक्षता से व्यवस्था बनाये रखने में सहयोग देना होगा। उन्होंने कर्तव्य पालन करते समय भावनाओं में बहे नहीं जाने की प्रेरणा दी। उन्होंने बताया कि जवानों को सदैव यह ध्यान रखना चाहिए कि देश-सेवा सर्वोपरि कर्तव्य है।

भुवनेश्वर :

भुवनेश्वर में 20 मार्च 1986 को एक प्रभावशाली परेड में 83 बटालियन के 206 रंगरूटों ने भाग लिया।

श्री जे.बी. पटनायक, मुख्यमंत्री, उड़ीसा ने परेड को सम्बोधित करते हुए, जवानों को पूर्ण निष्ठा और समर्पणभावना से देश की सेवा करने का आग्रह किया। बाद को, उन्होंने रंगीन टेलीविजन सेट बटालियन को प्रदान किया।

गांधीनगर :

गांधीनगर में 16 अप्रैल 1986 को आयोजित 86 बटालियन की एक प्रभावशाली शपथ ग्रहण तथा दीक्षान्त परेड में, 384 रंगरूट, इस बल के नियमित जवान बन गये।

इस अवसर पर, श्री अमर सिंह चौधरी, मुख्य मन्त्री, गुजरात ने परेड की सलामी ली तथा जवानों से अत्यन्त परिश्रम, निष्ठा और समर्पणभावना से कर्तव्यपालन का आग्रह किया। नई बटालियन को, उन्होंने 5000 रु० दान करने की घोषणा की।

आवड़ी :

दिनांक 24 मार्च 1986 को श्री एस० एल० खुराना, राज्यपाल, तमिलनाडु ने कहा कि पूर्वोत्तर में राजद्रोह और अन्यत्र आतंकवाद के सहित देश में मुख फाड़े कितनी ही समस्याओं से निपटने के लिये, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल को भारी भूमिका निभानी है।

आवड़ी में 78 बटालियन की दीक्षान्त परेड में सलामी लेते हुये, उन्होंने कहा कि के०रि०पु०बल के अनुशासन, ईमानदारी, उच्च कुशलता और निष्पक्षता जैसे विशेष गुणों को, नये प्रशिक्षार्थियों द्वारा बनाये रखना है।

परेड की प्रशंसनीय बात थी श्री वी० परसुरामन के नेतृत्व में 613 रंगरूटों की प्रभावशाली दीक्षान्त परेड। यह प्रथम अवसर था, जब आवड़ी में एक पूर्ण रूपेण बटालियन गठित की गयी थी।

अन्तर्रेंज तैराकी

नीमच में 8 से 12 मई, 1986 तक खेली गयी 20वीं अन्तर्रेंज तैराकी प्रतियोगिता में, अजमेर रेंज ने 177 अंक पाकर तैराकी का सिरमौर अपने पास रखा।

मद्रास रेंज (136 अंक) और हैदराबाद रेंज (102 अंक) क्रमशः द्वितीय और तृतीय स्थान पर आयीं।

अजमेर के दोनों—पवित्रो शर्मा और एम. एस. शेखावत, क्रमशः हाई बोर्ड और स्प्रिंगबोर्ड गोतेखोरी में प्रथम रहे।

वाटर पोलों में, अजमेर ने मद्रास को फाइनल में हरा दिया।

अन्तर्रेंज हॉकी

रामपुर में 26 अप्रैल से 6 मई 1986 तक आयोजित 20 वीं अन्तर्रेंज हॉकी प्रतियोगिता में कलकत्ता रेंज ने चैम्पियनशिप टाफी जीती, जबकि रामपुर रेंज और मद्रास रेंज क्रमशः द्वितीय और तृतीय स्थान पर रहीं।

स० इ० रनबीर सिंह (रामपुर) प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी माना गया।

जापान में रामभगत

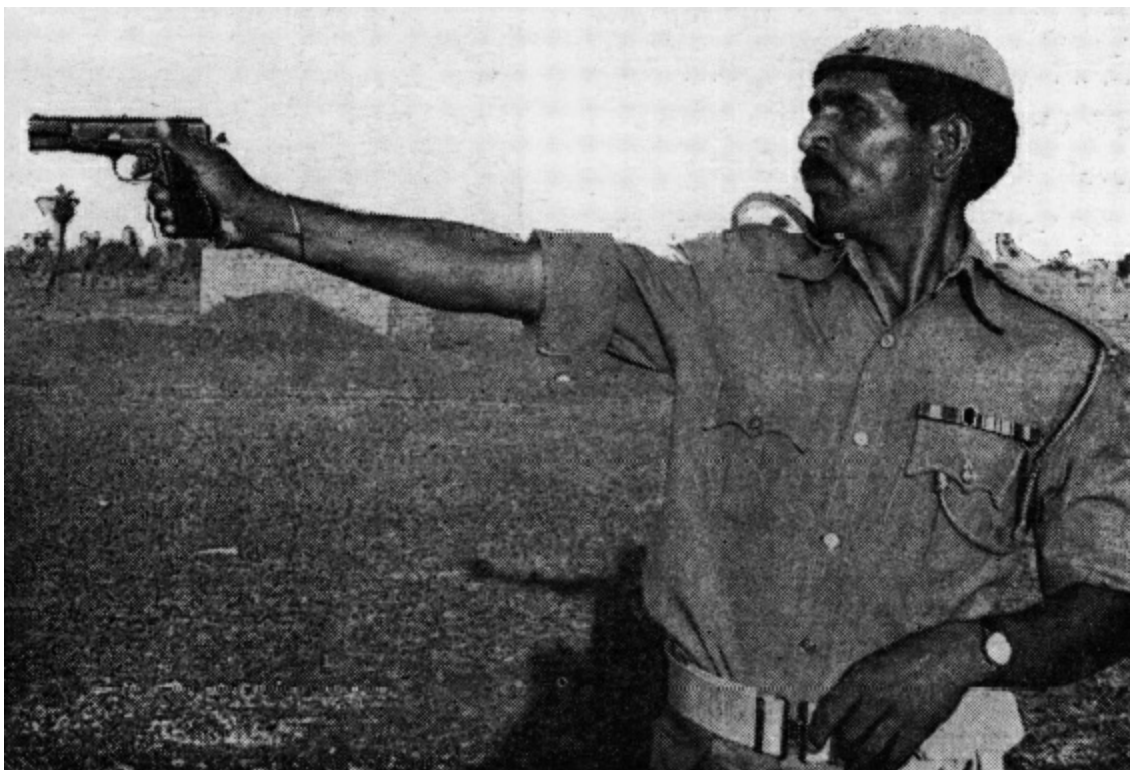
भारतीय अमेच्यर दौड़कूद संघ द्वारा जापान के ओटसू में बिवाको मैराथन के लिये देश का प्रतिनिधि चयन किये जाने पर, इ० रामभगत (के० रि० पु० बल) ने अखिल संसार के 3,500 प्रतियोगियों में 22वाँ स्थान पाया।

के०रि०पु० बल के लक्ष्य भेदकों को बीस हजार रुपये का पुरस्कार

ना० के० के० माधवन, ना० देवीसिंह ला० ना० लक्ष्मण सरकार और ला० ना० दिलवाग सिंह वाली केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 'बी' टीम, नई दिल्ली में 20 से 24 मई 1986 तक आयोजित प्रथम भारतीय खुले लक्ष्य भेदन की प्रतियोगिता में उपविजेता रही। प्रतियोगिता में भाग लेने वाली सेना, अर्द्धसेना और पुलिस संगठनों की 33 टीमों में उपविजेता रहने के कारण, इस टीम को 20,000 रु० का नकद

पुरस्कार मिला। सी० सु० बल को टीम ने गृहमंत्रों का कप पाने के कारण 30,000 रु० का और सेन्ट्रल कमांड ने तृतीय स्थान पाने, पर 10,000 रु० का नकद पारितोषिक पाया।

के० रि० पु० बल के हे० का० तारूराम को, तीसरी स्पर्धा में शतप्रतिशत अंक पाने के कारण, एक स्वर्णपदक मिला। तदुपरान्त, महानिदेशक, के० रि० पु० बल, ने उसको सबइन्स्पेक्टर के पद पर उन्नति देने की घोषणा की।



सब-इन्स्पेक्टर तारूराम

अखिल भारतीय पुलिस खेल 1986 :

जिम्नास्टिक और बास्केट बाल में के० रि० पु० बल को सिरमौर

नई दिल्ली में 21 से 24 फरवरी 1986 तक आयोजित अखिल भारतीय पुलिस खेलों में, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने जिम्नास्टिक्स का सिरमौर अपने पास रखा।

जब कि इस बल को 547.75 अंक मिले, भारतीय-तिब्बत-सीमा पुलिस (511 अंक) और सीमा सुरक्षा बल (444.95 अंक) द्वितीय और तृतीय स्थान पर क्रमशः रहे।

इस विजय का किरीट निश्चय ही, के० रि० पु० बल के 27-वर्षीय अन्तर्राष्ट्रीय बलराम शील के सर पर बंधना चाहिए। तेहरान में हुयी आमंत्रण प्रतियोगिता से सीधा

आए हुए, इस इन्स्पेक्टर को 4 स्वर्ण, एक रजत और एक कास्य पदक पाने में कोई कठिनाई नहीं हुयी।

पोमेल्ड हार्स में 16.10 अंकों, पैरेलल बार में 17.05 अंकों, वाल्टिंग हार्स में 17.30 अंकों और फ्लोर एक्सरसाइज में 17.05 अंकों के आधार पर, उसने 4 स्वर्ण पदक बटोरे। रोमन रिंग्स में 16.85 अंक पाकर, उसने रजत पदक पाया, जबकि भा० ति० सी. पुलिस के अन्तर्राष्ट्रीय तापस कुमार देव ने 16.95 अंक पाकर, सिरमौर जीता। हारिजांटल बार में उसे 16.65 अंक पाकर कास्य पदक पर सन्तोष करना पड़ा। इस स्पर्धा को उसके सहयोगी के० राजेन्द्रन (17 अंक) ने जीता, जबकि रजत पदक समीरदेव (भा० ति० सी० पुलिस) को 16.80 अंकों के आधार पर मिला।

31-वर्षीय स. इ. के० राजेन्द्रन, बल राम शील के साथ पैरेलल बार में संयुक्त विजेता रहा; उसने पोमेल्डहार्स में 15.90 अंक और रोमन रिंग्स में 16.20 अंक पाकर कास्य पदक पाये।

के० रि० पु० बल का उदीयमान ना० विजय कुमार फ्लोर एक्सरसाइज में 16 अंक पाकर द्वितीय स्थान पर रहा, जबकि वाल्टिंग हार्स में 16.90 अंक पाकर उसे कास्य पदक मिला।

101 प्राप्तांक के आधार पर, बलराम शील प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित हुआ।



खेलों का सर्वश्रेष्ठ जिम्नास्ट बलराम शील

बास्केटबाल :

बास्केटबाल के रोमांचक फाइनल में, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने सीमा सुरक्षा बल को हरा दिया। कुल योग 69-59 था।

42-वर्षीय के० रि० पू० बल के पर्वताकार अन्तर्राष्ट्रीय वी. एन. कुट्टी ने 26 अंक बनाये, जबकि कुरुप ने 20 अंकों से सहयोग दिया।

के० रि० पु० बल प्रारंभ से ही आगे था। मध्यान्तर के समय प्राप्तांक 36-24 थे।

फुटबाल :

सी० सु० बल ने फुटबाल चम्पियनशिप ट्रॉफी जीती, जब उसने असम पुलिस को बुरी भाँति (8-2) से हराया।

पंजाब पुलिस ने के० रि० पु० बल को एकमात्र गोल से हराकर तृतीय स्थान पाया। यह गोल आउट साइड लेफ्ट सुखविन्दरसिंह ने सुरेन्द्रपालसिंह के 'पास' से 12वें मिनट में किया था।

कुश्ती :

कुश्ती में, सी० सु० बल ने सिरमौर अपने पास रखा, जबकि 6 अंकों के पीछे के० रि० पु० बल उपविजेता रहा।

राजेशकुमार (सी० सु० बल) ने श्रीराम (के० रि० पु० बल) को 48 कि० ग्रा० भार में अंकों के आधार पर कुश्ती जीती, जबकि उसके सहयोगी महाबीरसिंह ने 52 कि० ग्रा० भार में रामफल (हरियाणा) को हराकर स्वर्ण पदक पाया।

57 कि० ग्रा० भार में, जसपालसिंह (के० औ० सु० बल) ने के० रि० पु० बल के जसबीरसिंह को अंकों के आधार पर परास्त कर, स्वर्णपदक पाया।

राजेन्द्रसिंह (सी० सु० बल) ने 62 कि० ग्रा० भार में स्वर्ण और बसन्तकुमार (के० औ० सु० बल) ने रजत पदक पाया। 68 कि० ग्रा० भार में, रमाकान्त (म० प्र०) ने अशोक कुमार (सी० सु० बल) को सरलतापूर्वक हरा दिया। 74 कि० ग्रा० भार में, साधुराम (के० रि० पु० बल), राजेन्द्र प्रसाद (सी० सु० बल) से जल्द हार गया।

82 कि० ग्रा० में, वीरेन्द्र कुमार (के० रि० पु० बल) ने सी० सु० बल के जगदीश कुमार को पराजित किया। 90 कि० ग्रा० भार में, सुभाष (सी० सु० बल) ने राजबीर सिंह (हरियाणा) को चित्त कर दिया।

100 कि० ग्रा० भार में, रघुबीरसिंह (के० रि० पु० बल), जयप्रकाश (सी० सु० बल) से परास्त हुआ। पंजाब का करतार सिंह 100 कि० ग्रा० से ऊपर भार में सी० सु० बल के शाहसिंह को हरा कर अत्यधिक भार में चैम्पियन बना।

हॉकी:

हॉकी में, निरन्तर पाँचवे वर्ष, खिलाड़ी सितारों से परिपूर्ण पंजाब पुलिस की टीम ने

के० रि० पु० बल को 3-2 से हरा कर टीम चैंपियनशिप अपने पास रखी।

सी० सु० बल ने भारत तिब्बत सीमा पुलिस को (5-1) से हराकर, तृतीय स्थान पाया।

कबड्डी :

कबड्डी में, के० रि० पु० बल, पंजाब पुलिस से बुरी भाँति (55-22) पिट गयी।

अन्तर्राष्ट्रीय बलविन्दरसिंह ने पंजाब को जिताया; जबकि मनोज कुमार ने के० रि० पु० बल की ओर से उत्तम खेल दिखाया।

तृतीय स्थान के लिये, महाराष्ट्र पुलिस को सी० सु० बल ने (43-52) हरा कर कांस्य पदक पाया।

के.रि.पु. बल पर निरन्तर 14वें वर्ष दौड़कूद का सिरमौर

निरन्तर चौदहवें वर्ष, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने 26 फरवरी से 1 मार्च 1986 तक नई दिल्ली में आयोजित अखिल भारतीय पुलिस खेलों में दौड़कूद का सिरमौर अपने पास रखा। इसके प्राप्तांक 220 थे, जबकि सी० सु० बल (199 अंक) और केरल (122 अंक) क्रमशः द्वितीय और तृतीय रहे।

के० रि० पु० बल द्वारा आयोजित इस चार दिवसीय प्रतियोगिता में, चार नये कीर्तिमान स्थापित हुये। पहले ही दिन, केरल पुलिस के शाजी मोन, सुरेश राज, लोइट जोसेफ और नजीब मुहम्मद के चौगड्डे ने 4X100 मी. रिले को 42 से० में पूरा कर, सी० सु० बल के पिछले रिकार्ड को 2 से० से भंग किया। उसने तीसरे दिन फाइनल में 41.8 से० में पूराकर उस निज कीर्तिमान को सुधारा, जब कि केन्द्रीय प्रौद्योगिक सुरक्षा बल (42.3 से०) और के० रि० पु० बल (42.4 से०) क्रमशः द्वितीय तथा तृतीय रहे।

प्रतियोगिता के अन्तिम दिन, पिछले तीन कीर्तिमान भंग हुए। पिछड़ते हुए के० रि० पु० बल के खिलाड़ियों ने अपराह्न में अपनी शक्ति बटोरी और सभी स्पर्धाओं में विजयी हुए।

के० रि० पु० बल के 27-वर्षीय इंस्पेक्टर सुरिन्दर सिंह ने 400 मी० दौड़ में नौ वर्ष पुराना 48.3 से० वाला रिकार्ड भंग किया, जब उसे उसने 47.8 से० में पूरा किया। उसके बाद, बलविन्दर सिंह (सी० सु० बल) 48.5 से. और एस. के. सिंह (उड़ीसा) 48.7 से० में पूरा कर, क्रमशः, द्वितीय तथा तृतीय स्थान पर रहे।

4X400 मी० रिले को सुरिन्दर सिंह सहित के० रि० पु० बल के चौगड्डे ने 3 मि० 17.3

से० पूरा कर नया रिकार्ड बनाया और 1980 में सी० सु० बल द्वारा स्थापित 3 मि० 17.4 से० वाला कीर्तिमान भंग किया। केरल पुलिस (3 मि० 17.5 से०) और उत्तर प्रदेश पुलिस (3 मि० 18.8 से०) क्रमशः द्वितीय तथा तृतीय रहीं।

3,000 मी. स्टीपल चेज में, के० रि० पु० बल के प्रदीप कुमार डोगरा द्वारा 8 मि० 59.2 से० का 1982 वाला कीर्तिमान, सी० सु० बल के स० इ० ईश्वर सिंह ने 8 मि० 55.4 से० में पूरा कर, भंग किया। डोगरा (9 मि० 02.1 से०) दूसरे स्थान पर रहा, जबकि उसी के सहयोगी शमसुद्दीन ने (9 मि. 12.8 से०) तृतीय स्थान पाया।

पिछले वर्ष के विजेता हरीचन्द की । अनुपस्थिति में, जो पटियाला में राष्ट्रीय स्टेडियम में प्रशिक्षण पा रहे थे, ईश्वर सिंह को 5,000 मी० दौड़ में स्वर्णपदक पाने में कोई कठिनाई नहीं हुयी। उसने 14 मि० 32.93 से० में दूरी पार की, जब कि उसी का सहयोगी विद्याधर (14 मि० 34.4 से०) द्वितीय स्थान पर रहा। के० रि० पु० बल के शमसुद्दीन ने 14 मि० 41.7 से० में पूरा कर, कांस्यपदक पर सन्तोष किया।

ईश्वर सिंह को 1,500 मी. दौड़ में कांस्य पदक पर सन्तोष करना पड़ा, जिसे पंजाब पुलिस के धरम सिंह ने 3 मि० 56.4 से० में पूरा कर प्रथम स्थान पाया। अन्तर्राष्ट्रीय गुरुमुख सिंह (के० रि० पु० बल) ने, जो घुटने के कष्ट के कारण दो वर्ष तक खेल नहीं सका था, 3 मि० 56.6 से० में पूरा कर, द्वितीय स्थान पाया। ईश्वर सिंह एक से० से तृतीय स्थान पर रहा। बिहार का अन्तर्राष्ट्रीय बुधवा उरायो चतुर्थ स्थान पर रहा।

बहरहाल, इसी बुधवा उराओ ने 800 मी० दौड़ को 1 मि० 52 से० में पूरा कर स्वर्ण पदक पाया, जबकि धरम सिंह और गुरमेश सिंह (हरियाणा) ने 1 मि० 52.3 से० और 1 मि० 53 से० में पूरा कर, द्वितीय और तृतीय स्थान पाया।

पिछले वर्ष का रजत विजेता विद्याधर (सी० सु० बल) 10,000 मी० दौड़ में स्वर्णपदक विजेता रहा, जब उसने 30 मि० 38 से० में पूरा किया; जब कि उसके सहयोगी अशोक कुमार ने (30 मि० 51 से०) रजत पदक जीता। के० रि० पु० बल के कुलविन्दर सिंह (31 मि० 10 से०) को कांस्य पदक मिला। ओलिम्पिक खिलाड़ी हरीचन्द के भाई जीतराम, जो रथ मैराथान में पिछले वर्ष रजत पदक विजेता था, चतुर्थ स्थान पर आया।

कष्टप्रद मैराथान को 2 घं० 22 मि० 21 से० में पूरा कर, ए० एस० यून्म (के० रि० पु० बल) प्रथम रहा। के० रि० पु० बल का ही रसदेव सिंह (2 घं० 24 मि० 13 से०) ने द्वितीय स्थान पाया, जब कि उड़ीसा के टी० मुतयान, 1 मि० 3 से० से पिछड़ने पर, तृतीय रहा।



मैराथान विजेता यूनम

धनफेंक में एशियाई चैम्पियन रघबीर । सिंह बल ने 58.84 मी० की दूरी पर लोहगेंद को फेंककर करतल-ध्वनि के साथ स्वर्णपदक जीता। किन्तु क्रीड़ा लेखकों को यह निराशाजनक प्रयत्न लगा, क्योंकि उसने अभी कुछ दिनों पहले ही तो 66.74 मी. की दूरी का राष्ट्रीय रिकार्ड बनाया था। गुरमुख लाल (सी० सु० बल) और प्यारे लाल (हरियाणा) को क्रमशः 56.56 मी० और 54.38 मी० दूर फेंकने के लिये, रजत और कांस्य पदक मिले।

100 मी० दौड़ को 10.8 से० में पूरा कर, केरल का सुरेश राज फर्रटे का धावक रहा । आर० डी० मुसारी (सी० सु० बल) और बलविन्दर सिंह ने क्रमशः 10.9 से० और

11 से० में पूरा कर, द्वितीय तथा तृतीय स्थान पाया।

महिला वर्ग में, मध्यप्रदेश की सब इंस्पेक्टर शम्शाद कुरैशी ने 100 मी दौड़ को 12.5 से० में पूरा कर ख्याति पायी। उसने 4X100 मी० रिले में भी, अपने राज्य को सहयोग देकर, 51.4 से० का नया कीर्तिमान स्थापित कराया। लम्बी कूद में उसने 4.74मी० कूदकर रजतपदक पाया, जब कि बिहार की अंजलि लकरा (4.78 मी०) स्वर्ण पदक विजेता रही।



शाट पुट में नया रिकार्ड बनाने वाली मेनका गुरंग

शाटपुट में धातु गेंद को 11.05 मी० दूर फेंककर, मध्यप्रदेश की ही मेनका गुरंग ने नया कीर्तिमान स्थापित किया।

पुलिस के महिला कर्मियों के लिये 1982 में, अखिल भारतीय खेलों में प्रतियोगितायें प्रारम्भ हुयी थीं। महिला पुलिस के प्रयत्न बड़े उत्साहवर्धक रहे।

अपने 29 प्राप्तांकों के आधार पर, सब-इंस्पेक्टर ईश्वर सिंह (सी० सु० बल), प्रतियोगिता का सर्व श्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित हुआ।

यद्यपि कुछ खेलों में प्रतियोगितायें 21 फरवरी से ही आरंभ हो गई थीं, राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने 26 फरवरी को इनका औपचारिक उद्घाटन किया। अन्य विशिष्ट आगन्तुक लब्ध प्रख्याति ओलिम्पिक एथलीट केन्या का किपचोगे कीनी था, जो यहाँ एथलीटों को प्रशिक्षित करने आया हुआ था।

गृह राज्यमंत्री (आन्तरिक सुरक्षा) ने अन्तिम दिन पुरस्कार वितरित किये।

खेलों का भव्य समापन के०रि०पु० बल के वादकों के रंगारंगों वाद्य धुनों से हुआ।

खेलों का आँखों देखा हाल

इतिहास में सर्वप्रथम बार, आकाशवाणी | से, के० रि० पु० बल और पंजाब पुलिस के कबड्डी-फाइनल का आँखों देखा हाल प्रसारित हुआ। इसी प्रकार, हॉकी फाइनल भी प्रसारित हुआ, जिसमें भी के० रि० पु० बल का मुकाबला पंजाब पुलिस से हुआ था।

पुलिस खेलों पर फिल्म

पुलिस खेलों के इतिहास में प्रथम बार, फिल्मस डिवीजन ने 35 वें अखिल भारतीय पुलिस खेलों की प्रत्येक स्पर्धा को बहुत अधिक फिल्माया।

श्री के. के. गर्ग, उप प्रमुख निर्माता के अन्तर्गत फिल्मस डिवीजन के 69 सदस्यों ने प्रारम्भ से अन्त तक, प्रत्येक स्पर्धा पर फिल्म बनाई।

दस मिनट की समाचार-पत्रिका तैयार की गई और देश के सभी सिनेमाघरों में अप्रैल 1986 में वह दिखाई गई।

एक घंटे की अवधि की एक दूसरी फिल्म इस वर्ष तैयार होगी तथा सेक्टर पुलिस महानिरीक्षकों को यूनिटों में दिखाने को भेजी जायेगी।

खेलों पर एक वीडियो फिल्म भी, भारतीय खेल प्राधिकरण के सहयोग से तैयार की गई है। उसका सम्पादन हो रहा है और शीघ्र ही पूरी हो जायेगी।

अन्तर्राज्यीय दौड़कूद में के० रि० पु० बल की धाक

अगरतला में 7 से 9 मार्च 1986 तक अन्तर्राज्यीय दौड़कूद प्रतियोगिता में, इन्स्पेक्टर सुरिन्दरसिंह सर्वश्रेष्ठ एथलीट घोषित हुआ। दिल्ली की ओर से खेलते हुए, उसने दो स्वर्ण पदक पाये।

दिल्ली की ओर से खेलने वाले, जिन अन्य छै एथलीटों ने पदक जीते, उनके नाम हैं :—श्री रघुवीरसिंह बल, पुलिस उपाधीक्षक, घन फेंक में स्वर्ण और चक्का फेंक में कांस्य]; ला० ना० सत्य शीलन [लम्बी दौड़ में स्वर्ण]; स० इ० दलजीत सिंह [पोल वाल्ट में रजत]; स० इ० कमलजीत सिंह [चक्का फेंक में रजत]; ना० नासिर हसैन [डिकेंथलॉन में रजत] और श्री प्रदीपकुमार डोगरा, पुलिस उपाधीक्षक [स्टीपलचेज में कांस्य]।

इन सब के प्रयासों के फलस्वरूप, दिल्ली राज्य ने चैम्पियनशिप जीती।

INTERNAL SECURITY SEMINAR AT MOUNT ABU

The twenty-second Internal Security Seminar for Deputy Inspectors General of Police was conducted in the Internal Security Academy, C.R.P.F., Mount Abu from May 2 to 8, 1986.

Officers from various Central and State police organisations and public sector undertakings participated. Eminent academicians from the field of social sciences, behavioural sciences, legal studies and senior and retired police officers presented papers on the problems and perspective of internal security.

Among those who took part in the seminar were : Prof. S. M. Diaz, retired Director NPA (on “Ethnic unrest and internal security with special reference to Sri Lankan Tamil problem”) Prof. P. K. Misra of North Eastern University, Shi-llong (on “Ethnic violence”), Prof. S. Venugopal Rao, former Director, Bureau of Police Research and Development (on “Dynamics of crime and internal security”), Prof. K. C. Alexander, Director (Sociology), National Institute of Rural Development, Hyderabad (on “Ecological and social basis of agrarian unrest), Dr. G. P. Goyal of Maharshi Dayanand University, Rohtak (on “Regional unrest and internal security), Dr. Om Prakash, Director, C. M. D., Mahinagar (on “Internal Security from the economists perspective”), Dr. Mrs. N. B. Mody of Bombay University (on “Role of media in internal security”), Dr. K. M. Mathur, Addl. DIGP, CRPF (on “Internal security research and training”) and Shri T. G. L. Iyer, former DG, CRPF (on “Systems approach to internal security”).)

Shri C. D. Tripathi, Additional Secretary, UPSC was the other speaker.

Ajmer win aquatics title

With a tally of 177 points, Ajmer range retained the championship title in the 20th Inter-Range Aquatics Meet held at Neemuch from May 8 to 12,

1986.

Madras range with 136 and Hyderabad with 102 points settled for the second and third spots, respectively.

Ajmer's R.K. Rojen was declared the best swimmer of the meet having claimed five gold, a silver and a bronze.

Pavitro Sharma and M. S. She-khawat, both of Ajmer, won the high board and spring board diving events, respectively.

In water polo, Ajmer trounced Madras to win the title.

The prizes were given away by Smt. Indra Singh.

Inter-Range Hockey

Calcutta Range lifted the championship trophy in the 20th Inter-Range Hockey Competitions held at Rampur from April 26 to May 6, 1986. Rampur range was declared runner-up while Madras secured the third spot.

Sub-Inspector Ranbir Singh of Rampur range was adjudged the best player of the tournament.

CRPF Women Win

At the Mid Day Cross Country races held at National Stadium in New Delhi on April 27, 1986, the newly formed CRPF's women team was placed third.

Constables Sunita Dagar, Nir-mala Soni and Krishna were able to complete the gruelling race.

CRPF Doctor's Paper in Seminar



Dr. P. K. Pradhan

Dr. P. K. Pradhan, a post graduate in general medicine, attended the 41st Joint Annual Conference of the Association of Physicians in India at Udaipur in January this year.

A paper “Zinc as an adjuvant therapy in ‘Niddm’ patients” presented by him was acclaimed by the conference.

Earlier his paper on “Tubercular lymphadenitis with purpura” was appreciated in the 40th Joint Annual Conference of the Association of Physicians of India which he attended at Bangalore in January 1985.

Passing-out Parade of Subordinate officers

Mr. C. Subramaniam, Inspector-General of Police, Sector One, Hyderabad, said at Madras on May 2 that one more Central Training College and a Recruits Training Centre for Central Reserve Police Force would soon be opened in Bangalore.

Mr. Subramaniam, who took the salute at the Passing-out Parade of the 45th batch of Directly Appointed Subordinate Officers (DASO) and Under-Officer (UO) trainees at the Central Training College-II, CRPF, Avadi, said the new centres would be set up as part of the expansion programme of the CRPF.

The parade was commanded by Mr. C. V. Mathew, Vice-Principal in-charge of Training. Mr. Subramaniam also gave away the Director-General’s Trophy for the best trainee to Head Constable Gopaljee Singh.

के० रि० पु० बल में महिला बटालियन का गठन

पिछले वर्ष के शुरू में, सरकार को आरक्षण-नीति के विरुद्ध गुजरात में जन-आन्दोलन के बाद, जिसमें महिलाओं ने सक्रिय भाग लिया था, केन्द्रीय सरकार ने महिलाओं की एक बटालियन को गठित करने का निर्णय लिया।

भारत में प्रथम बार, एक अर्द्ध सैनिक बल—केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल—को एक महिला बटालियन को गठन करने का भार सौंपा गया। जनवरी 1986 में विभिन्न समाचार-पत्रों और आकाशवाणी के द्वारा 210—270 रु० के वेतनमान में के०रि० पु० बल में महिला सिपाहियों की भर्ती के विषय में घोषणा की गई। खुली भर्ती से, 459 महिलायें भर्ती होनी थीं। कम से कम 155 से०मी० लम्बी 18 से 23 आयु तक की ने महिलायें भर्ती के योग्य समझी जानी थीं। जिन्होंने कम से कम आठवीं कक्षा पास की थी। सारे देश के विभिन्न ग्रुप केन्द्रों में भर्ती की गई।

3 फरवरी से नई दिल्ली, जालन्धर और मधुबन में; 5 फरवरी से नागपुर, त्रिवेन्द्रम, मद्रास, हैदराबाद, पटना, अजमेर और भोपाल में; 16 फरवरी से जम्मू में और 20 फरवरी से दुर्गापुर, भुवनेश्वर, इम्फाल, कोहिमा और गौहाटी में, भर्ती शुरू हुयी। सारी भर्ती फरवरी में ही समाप्त हो गई। कुल मिलाकर, कान्स्टेबल के पद पर 600 महिलायें भर्ती की गई।

ग्रुप केन्द्र नई दिल्ली में पहले ही दिन 121 रिक्त स्थान के लिये, 600 महिलायें आयीं। देश के विभिन्न भागों से, वे ग्रुप केन्द्र के परिसर में आ इकट्ठी हुयीं। बिहार से कुछ महिलाओं के समेत, अनेकों पास के राज्यों से आई थीं।

श्री बाई. एन. कश्यप, कमांडेंट 62 बटालियन ने ग्रुप केन्द्र में परीक्षाएँ लीं। शारीरिक स्तरों और समुपयुक्त परीक्षाओं में महिलायें सही उतरीं। यद्यपि तीन मिनट की अवधि 400 मी० दौड़ के लिये रखी गयी थी, किन्तु अधिकांश महिलाओं ने दो मिनट से कम में वह दूरी पूरी कर ली। फिर 8 फीट की लम्बी कूद करायी गयी।

दक्षता के अनुसार, उनको दो वर्गों में बाँटा गया। जो औसतन स्वास्थ्य से ऊपर थीं, उन्हें वर्ग 'ए' और जो औसतन थीं, उन्हें 'बी' वर्ग में रखा गया।

महिलाओं की प्रतिस्पर्धा तीक्ष्ण थी। उन्होंने मौसम सहा, खुले में बैठी और अपनी बारी की प्रतीक्षा की। इस लम्बी प्रतीक्षा की नीरसता को पास की कैटीन से कभी-कभी चाय-नाश्ता ने बड़ी राहत दी।

भर्ती के दूसरे दिन में, कोई फर्क नहीं था। हाँ, आज की महिला-भीड़ अलबत्ता अच्छी प्रबन्ध के योग्य थी। उस दिन, जल्दी ही 300 महिलायें आ गयीं; और सारे दिन आती रहीं। भेंट ली गयी महिलाओं के विभिन्न वर्गों ने के०रि०पु० बल में भर्ती होने की इच्छा इसलिये बताई कि उन्हें साहस और वर्दी, बचपन से ही पसन्द थी।

चुनी हुयी कुछ महिलायें मुस्कराती खिलखिलाती इस गर्व से फूली नहीं समाती थीं कि महिलाओं की सर्वप्रथम अर्द्धसैनिक बटालियन में वे चुनी गयी हैं।

इस बटालियन के मुख्यालय ने झड़ौदा कलाँ में फरवरी 1986 से कमांडेंट एस. ए. खान के अधीन काम करना आरम्भ कर दिया; जबकि 'ए' कम्पनी, झड़ौदा कलाँ में

मुख्यालय पर रही, 'बी' और 'सी' कम्पानियाँ रामपुर में निरंत हैं। 'डी', 'ई' और 'एफ' कम्पनियाँ क्रमशः जम्मू, त्रिवेन्द्रम और गौहाटी में सेवारत हैं।

अपने-अपने स्थलों पर, महिला रंगरूट, छै-मासिक मौलिक पाठ्य क्रम कर रही हैं।

प्रशिक्षण में दैहिक स्वस्थता और लक्ष्यभेदन पर बल दिया जा रहा है। रायफल, स्टेनगन और पिस्तौल में प्रशिक्षण देने के अतिरिक्त, उन्हें निरस्त्र युद्ध में भी प्रशिक्षण दिया जा रहा है। कमजोर वर्ग के प्रति व्यवहार, प्राथमिक चिकित्सा, पुलिस जनता-सम्बन्ध तथा राहत-साहाय्य कार्यों पर बल दिया जा रहा है।

दो सतर्क जवान पुरस्कृत



स०इ० एम. पी. सिंह, का० दीपंकर शर्मा

तिहाड़ जेल के 28 अप्रैल 1986 को, वन्दी डैविड हाल को कोकैन और मार्फीन के मिश्रण को चोरी छिपे पहुँचाने के यत्न को पता लगाने के लिये, 31 बटालियन (के० रि० पु० बल) के वहाँ सेवारत स० इ० एम. पी. सिंह और का० दीपंकर शर्मा को 1,000 रु० तथा 500 रु० का क्रमशः नकद पुरस्कार दिया गया।

आपरेशन एण्ड ट्रेनिंग कान्फ्रेंस

नीमच में दो दिवसीय आपरेशन एण्ड ट्रेनिंग (परिचालन और प्रशिक्षण) सम्मेलन 28 मई 1986 को समाप्त हुआ। उसमें केन्द्रीय रिजर्व पुलिस के देश भर के वरिष्ठतम 30 अधिकारियों ने भाग लिया। श्री एस. डी. पाण्डेय, महानिदेशक के० रि० पु० बल की अध्यक्षता में, जवानों की कार्यदक्षता बढ़ाने तथा पंजाब एवं पूर्वोत्तर राज्यों में के० रि० पु० बल की कार्रवाइयों को सुधारने के उपायों पर विचार-विमर्श हुआ।

मौलिक प्रशिक्षण के साथ-साथ, जवानों को कमांडो प्रशिक्षण देने पर बल दिया गया।

तीन आतंकवादियों को मृत्यु

अमृतसर के कलके गाँव में 9 अप्रैल, 1986 को के० रि० पु० बल तथा नागरिक पुलिस की संयुक्त प्रहरी टुकड़ी से मुठभेड़ में, तीन आतंकवादी मारे गये। मृतकों से “भारी मात्रा में बारूद के साथ, एक स्टेन गन, एक .315 पिस्तौल और एक .455 रिवाल्वर पाई गयीं।

उस टुकड़ी में के० रि० पु० बल के जवान 41 और 67 बटालियन के थे।

मुख्य सम्पादक : एच. एस. सेठी। **सम्पादक :** एम. पी. नथैनियल तथा जे. एस. शर्मा।

मुद्रक : सी. आर. पी. एफ. प्रेस झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-110072

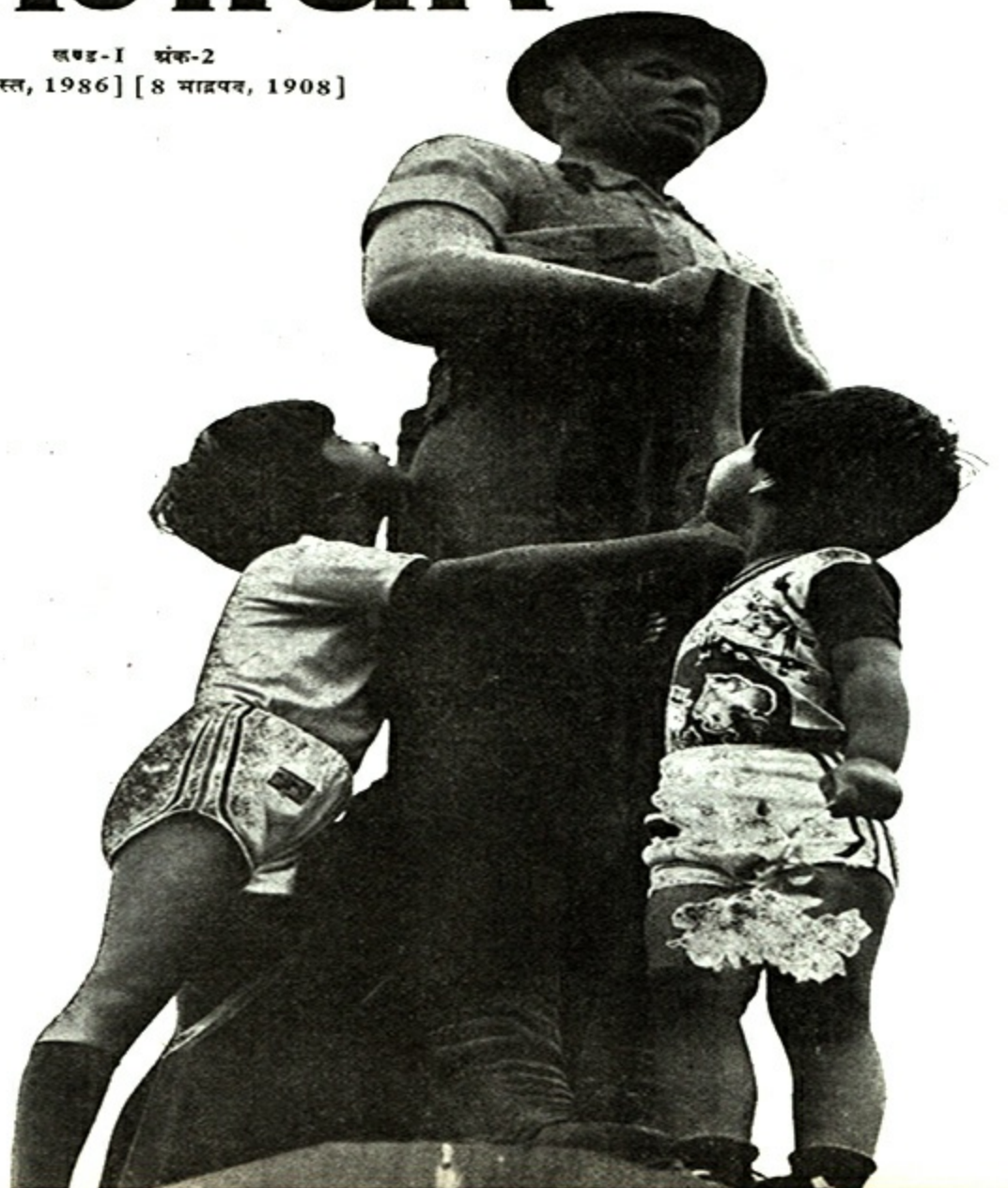
मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक, के० रि० पु० बल, ब्लॉक-1, सी. जी. ओ. कम्पलेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से एच. एस. सेठी।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की मासिक पत्रिका

सी आर पी एफ समाचार

खण्ड-I अंक-2

[31 अगस्त, 1986] [8 माघपद, 1908]



स्वाधीनता दिवस 1986 पर के.रि.पु. बल के 19 अधिकारियों को पदक

स्वाधीनता दिवस 1986 के अवसर पर, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित 19 अधिकारियों को विशिष्ट/सराहनीय पुलिस सेवा के लिये पदक प्रदान किये गये हैं :-

I. राष्ट्रपति के पुलिस विशिष्ट सेवा पदक 2 :

1. श्री बी. जे. एस. सियाल, पुलिस महानिरीक्षक (मुख्यालय) और 2. श्री के. आर. के. प्रसाद, पुलिस उपमहानिरीक्षक, मद्रास रेज।

II. पुलिस सराहनीय सेवा पदक (17) :

1. श्री बी. एल. बोहरा, पुलिस उपमहानिरीक्षक, नई दिल्ली 2. श्री एस. एस. विर्क, पुलिस उपमहानिरीक्षक, अमृतसर 3. एम. एल. गुलेरिया, अपर पुलिस उपमहानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र मद्रास, 4. श्री पी. के. मेनन, सहायक निदेशक (परिचालन) 5. श्री आर.एस. गिल, कमांडेंट, 6 बटा० 6. श्री आर. पी. गौतम, सहायक कमांडेंट, 24 बटालियन 7. श्री भगवानसिंह, सहायक कमांडेंट, 88 बटालियन 8. श्री एस. एस. संधू, सहायक कमांडेंट, 3 सिगनल बटालियन 9. श्री एम. एम. खान, पुलिस उपाधीक्षक, ग्रुप केन्द्र, हैदराबाद 10. श्री श्यामसुन्दर शर्मा, पुलिस उपाधीक्षक, 10 बटालियन 11. इन्स्पेक्टर जी. सी. शर्मा, 20 बटालियन 12. सब इन्स्पेक्टर (परिवहन) भजनसिंह, आ० सु० अकादमी 13. सहायक सब इन्स्पेक्टर (रेडियो आपरेटर) आर.एस. मूर्ति, 2 सिगनल बटालियन 14. हे० का० लालसिंह, पुलिस उपमहानिरीक्षालय, नई दिल्ली 15. ना० सोहन सिंह, ग्रुप केन्द्र, जम्मू 16. का० (मोची) दिवाना राम, 47 बटालियन और 17. सूबेदार मेजर (लिपिकवर्ग) एम. डी. वर्मा, महानिदेशालय।

ग्रुप केन्द्र II में विश्व पर्यावरण दिवस

ग्रुप केन्द्र II, अजमेर में 5 जून 1986 को डॉ० के. एम. माथुर, अपर पुलिस उपमहानिरीक्षक की अध्यक्षता में 'विश्व पर्यावरण दिवस' मनाया गया। सभी उपस्थित जनों ने बड़े उत्साहपूर्वक भाग लिया और परेड स्थल, जे. सी. सी. परेड कैम्प एरिया तथा अन्य महत्वपूर्ण स्थानों पर सफेदा, आम, जामुन तथा नीम सहित 14 प्रकार के 500 पौधों का रोपण किया गया।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के सिपाही का गीत

[रचियता-एस० डी० पाण्डेय]



के०रि०पु०बल में थीम सांग (स्थायी सुरीले गीत) के अभाव के कारण, सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से एक गीत रचकर भेजने का अनुरोध किया गया। फल स्वरूप, 23 व्यक्तियों ने अपनी रचनायें भेजीं, जिनमें निम्नलिखित गीत को तत्सम्बन्धी समिति ने सर्वश्रेष्ठ माना है और पुलिस उपाधीक्षक बी. के. स्वामी इस गीत की धुन बना रहे हैं।

चलते रहो प्यारे

चलते रहो प्यारे, तुम चलते रहो प्यारे,
चलते रहो, चलते रहो, चलते रहो प्यारे।
जाड़ा या गर्मी, सूखा या बरसात।
दिन हो उजाला, या अन्धेरी रात।
सूरज तुम्हारे साथ, साथ चाँद सितारे।

ये चांद सितारे,
चलते रहो प्यारे।
कश्मीर से केरल गए, आसाम में आये।
पंजाब बुलाते, कभी गुजरात बुलाये।
पहुंचे वहाँ, जहाँ भी तुम्हें देश पुकारे,
तुम्हें देश पुकारे,
चलते रहो प्यारे।
ओं चलने वाले, तेरे लिये रोज जंग है,
जीतना दिलों को तेरा खास ढंग है।
संसार भर में गूँज उठे, जीत के नारे,
तुम्हारी जीत के नारे,
चलते रहो प्यारे।
तुम चलते रहो प्यारे,
चलते रहो, चलते रहो, चलते रहो प्यारे।

मिजोराम में शान्ति स्थापना

निपट अराजकता में फिर से व्यवस्था स्थापित करना-मिजोराम के उपद्रव-ग्रस्त संघीय क्षेत्र में पुनः शान्ति लाना— यह वह चुनौती थी, जिससे के०रि०पु० बल ने भली भांति सुलझा।

13 जनवरी 1975 के अभागे दिन, तीन वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों की क्षणभर में हत्या कर दी गई। उन स्थितियों का क्या कारण था और किस प्रकार, के०रि०पु० बल ने मिजोराम में फिर शान्ति स्थापित करने में अंशदान किया? आइये, पढ़ें एच. एस. सेठी का यह लेख :—

बंगला देश तथा बर्मा से सटा हुआ मिजोराम, सबसे कम परिचित देश है। दुर्भाग्य

से, 1966 में समाचार-पत्रों के मुख्य समाचार द्वारा साधारण भारतीय को इस क्षेत्र के विषय में सबसे पहले ज्ञान हुआ, जब लालडेंगा के नेतृत्व में मिजो राष्ट्रीय मोर्चे ने विद्रोह का झण्डा खड़ा किया।

मिजो इतिहास में कुछ अधिक जानकारी इसके अतिरिक्त नहीं है कि यहाँ पर अंग्रेजों के आगमन से पूर्व, आदिवासी असम के कछार क्षेत्र के मैदानों में लूटपाट और सिर काटने के लिये आया करते थे। प्रेमियों द्वारा सिर तब काटे जाते थे जब कोई युवती वीरता का प्रमाण चाहती थी या मुखिया के मरने पर, सरों को गाँव वाले चाहते थे, क्योंकि मृतक के निवास “निथी खुआ” की सुखद यात्रा के लिए, कुछ नौकर चाकर तो उसे चाहिए थे।

1888 में एक ऐसे ही आक्रमण में, मिजो लोगों ने ब्रिटेन सेना के अधिकारी और उसके अंगरक्षक मार दिये थे। इसी ने अंग्रेजों को मिजो के विरुद्ध अभियान करने और उक्त भूमि पर अपना नियंत्रण, दृढ़तापूर्वक कायम करने को प्रेरित किया था।

देश को मिजोरम से संचार सम्पर्क के लिए केवल 240 कि० मी० लम्बा सिलचर आइजल राजपथ ही है।

उपेक्षा के परिणाम- मार्गों की कमी के लिए, मिजोरम को भारी दण्ड भुगतने पड़े हैं। 1959 में इस क्षेत्र में कुख्यात “माउतम” नामक चक्रीय अकाल, बाँसों में फूल खिलने से पड़ा। इन फूलों पर चूहे पनपे और इस मात्रा में बढ़ गये कि वे नदी को पार कर गये और खेती को नष्ट भ्रष्ट कर गए। देश में अन्न तो था; किन्तु प्रभावित क्षेत्र में पहुंचाने को मार्ग ही नहीं थे।

जिला परिषद में तब एक सामान्य सहायक लालडेंगा ने भूखों की मदद के लिये अकाल-राहत मोर्चा गठित किया। बाद को, उसने मिजोराम की स्वाधीनता के स्पष्ट उद्देश्य से, उसको मिजो राष्ट्रीय मोर्चे में बदल दिया। इस प्रकार, 23 फरवरी 1966 को राजद्रोह का ऐसा युद्ध प्रारंभ हुआ, जिसने वहाँ के निवासियों को दुःखदर्द और सशस्त्र बलों को एक भारी कष्टप्रद कार्यभार के अतिरिक्त, कुछ नहीं दिया।

मिजो राष्ट्रीय मोर्चे के सशस्त्र अंग के रूप में, मिजो राष्ट्रीय सेना ने राजद्रोह का बीड़ा उठार्या और सेना तथा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को यहाँ भेजा गया। विद्रोहियों ने स्वयं को आमने-सामने युद्ध में अक्षम पाकर, मिजो हिल्स पर घने बनों में गुप्त स्थान बनाये और वहां से सुरक्षा बलों पर घात लगाते रहे। गैर-मिजो को मारते रहे, स्थानीय लोगों से ‘कर’ देने को वाध्य करते रहे तथा उन्हें भूगर्भस्थ करने को अपने पुत्र भेजने को मजबूर करते रहे।

के० रि० पु० बल की भूमिका : राजद्रोह के आरंभिक वर्ष 1966 से, के० रि० पु० बल, राजद्रोह-उन्मूलन कार्रवाईयों में व्यस्त रहा है। अप्रैल 1966 में इस बल की एक बटालियन को आइजल दौड़ कर जाना पड़ा। तब से, इस संघीय क्षेत्र में, के० रि० पु० बल में बढ़ोत्तरी होती रही और समझौते होने से ठीक पूर्व, वहाँ छः बटालियन थीं। यद्यपि के० रि० पु० बल भारी संख्या में आइजल और उसके चारों ओर निरत है, यह बल लुंगलेइ जैसे दूर दराज के क्षेत्रों में भी प्रविस्तारित है।

राजद्रोह की चरम सीमा तब थी, जब मिजोरम पुलिस के तीन अधिकारी पुलिस-महानिरीक्षक, उपमहानिरीक्षक और अधीक्षक को, पुलिस महानिरीक्षक के कार्यालय में ही मार दिया था। मिजो राष्ट्रीय मोर्चे के सदस्यों और मुख्यतः हत्यारों का निमर्म पीछा करने पर उत्तम परिणाम निकले।

ऐसी स्थितियों में, नगर की सुरक्षा के० रि० पु० बल को सौंपी गई और सर्वप्रथम, के० रि० पु० बल का एक पुलिस उपमहानिरीक्षक (श्री राज सिंह) को आइजल में निरत किया गया। तुरन्त यह बल राजधानी के जलप्रदाय तथा अन्य महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों की ही सुरक्षा नहीं करने लगा, बल्कि स्थानीय पुलिस मुख्यालय, सचिवालय, विधानसभा और मिजोरम मंत्रालय के सदस्यों तथा उच्चाधिकारियों के आवासों की भी संरक्षा करता रहा।



मिजो राष्ट्रीय मोर्चे द्वारा शस्त्र-समर्पण

हत्यारों का बध —यह पता लगा कि प्रमुख हत्यारे, जो शायद पुलिस महानिरीक्षक के कार्यालय में घुसे थे, वे थे-कप्तान लाल्हलैया, प्राइवेट जुआवे,

लेफ्टीनेंट रोहनुना तथा कप्तान थंगारेलोवा। लाल्ह लैया, सौ० सु० बल से भागते हुये मुठभेड़ में मारा गया तथा के० रि० पु० बल से एक अन्य भिड़न्त में, जुआवा ने प्राण गवाये। के० रि० पु० बल तथा मिजो सशस्त्र पुलिस के तस्करी विरोधी अभियान के रूप में वाहनों की सामान्य जांच-पड़ताल के समय, थंग रिलोवा बन्दी बना। बच भागने की चेष्टा में, उस पर गोली चलायी गई और वह वहीं ठौर हो गया। अन्य भी बहुत महत्वपूर्ण धरपकड़ें हुयीं। तदुपरान्त, के० रि० पु० बल ने मिजो राष्ट्रीय मोर्चे के सामरिक मुख्यालय पर धावा बोल कर, अनेक महत्वपूर्ण कागजात तथा गोला बारूद प्राप्त किये।

1975 में 160 राजद्रोही के० रि० पु० बल द्वारा बन्दी बनाये गये और उन चारों के सहित, जिन्होंने वरिष्ठ पुलिस अधिकारी मारे थे, विभिन्न मुठभेड़ों में विद्रोहियों की एक भारी संख्या का सफाया किया गया। साथ ही, उसी वर्ष (1975) में दो भारी आत्म, समर्पण हुये, जिनमें उपराज्यपाल के सामने 164 विद्रोहियों ने अपने शस्त्र डाल दिये। इस प्रकार, 1975 से पहले, मिजो राष्ट्रीय मोर्चा समझौते करने की मुद्रा में था। 1975 की समाप्ति से पहले, लालडेंगा केन्द्र से मिला और समझौता वार्ता प्रारंभ हुई।

1976 का समझौता -1 जुलाई 1976 को भारत सरकार से एक समझौते पर लाल डेंगा ने हस्ताक्षर किये, जिससे मिजो राष्ट्रीय मोर्चे ने यह स्वीकार किया कि मिजोराम भारत का एक अभिन्न अंग है और उसने संविधान के ढाँचे में काम करने की शपथ ली। हिंसा त्यागने, शिविरों में भूमिगत लोगों को एकत्र करने और भारत सरकार को सभी शस्त्र सौंपने के लिये भी, वह तत्पर हो गया।

मिजोरम में इससे शान्ति युग आया; किन्तु दुर्भाग्य से, वह अधिक समय नहीं रह पाया, क्योंकि उस समझौते का निपट पालन नहीं हुआ और एक बार फिर, मिजोराम में सुरक्षा बलों का सजग पहरा लग गया। सो, के० रि० पु० बल इस उपद्रव-ग्रस्त संघीय क्षेत्र में शान्ति बनाये रखने में, अपनी भूमिका निभाने में लगा रहा।

सभी महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों और सभी प्रकार के विशिष्ट व्यक्तियों के आवामों पर, बाजारों-मार्गों पर प्रहरा देने में और राज द्रोहियों को बन्दी बनाने में, ये खाकी वर्दी धारी देखे जा सकते हैं।

कण्ठहार -इन समस्त वर्षों में, के० रि० पु० बल की पहुँच सदा मानवीय रही। इस बल के जवानों ने मानवीय कार्य किये और जनता के कण्ठहार बने। इन्होंने सदा यह ध्यान रखा कि विद्रोहियों को पकड़ना और मार डालना ही काफी नहीं है। सच्चा कार्य तो मिजो जनता के हृदय जीतने का है तथा उन्होंने हादिक संघर्ष में अपनी क्षमता दिखाई।

जब एक बार आइजल में एक विधवा का घर भारी वर्षा के कारण ढह गया और उसके तीनों बच्चों का पता नहीं लगा, तब 19 बटालियन की दो कम्पनियों ने दो दिन चप्पा-चप्पा छान मारा; अन्त में उन बच्चों के शवों को ढूँढ़ कर उस बेचारी को सौंप दिया। उस विधवा को कम्बल दिया और धनराशि भी इकट्ठीकरके दी। उस विधवा का खोया हुआ सब कुछ जा चुका था, और बचा था तो मानव आत्मा की उत्तमता पर

उसका विश्वास !

के० रि० पु० बल के जवानों ने सदा वहाँ के लोगों में भाईचारे की भावना पैदा करने का यत्न किया। अपनी चौकियों के पासवर्ती गांवों के सामाजिक और धार्मिक उत्सवों में वे शरीक हुये, खेल खेले, युवा खिलाड़ियों को प्रशिक्षित किया, मैचें खेलीं, कैटीन सुविधायें यथाशक्ति प्राप्त करायीं, अपने फिल्म शो में उन्हें बुला-बुलाकर दिखाया तथा प्रशासन को सिगनल्स नेट-वर्क उपलब्ध कराकर, विकास के विषय में उनकी सहायता की।

1983 में जब मेरी भेंट मिजोराम के मुख्यमंत्री से हुयी थी, तब उन्होंने यह स्वीकार किया था “जनता का जीतने में, के० रि० पु० बल मुख्यकर प्रसिद्ध रहा है। फलस्वरूप, जनता में राजद्रोह के लिये सहानुभूति केवल नगण्य रही है।”

हिन्दी प्रयोग के लिए पुरस्कार



केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद ने 1985 में ‘अखिल भारतीय हिन्दी व्यवहार प्रतियोगिता’ का आयोजन किया।

इस प्रतियोगिता में, श्री अशोक कुमार कथूरिया, अपर पुलिस उपमहानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र-1-अजमेर को, उनके कार्यालय में हिन्दी में किये गये उत्कृष्ट कामकाज के लिये ‘अधिकारी पुरस्कार’ से सम्मानित किया गया। दिनांक 31 मार्च 1986 को सपू हाउस, नई दिल्ली में, श्री टी. अंजैया ने 51 रु० का नकद पुरस्कार, उन्हें प्रदान किया।

हिन्दी-व्यवहार प्रतियोगिता-1986

राजभाषा अधिनियम 1963 में दी गई व्यवस्थाओं को सरकारी कामकाज में समुचित प्रकार से लागू करने के उद्देश्य से, महानिदेशालय के अनुभाग-शाखा अधिकारियों को हिन्दी व्यवहार प्रतियोगिता 1 से 31 मार्च 1986 तक सर्वाधिक द्विभाषी सामान्य आदेशों के आधार पर आयोजित की गई। उसमें महानिदेशालय के

विभिन्न अधिकारियों ने भाग लिया। गुण/मात्रा के अनुसार, इन तीन प्रथम अधिकारियों के प्रदर्शन सराहनीय रहे, जिन्हें महानिदेशक के प्रशस्ति-पत्र के साथ, नकद पुरस्कार स्वीकृत हुए-1. श्री आर० के० दुआ, सं० सं० नि० (कल्याण) 300 रु० 2. श्री सुरेश टूंडिया, सं० सं० नि० (संगठन)-200 रु० और 3. श्री एस० हैमराजानी, अ० अ० (स्थापना) 150 रु०।

इनके अतिरिक्त परिचालन और प्रशिक्षण के अनुभाग अधिकारियों के आगामी ब्योरे प्राप्त हुए, जिन्हें सराहनीय प्रदर्शन के लिए प्रशस्ति पत्र दिये जायेंगे।

विचार पूर्वक कहा और किया हुआ काम, बहुत समय बीतने पर भी विकृत नहीं होता।

—सूक्तिमुक्तावलि

पंजाब में आतंकवाद से संघर्ष



बसों की जाँच-पड़ताल

अमृतसर:

10 दिनांक 4 जून, 1986 को 48 बटालियन (के० रि० पु० बल) ने पंजाब में अमृतसर के एन. पन्नू बाजार से हरीचरन सिंह नामक व्यक्ति को संदिग्ध स्थिति में घूमते हुये पकड़ा, जो पंजाब पुलिस के सहायक उपनिरीक्षक की वर्दी पहने हुये था। उससे एक सर्विस रिवाल्वर .450 और 11 गोलियाँ बरामद की गयीं। तरनतारन के पुलिस उपाधीक्षक को उसे सौंप दिया गया।

दिनांक 5 जून 1986 को रात 9 बजे, 4 अनजान व्यक्तियों ने चाकू और पिस्तौल से 1 बटालियन (के० रि० पु० बल) के हवलदार गुसाई राम पर हमला कर दिया, जो गश्त ड्यूटी पर निरत था। तुरन्त उसके सहचर सरनाम सिंह ने जवाबी फायर किया। एक व्यक्ति घायल हो गया और अन्य तीन बच भागे। घायल व्यक्ति के हाथ से नंगी कृपारण पाई गई। सुल्तान विंड के थानाध्यक्ष द्वार उसे सिविल अस्पताल पहुँचाया गया। वह एक कुख्यात उग्रवादी निकला, जिसकी पिछले दो वर्षों से तलाश थी।

अमृतसर में ज्ञान आश्रम हायर सेकेंडरी स्कूल, छटी विंड गेट के क्षेत्र में 11 जून 1986 की तीसरे पहर सवा चार बजे, अलार्म की आवाज सुन कर, 79 बटालियन, के० रि० पु० बल के जवानों ने स्थानीय पुलिस के साथ, चार आतंकवादियों को चुनौती दी और पीछा किया। आतंकवादियों ने गोलियाँ चलाईं। जवानों ने भी जवाब में फायर किये, जिससे तीन आतंकवादी मारे गये और एक बच भागने में सफल हो गया। उनके पास से 12 बोर की दो पिस्तौलें, .455 की एक पिस्तौल, 12 बोर के दो कारतूस और .455 की दो असली गोलियाँ प्राप्त की।

अमृतसर में 14 जून 1986 को, एक तांगे की तलाशी लेते समय, 12 बटालियन, के० रि० पु० बल, के जवानों ने वेरपाल गाँव के पास, दो व्यक्तियों को पकड़ा। उनके पास से 12 बोर की एक पिस्तौल और चार जीवित कारतूस बरामद किये। उन दोनों को हथियारों और गोलाबारूद के साथ, जन्दिवाला पुलिस चौकी को सौंप दिया गया।

अमृतसर में थौबा रामदास गाँव के एक राम लुभाया के घर से 16 जून 1986 को 12 बोर की बन्दूक, पांच हजार रुपये और एक स्कूटर दो अज्ञात सिख ले भागे और उसे स्कूटर से घायल कर गये। गाँव चामिआरी में 12 बटालियन, के० रि० पु० बल के जवानों ने उन्हें रोकने को संकेत दिया। वे रुके तो नहीं, साथ में उन्होंने उस जवानों पर गोलियाँ चलायीं। जवानों के जवाबी फायरिंग से, एक सुन्दरसिंह नाम का आतंकवादी मारा गया। दुर्घटना-स्थल से, एक 12 बोर की बन्दूक, सोलह जीवित कारतूस; दो फायर किये हुये खोखे, .32 बोर की पांच गोलियाँ और एक हीरो मैजेस्टिक विकी बरामद की। मृतक तथा बरामद सामान को स्थानीय पुलिस के हवाले कर दिया।

अमृतसर में गोबिन्द बल-राजमार्ग पर, 19 जून 1986 को, स्थानीय पुलिस के साथ 29 बटालियन, के० रि० पु० बल ने, विशेष नाकाबन्दी की और गोविन्द बल के गाँव से एक .32 रिवाल्वर और 5 जीवित कारतूस प्राप्त किये।

अमृतसर के जूहे गांव पर छापा मारकर 20 जून 1986 को करीब 00.30 बजे, 48

बटालियन, के.रि.पु. बल, के जवानों ने सरपंच हरी सिंह और उनके पुत्र अजुन सिंह को (एक रिवाल्वर और उसकी सह गोलियां, 12 बोर की एक डी. बी. बी. एल. बन्दूक और उसकी पन्द्रह गोलियों के साथ) पकड़ा और उन्हें स्थानीय पुलिस के सुपुर्द कर दिया।

तरनतारन क्षेत्र के मुरादपुर रेलवे फाटक के पास, 20 जून 1986 को लगभग -10 बजे, सुरक्षा ड्यूटी पर तैनात 48 बटालियन के.रि.पु. बल, के जवानों ने जागीर सिंह, सुचा सिंह तथा दिलबाग सिंह नाम के तीन आतंकवादियों को पकड़ा और उनके पास से दो देशी पिस्तौल और उनके चार .303 कारतूस प्राप्त किये। तीनों को शस्त्रों के साथ, स्थानीय पुलिस को सौंप दिया गया।

अमृतसर के बस स्टैंड क्षेत्र में, 22 जून 1986 को, 3 बटालियन, के.रि.पु. बल, के जवानों ने विक्की पर सवार एक संदिग्ध सिख युवक को रोकना चाहा। उसके नहीं रुकने पर, जवानों ने एक राउण्ड चलाया, जिससे वह घायल होकर गिर पड़ा। उससे एक देशी पिस्तौल, एक पाकिस्तानी .32 पिस्तौल, पाँच जीवित कारतूस और चार कारतूस पाये गये। इन सब के तथा कलाई की घड़ी और विक्की सहित, उस व्यक्ति को स्थानीय पुलिस के सुपुर्द कर दिया गया।

गुरदासपुर :

गुरदासपुर के गिल तथा पसनावल ग्रामों में 9 जून 1986 को मारे गये छापे में, 27 बटालियन, के. रि. पु. बल, ने जसवन्त सिंह और हरवंश सरपंच नामक दो व्यक्तियों को बन्दी बनाकर, जसवंत सिंह से .32 बोर की एक रिवाल्वर और हरवंश सरपंच से बिना लाइसेन्स का चेतक स्कूटर प्राप्त किया। पाई हुई वस्तुओं के साथ, उन दोनों को स्थानीय पुलिस को सौंप दिया गया।

गुरदासपुर (पंजाब) के गोविन्दवाल में, 10 जून 1986 की शाम 7.32 बजे, 20 बटालियन (के. रि. पु. बल) की गश्त लगाती टुकड़ी ने बिल्कुल नई ट्रैक्टर ट्राली में यात्रा कर रहे तीन आतंकवादियों को देखा। उन्होंने अपने ही सहचर सुख विन्दर सिंह नामक व्यक्ति पर गोली दागी और ट्राली रोक कर, पास से गुजर रही पंजाब रोडवेज बस के कण्डक्टर से मनीबैग छीन लिया और ट्राली से कूद कर भाग निकले। जनता द्वारा पीछा करने पर, मनी-बैग को फेंक कर, वे खेतों-खेतों भागने लगे। इस बल की गश्ती टुकड़ी ने उनकी घेरा बन्दी की और एक गोली भी मारी। तीनों ही आतंकवादियों को फिर जाकर उसने धर दबोचा। उनके पास से .325 एम. एम. बोर की दो रिवाल्वरें (जिनमें एक पाकिस्तानी थी) .325 की पाँच गोलियाँ तथा एक फायर की हुयी गोली और चार खाली खोखे बरामद किये गये।

बटाला:

पंजाब में नेहरू गेट बटाला के पास, 11 जून 1986 को तीसरे पहर करीब पौने

चार बजे, 29 बटालियन, के० रि० पु० बल ने एक नागरिक से पोलिथोन बैग में .22 एम्यूनिशन की तीन सौ नब्बे असली गोलियाँ बरामद कीं, जबकि वह नागरिक भीड़ भरे बाजार में बच भागा। बाला पुलिस थाने को सारा गोला बारूद सौंप दिया गया।

फीरोजपुर:

दिनांक 20 जून 1986 को, 5 बटालियन के जवानों ने स्थानीय पुलिस के साथ, फीरोजपुर (पंजाब) में कामोगर गांव को जाते समय, दो अज्ञात व्यक्तियों को एक नाले के पुल के नीचे एक कपड़े की एक गठरी छिपाते देखा और जाकर उन्हें धर दबोचा। जवानों ने गठरी में लिपटे हुए 78,750 रु० पाये, जिन्हें शायद उन्होंने आतंकवादियों को देने के लिए अवैध रूप से एकत्र किया था। दोनों व्यक्तियों को उस धनराशि के साथ, स्थानीय पुलिस के हवाले कर दिया गया।

फीरोजपुर में सदर थाने के अध्यक्ष ने 30 जून 1986 को, शाम 7 बजे दो सिखों को वजीदपुर गांव के खेतों की ओर भागते देखा। पीछा करने पर, उन्होंने पुलिस पर गोली चलाई; अपनी रक्षा के लिए, पुलिस को भी फायर करना पड़ा। तब वे बूढ़ेवाले गांव की तरफ भाग निकले। तभी थानाध्यक्ष ने वजीदपुर में स्थित 5 बटालियन (के. रि. पु. बल) की एक कम्पनी के कमांडर को सन्देश भेज कर सहायता मांगी। तुरन्त श्री छेदी सिंह, पुलिस उपाधीक्षक ने अपने वाहन में कुछ जवानों को साथ लेकर उक्त स्थल पर धावा मारा और वह धान के खेतों में पैदल ही आतंकवादियों को खोज करने लगे। कां० सीराज अहमद ने दो राउण्ड चलाये, जिनसे एक आतंकवादी घायल हो गया, जिसे बाद को के. रि. पु. बल के जवानों ने बन्दी बना लिया, जबकि दूसरा अन्धरे का लाभ उठाकर बच भागा। बन्दी आतंकवादी, अमृतसर के गांव अहमदपुर का निवासी जगदीश सिंह ऊर्फ 'भोला' ऊर्फ सुरिन्दर सिंह निकला। वह भीषण आतंकवादी था और गोली चालन के जुर्म में उसकी तलाश थी।

महानिदेशक, पंजाब पुलिस ने के० रि० पु० बल के जवानों की इस शूरवीरता की बड़ी प्रशंसा की है।

श्रीपुरा :

श्रीपुरा में, 20 जून 1986 को, 3 बटालियन, के. रि. पु. बल, के जवानों ने छः युवकों की टुकड़ी को संदिग्ध स्थिति में घूमते हुये देखकर, ललकारा तथा नगेन्द्र सिंह और नरेन्द्र सिंह को धर दबोचा, जबकि अन्य व्यक्ति भाग निकले। नरेन्द्र सिंह से 32 गोलियों से भरी एक देशी रिवाल्वर प्राप्त हुई। भूपेन्द्र सिंह, सनम सिंह, हरचरण सिंह और मनजीत सिंह की टुकड़ी के शेष 4 व्यक्तियों को भी काफी दौड़ धूप के बाद, श्रीपुरा में ही एक मनमोहन सिंह के घर में पकड़ लिया तथा स्थानीय पुलिस को सौंप दिया गया।

चण्डीगढ़ :

4 जुलाई 1986 की रात को, यह सूचना मिलते ही कि चण्डीगढ़ के सेक्टर 20 'ए' में किसी परिवार पर धावा हुआ है, 32 बटालियन की 'ई' कम्पनी का एक सेक्शन घटना स्थल पर जा धाया।

घर की घेराबन्दी कर, के० रि० पु० बल ने स्थानीय पुलिस की टुकड़ी के साथ, उस घर की तलाशी ली। परिवार पर वार करने वाली पाँच तलवारों के अतिरिक्त, 315 बोर की 2 रायफलों, 26 कारतूसों तथा एक रिवाल्वर के साथ, पांच मनुष्यों को बन्दी बनाया गया।

पहेलियाँ

चार महीने बहुत चले
और आठ महीने थोरी।
अमीर खुसरो यों कहें,
बता पहेली मोरी ॥ 1 ॥
कुछ गोल गोल, कुछ स्याह-स्याह ।
कुछ हूपट हापट, हाय हाय । 2 ।
कोई हिरन बतावता,
कोई कहता पद्म ।
प्रथम झरोखा प्रेम का,
प्रकट करे मन-मर्म ॥ 3 ॥

उत्तर :- 1.मोरी (नाली) 2. कालीमिर्च 3. आँखें ।

फौजी की चिट्ठी

(रचयिता—ला० ना० टी. एन. उपाध्याय, ग्रुपकेन्द्र हैदराबाद)

पाती आई, दिल पर छाई—
ला प्रीतम सन्देश रे।

कागा बोले, उड़ उड़ डोले—
आते क्या प्राणेश रे।
खिल नन्दन वन, मन में स्पन्दन—
आया बसन्त-निमेष रे।
कलियाँ चटकी, गलियाँ महकीं—
वास सुवासित देश रे।
फूल खिले हैं, गले मिले हैं—
गूंजे भृंग हमेश रे।
कोयल कूके, मधुरस फूँके—
खिलते चित्त निवेश रे।
नेत्र मुदोबल, खेले उडुदल—
मुस्काता राकेश रे।
धवल दिशा है, शान्त निशा है,
मंगल भुव निश्शेष रे॥

35वीं अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिता:

खजानसिंह का भव्य प्रदर्शन

लेखक—एम. पी. नथैनियल

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 22-वर्षीय इन्स्पेक्टर खजान सिंह में न्यू कासिल, आस्ट्रेलिया में नौमास के प्रशिक्षण ने कितना भारी सुधार ला दिया है, यह तथ्य इन्हीं दिनों में ताल कटोरा तरणताल में हुई अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिता में, उसके रिकार्डभंजक प्रयत्नों से साफ उभर कर आया। बारह व्यक्तिगत स्पर्धों में, दस में उसने स्वर्ण पदक पाकर डंका बजाया और शेष दो अपने सहयोगी एस. राधाकृष्णन को जीतने के लिये छोड़ दिये। खजान सिंह ने तीन और स्वर्ण-पदक, के.रि.पु. बल को तीनों रिले स्पर्द्धाओं में विजय दिलाने के सहयोग में पाये। उन स्पर्द्धाओं में से, दो में नये रिकार्ड स्थापित किये गये।

अपने विजय अभियान में, खजान ने दस नये रिकार्ड बनाये, जिनमें पाँच ने तो

राष्ट्रीय कौतेमानों को भंग किया।

इंगलिश चैनल को 1956 में पार करने वाली प्रख्यात प्रथम एशियाई महिला श्रीमती आरती गुप्ता द्वारा उस प्रतियोगिता का उद्घाटन करने के शीघ्र बाद ही, खजान ने 200 मी० बटरफ्लाई स्पर्धा में बढ़त पाना शुरू कर दी। उसकी अद्वितीयता इससे ही प्रकट होने लगी, जब हर प्रयत्न में बढ़त को अभिवृद्ध करता वह चला गया और 2 मि० 08.34 से० में उसे पूरा कर लिया। - 1984 से चले आ रहे अपने ही 2 मि. 14.70 से० और 2 मि० 12.35 से० वाले क्रमशः पुलिस, और राष्ट्रीय दोनों रिकार्डों को उसने भंग किया। उसके ठीक 10.60 से० पीछे मणिपुरी युवक उसका सहचर - आर. के. रोजन रहा तथा तृतीय स्थान पर 2 मि. 22.44 से० में पार करनेवाला सीमा सुरक्षा बल का सुरिन्दर टोकस रहा।

पहले स्वर्ण पदक के पाने के कुछ ही मिनटों के बाद, सी. सु. बल के धरमपाल टोकस वाला 200 मी० फ्रीस्टाइल में 2 मि० 10 से० के रिकार्ड को भंग करने के लिये खजान फिर आ डटा। उसने उस रिकार्ड को 2.15 से० सुधारा। उसके चचेरे भाई मोहिन्दर कुमार टोकस (के. रि. पु. बल) और प्रवीण टोकस (सी. सु. बल) ने क्रमशः 2 मि० 12.27 से० और 2 मि० 14.16 से० में पार कर, द्वितीय तथा तृतीय स्थान पाये।



सर्व श्रेष्ठ तैराक की ट्राफी पाता खजान सिंह

खजान को तीसरा स्वर्ण पदक दूसरे दिन तब मिला, जब उसने 1,500 मी० फ्रीस्टाइल कष्टदाई स्पर्धा को 17 मि० 35.78 से० में पूरा किया; जबकि पुलिस और राष्ट्रीय रिकार्ड क्रमशः 18 मि० 02. 60 से० तथा 18 मि० 15.90 से० थे। घोर संघर्ष शुरू-शुरू में करने के बाद, राष्ट्रीय तैराक मोहिन्दर कुमार ने 18 मि० 24.00 से० में पूरा कर आखिर को द्वितीय स्थान पाया। सी. सु. बल के सुरिन्दर टोकस, 19 मि० 02.64 से० का समय लेकर, तृतीय स्थान पर रहा।

कितनी आश्चर्यजनक सहनशीलता तथा ऊर्जस्विता खजान में है कि उस श्रमसाध्य स्पर्धा के कुछ ही देर बाद, 200 मी० व्यक्तिगत मेडले को 2 मि० 20.43 से० में स्वर्ण

पदक जीतने को, वह फिर तरणताल पर आ गया। सी. सु. बल के दोनों, प्रवीण और मोहिन्दर, द्वितीय तथा तृतीय स्थान पर क्रमशः रहे।

400 मी० व्यक्तिगत मेडले में, खजान सिंह ने 5 मि० 11.10 से० में तैर कर स्वर्णपदक जीता और प्रवीण तथा मोहिन्दर उसी प्रकार द्वितीय तथा तृतीय स्थान पर आये। 200 मी० बैक स्टोक में, सी. सु. बल के बालकिशन टोकस द्वारा दो वर्ष पूर्व स्थापित 2 मि० 27.07 से० वाला रिकार्ड चर-मरा गया, जब खजान सिंह ने उसे 2 मि० 20.87 से० में पूरा किया। उदीयमान अजीत सांगवाल (के. रि. पु. बल) ने लिथड़ते हुये 2 मि० 31.50 से० पूरा कर द्वितीय स्थान पाया और मोहिन्दर (सी. सु. बल) ने 2 मि० 33.32 से० में पूरा किया।

प्रतियोगिता की समाप्ति से एक दिन पूर्व, चार नये कीर्तिमान स्थापित हुये, जिनमें दो का श्रेय खजान सिंह को जाता है। 100 मी० बटर पलाई को 57.55 से० में पूरा कर, उसने अपने ही विगत पुलिस रिकार्ड (59.60 से०) तथा राष्ट्रीय रिकार्ड (59.70 से०) को भंग किया। आस्ट्रेलिया में हुई एक प्रतियोगिता में 57.03 से० वाले से, वह इसमें अलबत्ता .47 से० पीछे रह गया। आर. के. रोजन (केरि०पु० बल) और सुरिन्दर सिंह (सी०सु० बल) क्रमशः मि० 03.12 से० तथा 1 मि० 04.55 से० लेकर द्वितीय एवं तृतीय रहे।

400 मी० फ्रीस्टाइल में, खजान सिंह ने 4 मि० 26.02 से० में तैरकर, 4 मि० 33.30 से० वाले अपने पिछले कीर्तिमान तथा धरमपाल टोकस के 4 मि० 31 से० वाले राष्ट्रीय रिकार्ड का सफाया कर दिया। मोहिन्दर और सुरिन्दर टोकस को क्रमशः द्वितीय तथा तृतीय स्थानों पर सन्तोष करना पड़ा।



ब्रेस्ट स्ट्रोक का सम्राट एस. राधाकृष्णन

भारतीय तैराकों का खजाना, जैसा कि उसका नाम है, यहीं नहीं रुका। (सिंह जैसा कि उसके नाम का अन्तिम पद है) वह असन्तुष्ट शेर की भाँति गर्जना करता हुआ, प्रतियोगिता के समापन दिवस पर, दो स्वर्ण पदकों को लेने के लिये झपटा और सफल हुआ। 100 मी० बैक स्टोक को, 1 मि० 07.1। से० में तैर कर और 100 मी० फ्रीस्टाइल को 57.69 से पूरा कर, उसने दो स्वर्ण पदक पाये। जबकि 100 मी० बैक स्टोक में अजीत सांगवान और सुरेन्द्र टोकस ने क्रमशः रजत और कांस्य पदक पाये; 100 मी० फ्रीस्टाइल में के० सोमाशेखरन (के०रि०पू० बल) और चंपा लाल (मध्य प्रदेश) को क्रमशः द्वितीय तथा तृतीय स्थान मिले।

के०रि०पू० बल के सब इन्स्पेक्टर एस. राधाकृष्णन ने ब्रेस्ट स्टोक की अपनी प्रिय स्पर्धा में दो स्वर्ण पदक जीते। 100 मी० को, उसने 10.70 से० में पूरा किया, जब कि 200 मी० में उसने 2 मि० 34.07 से० में तैर कर, अपना ही पिछला कीर्तिमान (2 मि० 34.70 से०) सुधारा। इस प्रक्रिया में, उसने चार वर्ष पुराना थोबासिंह वाला 2 मि० 37 से० वाले राष्ट्रीय रिकार्ड को भंग किया।

खजान सिंह के सहयोग से, के०रि०पू० बल के युवा तैराकों ने 4X100 मी० फ्रीस्टाइल रिले को 3 मि० 58.90 से० में पूरा कर, अपने ही 4 मि० 01.20 से० वाले कीर्तिमान का सफाया कर दिया। सी० सु० बल (4 मि० 11.44 से०) तथा भा० ति० सी० पुलिस (4 मि० 13.50 से०) क्रमशः द्वितीय तथा तृतीय स्थान पाये।

14X200 मी० फ्रीस्टाइल रिले को मोहिन्दर टोकस, खजान सिंह, आर० के० रोजन तथा पी० पद्मनाभन वाले के०रि०पू० बल के चौगड्डे ने 9 मि० 08.30 से० में पूरा कर स्वर्ण पदक जीता, जब कि सी०सु० बल और भारतीय तिब्बत सीमा पुलिस ने क्रमशः द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाये।

4X100 मी० मेडले रिले की अन्तिम स्पर्धा को, खजान, राधाकृष्णन, अजीत सांगवाल और के० सोमाशेखरन वाले के०रि०पू० बल के चौगड्डे ने 4 मि० 20.75 से० के रिकार्ड समय में पूरा किया। उसका अपना ही पिछला रिकार्ड 4 मि 24 से० का था। सी०सु०बल और भा० ति० सी० पुलिस को बहुत पीछे लिथड़ते हुए द्वितीय तथा तृतीय स्थान मिले।

हाईबोर्ड गोताखोरी में, के०रि०पू० बल के 26 वर्षीय हेड कान्स्टेबल बी० एस० रविशेखर ने 465.55 अंक अर्जित कर, अपने पिछले 452.40 अंक वाले रिकार्ड को अत्यधिक सुधारा। द्वितीय स्थान पर आने वाले उसका ही साथी पवित्रो शर्मा 394.70 अंकों पर पीछे रह गया और उत्तर प्रदेश का ईश्वर देव नारायण को 326 अंक मिले।

एम० एस० शेखावत की अनुपस्थिति में (जो माउंट आबू में पदोन्नति कोर्स कर रहा था) दिल्ली के रमेश चन्द को स्वर्ण पदक जीतने में कोई कठिनाई नहीं हुयी। उसने बहरहाल, एम० एस० शेखावत के 479.73 अंकों वाले प्रतियोगिता रिकार्ड के मुकाबले में केवल 396.90 अंक ही बटोरे। छः वर्षों से पुलिस गोताखोरी के चैम्पियन एम० एस० शेखावत का 713.50 अंकों वाला राष्ट्रीय रिकार्ड है।

वाटरपोलो के रोचक फाइनल में, के०रि०पू० बल ने भा० ति० सी० पुलिस को 8-6

गोलों से हराया। विजेता टोम को ओर से, सोमाशेखरन, लोचनन और ओम प्रकाश ने दो-दो गोल किये, जब कि एलोसियस और गोपाकुमार को अन्य दो गोल करने का श्रेय मिला। भा०ति०सी० पुलिस की ओर से आशिष चक्रवर्ती ने 3, के. बी. साहा ने 2 और शेर सिंह ने 1 गोल किया।

आकाशवाणी के इतिहास में पहली बार वाटरपोलो का आँखों देखा हाल, प्रख्यात खेल समीक्षक नोवी कपाडिया और नीरज राजवंशी द्वारा प्रसारित किया गया।

293 प्राप्त अंकों के आधार पर, के० रि० पु० बल लगातार दसवें वर्ष टीम चैम्पियन रहा, जब कि सी०सु० बल (150 अंक) द्वितीय तथा भा०ति०सी०पु० तृतीय रही।

इस पाँच दिवसीय प्रतियोगिता में 11 राज्य पुलिस और 4 केन्द्रीय पुलिस संगठनों (के०रि०पु०बल, सी०सु०बल, भा०ति०सी० पुलिस और के०औ०सु०बल) के 413 तैराकों में, खजान सिंह सर्वश्रेष्ठ तैराक घोषित हुआ।

श्री गुलाम नबी आजाद, गृह राज्यमंत्री ने पुरस्कार वितरित किये।
परिणाम इस प्रकार रहे :

तैराकी

100 मी० बटरफ्लाई : खजान सिंह (के०रि०पु० बल) 0:57.55 (नया पुलिस रिकार्ड) I; आर० के० रोजन (के० रि० पु० बल) 1 : 03.12 II और सुरिन्दर सिंह (सी० सु० बल) 1 : 04.55 III.

200 मी० बटर फ्लाई : खजान सिंह (के० रि० पु० बल) 2:08.34 (नया पुलिस रिकार्ड) I; आर० के० रोजन (के. रि० पु० बल) 2:18.94 II और सुरिन्दर टोकस (सी० सु० बल) 2:22.44 III.

100 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक : एस० राधा-कृष्णन (के० रि० पु० बल) 1:10.70 I; राजेश कुमार (सी० सु० बल) 1:15.82 II और विनोद सिंह (के० रि० पु० बल) 1:16.78 III.

200 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक : एस० राधा कृष्णन (के० रि० पु०) 2:34.07 (नया पुलिस रिकार्ड) I; राजेश शर्मा (सी० सु० बल) 2:42.80 II और अनिल कुमार (भा० ति० सी० पुलिस) 2:46.74 III.

200 मी० फ्री स्टाइल : खजान सिंह (के० रि० पु० बल) 2:07.85 (नया पुलिस रिकार्ड) I; मोहिन्दर कुमार (के० रि० पु० बल) 2:12.27 II और प्रवीण टोकस (सी० सु० बल) 2:14.16 III.

400 मी० फ्री स्टाइल : खजान सिंह (के० रि० पू० बल) 4:26.02 (नया पुलिस रिकार्ड) I; मोहिन्दर कुमार (के० रि० पु० बल) 4:39.75 II और सुरिन्दर टोकस (सी० सु० बल) 4:40.12 III.

1,500 मी० फ्री स्टाइल : खजान सिंह (के० रि० पु० बल) 17:35.78 (नया पुलिस

रिकार्ड) I; मोहिन्दर कुमार (के० रि० पु० बल) 18:24.04 II और सुरेन्दर टोकस (सी० सु० बल) 19:02.64 III.

200 मी० बैकस्ट्रोक : खजान सिंह (के० रि० पु० बल) 2:20.87 (नया पुलिस रिकार्ड) I; अजीत सांगवाल (के० रि० पु० बल) 2:31.50 II और बिजेन्दर टोकस (सी० सु० बल) 2:33.32 III.

200 मी० व्यक्तिगत मेडले : खजान सिंह (के० रि० पु० बल) 2:20.43 I; प्रवीण टोकस (सी० सु० बल) 2:24.57 II और बिजेन्दर टोकस (सी० सु० बल) 2:29.59 III.

400 मी० व्यक्तिगत मेडले : खजान सिंह (के० रि० पु० बल) 5:11.10 I; प्रवीण टोकस (सी० सु० बल) 5:13.43 II और मोहिन्दर कुमार (के० रि० पु० बल) 5:18.30 III.

4X100 मी० फ्रीस्टाइल रिले : के० रि० पु० बल 3:58.90 (नया पुलिस रिकार्ड) I; सी० सु० बल 4:11.44 II और भा० ति० सी० पु० 4:13.50 III.

4X200 मी० फ्रीस्टाइल रिले : के० रि० पु० बल 9:08.03 I; सी० सु० बल 9:15.76 II और भा० ति० सी० पुलिस 9:26.50 III.

गोताखोरी

हाईबोर्ड गोताखोरी : बी० एस० रवि-शेखर (के० रि० पु० बल) 465.55 अंक I; पवित्रो शर्मा (के० रि० पु० बल) 394.70 अंक II तथा ईश्वर देओ नारायण (उ० प्र०) 326.00 अंक III.

स्प्रिंग बोर्ड गोताखोरी: रमेश चन्द (दिल्ली) 396:90 अंक I; बी० डी० नाथ (भा० ति० सी० पु०) 346:70 अंक II और होशियार सिंह (सी० सु० बल) 341. 35 अंक III.

वाटर पोलो

के० रि० पु० बल I; भा० ति० सी० पुलिस II और सी० सु० बल III.

क्रासकण्ट्री दौड़

सी० सु० बल I; के० रि० पु० बल II और उ० प्र० III.



प्रशिक्षण शिविर म जूडो खिलाड़ी

सियोल में होने वाले एशियाई खेलों की तैयारी के लिये, के० रि० पु० बल के पाँच जूडो खिलाड़ी नेहरू स्टेडियम, नई दिल्ली में प्रशिक्षण पा रहे थे। ये हैं वे पाँचों—हेड कोन्स्टेबल राम निवास, हे० का० राधेश्याम, हे०का० बन्नूसिंह, ना० कंवरलाल और ला० ना० वेद प्रकाश। 30 जून से 29 जुलाई 1986 तक आयोजित यह प्रशिक्षण, एक निपुण प्रसिद्ध जापानी प्रशिक्षक की देखरेख में सम्पन्न हुआ।

पंजाब में नया सेक्टर

पंजाब में उत्तम कार्यकुशलता और कारवाइयों की अच्छी देखरेख के लिये, चण्डीगढ़ में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का नया सेक्टर स्थापित हुआ है।

यह सेक्टर V होगा और इसके अध्यक्ष एक पुलिस महानिरीक्षक होंगे।

इस सेक्टर के गठन से पहले, पंजाब पुलिस महानिरीक्षक सेक्टर III के नियन्त्रण में था। पंजाब के अतिरिक्त, इस सेक्टर में चण्डीगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, तथा जम्मू कश्मीर होंगे।

चण्डीगढ़ और अमृतसर में एक-एक पुलिस उपमहानिरीक्षक उक्त पुलिस महानिरीक्षक की सहायता करेंगे। चण्डीगढ़ में पदोन्नति पाकर, श्री सी० एम० पाण्डेय पुलिस उप महानिरीक्षक और पंजाब कॉर्डर से पदोन्नति तथा डेपूटेशन पर आकर, श्री एस० एस० विर्क अमृतसर के पुलिस उप महानिरीक्षक नियुक्त किये गये हैं।

इंगलैंड की शस्त्र प्रदर्शिनी को देखने के लिये महानिदेशक की यात्रा

अल्डरशाट, लंदन में 22 से 27 जून 1986 तक आयोजित ब्रिटिश सेना प्रदर्शिनी देखने के लिये श्री एस. डी. पाण्डेय, महानिदेशक, के०रि०पु० बल, महानिदेशक भा०ति०सी० पुलिस के साथ गये।

इस यात्रा का उद्देश्य था शस्त्रों तथा अन्य उपकरणों की इन उपयुक्त वस्तुओं का चयन करना, जो इस देश के पुलिस बलों के प्रयोग में लाभदायक हों।

के० रि० पु० बल के वरिष्ठ अधिकारियों को उस प्रदर्शिनी के विषय में बताते हुये, श्री एस. डी. पाण्डेय ने कहा कि अल्डरशाट में शस्त्रों और उपकरणों की प्रदर्शिनी प्रत्येक दो वर्ष बाद लगती है। यद्यपि अधिकांश उपकरण सेना के लिये बने थे, तब भी उस प्रदर्शिनी में पुलिस के प्रयोग के लिये पर्याप्त मात्रा में वस्तुयें थीं।

सियोल में हमारे 6 खिलाड़ी

सियोल में सितम्बर 1986 में आयोजित 10वें एशियाई खेलों में भारत की ओर से के०रि०पु० बल के छह खिलाड़ी भाग लेंगे।

जिम्नास्टों का नेतृत्व बलराम शील करेगा, जबकि तैराकी में धुरन्धर तैराक खजान सिंह से बड़ी आशा है। बैक स्ट्रोक का सितारा एस० राधाकृष्णन मेडले रिले के चौगुड़े में सम्मिलित है।

घन फेंक की स्पर्धा में, के०रि०पु० बल के पुलिस उपाधीक्षक रघुबीर सिंह बल को चुना गया है। वह धन फेंक की स्पर्धा में भाग लेंगे।

इस वर्ष प्रथमबार एशियाई खेलों में सम्मिलित होने जा रही जूडो स्पर्धा में, इस बल के दो हे०का० राधेश्याम और बन्नू सिंह भाग लेंगे। जबकि राधेश्याम 76 भार के वर्ग में जूझेगा, बन्नू सिंह अत्यधिक बोझिल भार तथा खुले वर्गों में मुकाबला करेगा।

ला ल सु म न

ले०—स० उ० नि० देशराज, I सिगनल बटालियन

जब भी इन लाल सुमनों को देखता हूँ; तब बस देखता ही रह जाता हूँ। देखूँ भी क्या न, मेरी जगह आप होते, तब शायद आप भी ऐसा ही करते।

वैसे तो पूरी बगिया को मैंने खुद अपने हाथों से सजाया है, परन्तु वरवश निगाहें इन पर ही क्यों जाकर टिकती हैं ? इस सबके पीछे भी एक रहस्य है।

न जाने क्या सोचकर मैंने उस दिन गुलाब की टहनी के साथ ही, एक कोमल लता को लगा दिया था ? मैं इतना अवश्य जानता था कि दोनों के सुमन सुन्दर होंगे, लाल होंगे।

दोनों साथ-साथ बढ़ने लगे, यह पता नहीं कि वे प्रतिस्पर्धा में बढ़ रहे थे या जिन्दगी में साथ जीने के लिये। बस, दोनों अपनी जगह अल्हड़ जवानी में बढ़े जा रहे थे कि एक दिन अचानक.....

वह दिन भुलाये नहीं भूलता है। बरसात के शुरू-शुरू के दिन थे। एक तूफान सा आ गया—उस तूफान से यह बगिया भी अछूती नहीं थी। पर, सबसे अधिक प्रभाव उन दोनों पर पड़ता दीख रहा था। पहली-पहली बरसात थी दोनों के लिये। यह ऐसे

नाजुक क्षणों का दौर था, जिसमें दोनों-दोनेया बदल जाती हैं।

इधर गुलाब, तब उधर यह कोमल लता। दोनों लड़खड़ाये जा रहे थे। केले और बेर का सा संयोग था ? ‘क्या किया जाये ?’ का एक तूफान मेरे मन में भी जोर मार रहा था। दोनों एक-दूसरे का सहारा ढूँढ़ते, एक दूसरे की ओर बढ़ते, झिझकते-सिहरते। पर पवन के तेज झोंके से मिलते, तुरन्त किसी वेदना से अलग हो जाते। मन में आया कि दोनों को क्यों नहीं एक दूसरे का सहारा बना दिया जाये? कैसे अच्छा होगा जब ये दोनों एक दूसरे की बाहुपाश में अनुबद्ध होंगे। क्या सचमुच दोनों सुन्दर लगेंगे ? क्या ये परस्पर प्रसन्न होंगे? नहीं, नहीं, ...यह नहीं हो सकता। कहाँ तो मृदुल लता और कहाँ कंटकाकीर्ण गुलाब !

मैं इसी उधेड़बुन में खो रहा था। इसी बीच तूफान जोर पकड़ गया। चतुर्दिक् सर सर वायु पूर्ण प्रभंजन वन सायं सायं चीख रही थी। कितने ही वृक्षों को समूल उखाड़े डाल रही थी। पर अद्भुत, आश्चर्य ? मेरे मन का तूभान शान्त हो चुका था। मेरी समस्या हल हो चुकी थी। जो मैं चाहता था, वही हो गया था। कैसा सुखद विस्मय था ? दोनों एक दूसरे की गलबहियों में थे। अब तूफान उनका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता था।

तदुपरान्त तो, नहीं विदित कितने तूफान उन दोनों ने सहे, किन्तु कोई शक्ति उन्हें विलग नहीं कर सकी।

अब तो उन दोनों में लाल लाल सुमनों की बहार है। कितने सुन्दर हैं; कैसे प्यारे हैं; उनकी लालिमा कितनी मनमोहक है। सब कुछ वर्णनातीत है। आप भी देखेंगे तो मनोमुग्ध रह जायेंगे। पहले तो सुमन जो हुये, फिर है उनमें लालिमा—अनुरक्ति ! मैं क्या? कबीरदास तक मंत्र मुग्ध रह गये थे ऐसी अनुपम अरुणिमा को लख कर। “लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल। “लाली मेरे लाल की, जित देखूं तित लाल।”

के०रि०पु० बल द्वारा इनामी मनबीर सिंह गिरफ्तार

जालंधर छावनी में 8 अगस्त 1986 को तथाकथित ‘खालिस्तान कमांडो फोर्स’ के सेनापति मनबीर सिंह चहेड़ू और ‘खालिस्तान के स्वयंभू प्रतिरक्षामंत्री सेवा, निवृत्त मेजर बलदेव सिंह धुम्मन को 47 बटालियन, के०रि०पु० बल के जवानों ने पंजाब पुलिस के सहयोग से बन्दी बनाया।

कुख्यात आतंकवादी मनबीर सिंह, मेजर धुम्मन के बूतामंडी स्थित घर में छिपा हुआ था। जब के०रि०पु० बल के जवान पंजाब पुलिस के साथ वहाँ पहुँचे, तब वह

मेजर चौखने लगा कि वह एक बड़ा आधिकारी है। यादे किसी ने कोई गड़बड़ी की, तब वह एक-एक कर के सब को देख लेगा; किन्तु अन्य किसी ने पुलिस-कार्रवाई का विरोध नहीं किया।

मनबीर सिंह ने कितने ही निर्दोष लोगों की हत्या की है। उसे जीवित या मृत पकड़ने पर, एक लाख रुपये का इनाम था। पिछले अप्रैल में, जालंधर न्यायालय से आठ पुलिस कर्मियों की हत्या कर, वह भाग निकला था। उसने नकोदर नगर में बारह लोगों को गोलियों से भून डाला था। कपूरथला गोली काण्ड में भी, उसकी तलाश थी, जिसमें शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति के कार्यकारी अध्यक्ष काबुल सिंह बुरी भाँति घायल हुये थे, जब कि उनके रक्षक व चालक मारे गये थे।

मनबीर के आधा दर्जन ठिकानों पर छापे मार कर, एक हल्की मशीनगन के सहित, नौ आग्नेयास्त्र तथा हजार से अधिक कारतूसें बरामद की गयीं।

राजा रणजीत सिंह के खौफनाक सेनापति 'हरि सिंह नलवा' के नाम पर, मनबीर स्वयं को 'जनरल हरि सिंह' कहलाना पसन्द करता है। पंजाब में बड़े-बड़े आतंकवादियों के चार गिरोहों में से, एक का नेता यही मनबीर सिंह है।

मनबीर सिंह और बलदेव घुम्नन के साथ, 47 बटालियन के जवानों ने तीन अन्य आतंकवादियों को भी बन्दी बनाया।

श्री सुरजीत सिंह बरनाला, मुख्यमंत्री पंजाब ने इसे निश्चय ही एक प्रशंसनीय कार्य बताया है।

के० रि० पु० के जवान पुरस्कृत

अमृतसर में 9 जुलाई को आयोजित एक समारोह में श्री जे. एफ. रिबेरो, महानिदेशक पंजाब पुलिस के साथ, श्री एस. डी. पाण्डेय महानिदेशक ने इनामी आतंकवादी अवतार सिंह कार्यकारी अध्यक्ष बब्बर खालसा को बन्दी बनाने और दलबीर सिंह उर्फ बिल्ला तथा रेशम सिंह को मार डालने के उपलक्ष्य में के० रि० पु० बल और पंजाब पुलिस के जवानों को प्रशंसनीय कार्य के लिये नकद पुरस्कार और प्रमाण पत्र प्रदान किये। के० रि० पु० बल के नौ जवानों को दलवीर सिंह बिल्ला और रेशम सिंह को मौत के घाट उतारने में, 50,000 रु० प्रदान किये गये।

महानिदेशक पंजाब, मनबीर और घुम्नन को पकड़ने वाले 47 बटालियन के जवानों से मिले और उन्हें 8,800 रु० के पुरस्कार देने की घोषणा की।



47 बटालियन के जवानों को बधाई देते हुए पंजाब के पुलिस महानिदेशक श्री जे० एफ० रिबेरो



‘बिल्ला’ से मुठभेड़ करने वाले जवानों के साथ श्री ज. एन. माथुर, कमांडेंट, 48 बटालियन

के० रि० पु० बल द्वारा भयंकर ‘बिल्ला’ का वध

अमृतसर में तरन तारन पर स्थापित 48 बटालियन के मुख्यालय पर 4 जुलाई 1986 के अपराह्न यह सूचना मिलते ही कि शाह बागपूर गाँव में कुछ निर्दोष लोगों की हत्या कर आतंकवादियों की एक सशस्त्र टुकड़ी सफेद फियट कार में भागी है, सभी चौकियों और गश्ती-जत्थों को उनको पकड़ने के लिये सतर्क कर दिया गया।

चिलचिलाती धूप में आध घंटे से अधिक पहरा देने के बाद, 48 बटालियन की ‘सी’ कम्पनी के सब-इन्स्पेक्टर साउलसिंह के नेतृत्व में 8 जवानों का पैदल सेक्शन कुल्लावाला गाँव के पास आराम करने रुका ही था कि उसे यह सूचना मिली कि उस गाँव के हकीम हरभजनसिंह के घर कुछ आतंकवादी आये हैं। उसे यह भी सूचना मिल गई कि आतंकवादी सफेद फियट कार में आये हैं और वे शस्त्रों से अत्यन्त सुसज्जित हैं।

सब-इन्स्पेक्टर सिंह तुरन्त ही शान्त भाव से उस घर की ओर गया और सेक्शन से उसकी घेराबन्दी करा दी। आतंकवादियों से आत्मसमर्पण के लिये उसके अनुरोध पर, एक आतंकवादी ने एक खिड़की से उस पर गोली चलायी और वह बराबर गोलियाँ चलाता रहा, जब तक कि दूसरे आतंकवादी घर की छत पर नहीं आ गये। के० रि० पु० बल के जवान जवाबी फायर करते रहे।

क्योंकि आतंकवादी छत के लाभदायक ऊँचे स्थान से गोली चालन कर रहे थे,

के० रि० पु० बल के जवानों को कारगर कारेवाई करने में काठेनाई हो रही थी। सो, स०इ० साउलसिंह और का० ओ. एन. राजन पास के एक घर की छत पर चढ़ गये और आतंकवादियों पर फायर किये। लगभग पांच मिनट की गोलाबारी में, एक के गोली लगी बताई जाती है और वे सब सीढ़ी से नीचे उतर गये, जहाँ के० रि० पु० बल के जवानों ने उन पर गोलियाँ दागीं। महासंकट में खुद को पाकर, आतंकवादी कार की ओर भागे तथा कार में से गोली चलाते हुये, भागने का यत्न करने लगे।

छत पर चढ़े सब-इन्स्पेक्टर और सिपाही ने कार पर फायर किया। सब-इन्स्पेक्टर के आदेश पर, का० बजरंगी पाण्डेय ने हल्की मशीन गन से कार पर गोलियाँ चलायीं। गोलियों की बौछार से बुरी भाँति छलनी हुई कार, सड़क से लड़खड़ा कर उस घर से लगभग 80 गज दूरी पर एक दीवार से जा टकराई, जहाँ आतंकवादियों ने शरण ली थी।

कार के टकराने पर सहसा रुकते ही, आतंकवादी बाहर निकले और बच भागने के लिये दीवार कूद गये।

कार में मृत पाये गये दो आतंकवादियों में से एक पाया गया खतरनाक हथियार दलबीर सिंह यशपाल उर्फ बिल्ला। विभिन्न थानों में दर्ज 35 मामलों में उसकी तलाश थी। जिसमें उसने 100 से अधिक मनुष्यों के प्राण लिये थे। उसके सिर पर 50,000 रु० का पुरस्कार था। दूसरा मृतक बिल्ला का साथी रेशमसिंह पाया गया।

कार की खोज में, भारी मात्रा में गोला बारूद प्राप्त हुआ—एक .303 रायफल मार्क-4; एक स्टेगनगन 9 मि० मी०; एक कारबाइन (9 मि० मी०); एक रिवाल्वर (38 बोल्ट); 4 से० डिटोनेटर के साथ, एक गोला एच०ई० 36; एक मैगजीन कारबाइन; 3 मैगजीन स्टेन (9 मि० मी०); चार 12 बोर के कारतूस; तेरह .455 राउन्ड्स; बारह 9 मि० मी० के राउन्ड्स सोलह चक्रगोले (38); तीन राउन्ड्स (38); पैसठ राउन्ड्स (303); सोलह चार्जर क्लिप; सोलह छूटे खोल (303); ग्यारह छूटे खोल (9 मि० मी०); इकसठ छूटे खोल (.30); एक टेप रिकार्डर सेनियो (जापानी); पाँच कैसेट; सौ सौ रुपयों की 28,000 रु० की नकद राशि।

के० रि० पु० बल के इन जवानों की शूर वीरता ने, पंजाब में आतंकवादियों की गतिविधियों को भारी धक्का पहुँचाने के साथ-साथ, तरनतारन के निवासियों में विश्वास की भावना भी पैदा की।

श्री एस. डी. पाण्डेय, महानिदेशक, के० रि० पु० बल ने उस सेक्शन के जवानों की वीरता की प्रशंसा की है।

सूक्ति सुधा

एक दूसरे की सर्वथा रक्षा करना

मनुष्यों का प्रथम कर्तव्य है।

ऋग्वेद

जिस आयु का एक क्षण भी संसार के
सब रत्नों से नहीं पाया जा सकता, उस
आयु को यदि कोई व्यर्थ खोता है, तब वह
बड़ा प्रमाद है।

श्रीमद् भागवत

मुख्य सम्पादक : एच. एस. सेठी।

सम्पादक : एम. पी. नथैनियल तथा जे. एस. शर्मा।

मुद्रक : सी. आर. पी. एफ. प्रेस झड़ौदा कलां नई दिल्ली-110072

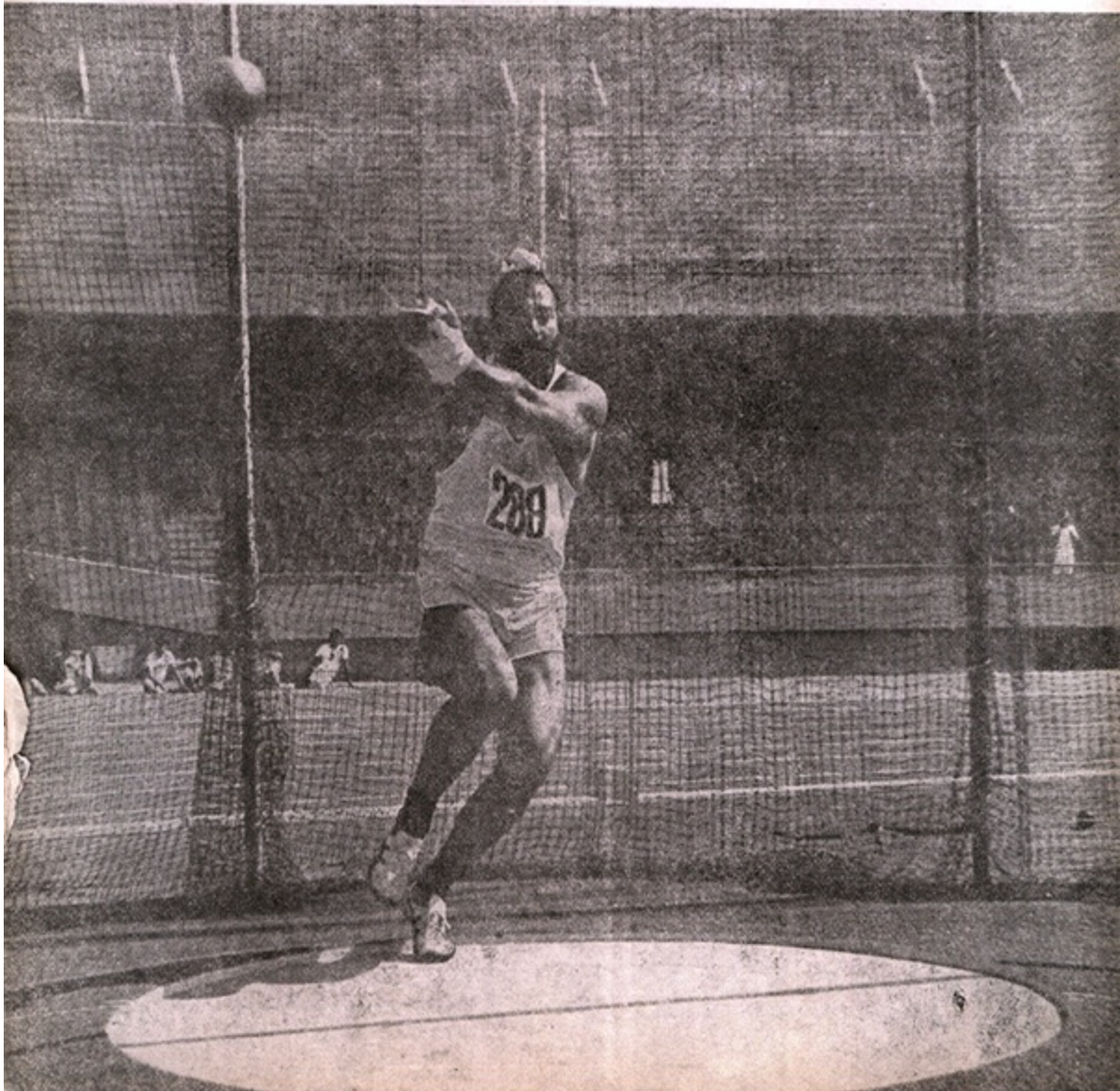
मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक, के०रि०पु० बल, ब्लॉक-1, सी. जी. ओ.
कम्पलेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से एच. एस. सेठी।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की मासिक पत्रिका

सी आर पी एफ समाचार

खण्ड I अंक 3

[30 सितम्बर, 1986] [8 अद्विन, 1908]



अर्जुन पुरस्कार विजेता रघुबीर सिंह बल

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के 33-वर्षीय पुलिस उपाधीक्षक रघुबीर सिंह, बल उन 19 भारतीय खिलाड़ियों में से हैं, जिन्हें 1985 वर्ष के लिए 10 सितम्बर 1986 को अर्जुन पुरस्कार प्रदान करने की घोषणा की गई है। घनफेंक में वह एशियाई चैम्पियन हैं तथा इस स्पर्द्धा में 1975 से, वह राष्ट्रीय चैम्पियन रहे हैं। उनका 66.74 मी० की दूरी का राष्ट्रीय रिकार्ड है।

पंजाब के अमृतसर जिले के छज्जलवादी ग्राम में वह 26 जनवरी 1953 में उत्पन्न हुये थे। वह 6 फीट 4 इंच के लम्बे चौड़े जवान हैं और उनका भार लगभग 100 कि० ग्राम है।

बास्केट बाल के अच्छे खिलाड़ी होने के नाते, जून 1971 में उन्हें सब इन्स्पेक्टर के पद पर इस बल में भर्ती किया गया था। पर शीघ्र ही उन्होंने जान लिया कि उनका वास्तविक क्षेत्र दौड़कूद (एथ्लेटिक्स) और मुख्यकर घनफेंक तथा चक्का फेंक है, जिसमें उन्होंने क्या देश और क्या विदेश में उत्तम प्रदर्शन दिखाये हैं और कितने ही पदक प्राप्त कर, के०रि०पु० बल तथा भारत का नाम ऊंचा किया है।

1975 में सियोल में आयोजित द्वितीय एशियाई अमेच्योर (शौकीन) दौड़कूद चैम्पियनशिप में, घन फेंक के अपने प्रथम प्रयास में उन्होंने कांस्यपदक पाया।

मनीला में आमंत्रण टैक और फील्ड चैम्पियनशिप में, उन्होंने घनफेंक में स्वर्ण तथा चक्का फेंक में कांस्यपदक पाया। उसी वर्ष, अजमेर में 14वीं अखिल भारतीय खुली दौड़ कूद प्रतियोगिता में, उन्होंने घनफेंक में स्वर्ण और चक्का फेंक में रजत पदक पाये।

फरवरी 1976 में पटना में खेली गयी 25वीं अखिल भारतीय पुलिस दौड़कूद प्रतियोगिता में, उन्होंने स्वर्णपदक चक्का फेंक में पाया। घन तथा चक्का फेंकों में उत्तम प्रदर्शन के लिये, उनको सब-इन्सपेक्टर से इन्स्पेक्टर बना दिया गया।

तेहरान में जून 1976 में खेली गयी अन्तर्राष्ट्रीय दौड़कूद प्रतियोगिता में, भारत की ओर से भाग लेते हुए, रघुबीरसिंह बल ने घन फेंक में प्रथम स्थान तथा चक्का फेंक में, द्वितीय स्थान पाया। भारत के अतिरिक्त, इस प्रतियोगिता में, ईरान, ईराक और कुवैत के खिलाड़ियों ने भाग लिया था।

1976 के ही नवम्बर मास में लाहौर में खेली गई कायदे आजम शताब्दि समारोह अन्तर्राष्ट्रीय आमंत्रण दौड़कूद प्रतियोगिता में, उन्होंने घनफेंक में पुनः स्वर्णपदक पाया। इसी प्रकार, 1977 में सिंगापुर में आयोजित ऐसी अन्तर्राष्ट्रीय आमंत्रण दौड़कूद प्रतियोगिता में, प्रथम स्थान पर आये।

कुवैत में तीसरी, चौथी तथा पांचवीं एशियाई टैक एंड फील्ड (क्षेत्रपथ) प्रतियोगिताओं में, उन्हें कांस्य पदक पर सन्तोष करना पड़ा, जबकि जकार्ता में खेली

गयी छठीं प्रतियोगिता में, वह फिर उभरे और स्वर्ण पदक पाने में सफल हुए।

1978 के सितम्बर में सिंगापुर में आयोजित 40वीं एशियाई दौड़कूद चैम्पियनशिप में, उनको घनफेंक में रजत पदक मिला। उसी वर्ष बैंकाक में तथा 1982 में खेले गये एशियाई खेलों में, उन्होंने भारत की ओर से भाग लिया।

भारत में तो 1975 से वह घन फेंक में राष्ट्रीय चैम्पियन हैं और अपने उत्तम खेल प्रदर्शन के लिये, आज वह पुलिस उपाधीक्षक के राजपत्रित पद को सुशोभित कर रहे हैं।

कार्रवाई में मरने वालों के परिवारों को उदार पेंशन

समाज-विरोधी तत्वों, उग्रवादियों, राजद्रोहियों और डाकुओं के विरुद्ध कार्रवाई में मृत्युपाने वाले सरकारी कर्मचारियों के परिवारों को पेन्शन के लाभ उदार किये गये हैं।

700 रु० से कम मौलिक वेतन पाने वाले सरकारी कर्मचारियों की विधवायें, उसी वेतन के बराबर पेंशन पाने की अधिकारिणी होंगी, जो वे मृत्यु के समय पा रहे होंगे।

700 रु० से अधिक वेतन पाने वाले सरकारी कर्मचारी की विधवा, मृतक के अन्तिम वेतन के बराबर पेंशन अगले सात वर्ष तक या जब तक वह कर्मचारी सेवा-निवृत्त होता, इन में से जो कोई भी बाद में आवे, पाती रहेगी। तदुपरान्त, मृतक की सेवा-निवृत्ति की आयु तक गणित की गई अन्तिम उपलब्धियों के आधार पर, उसकी विधवा पेंशन पाने की अधिकारिणी होगी। साथ ही 100 रु० प्रति 23 वर्ष तक की सन्तान के हिसाब से सन्तान भत्ते के रूप में दिये जायेंगे, बशर्ते कि पेंशन और सन्तानभत्ता कुल मिलाकर, मृत सरकारी कर्मचारी के अन्तिम वेतन से अधिक नहीं हो। ये लाभ सभी मामलों में अपने आप लागू नहीं होकर, गुणों के आधार पर प्रशासनिक मंत्रालय द्वारा निश्चित किये जायेंगे।



सबसे पहले आत्मसुरक्षा

दसवें एशियाई खेलों में, भारतीय तैराकी का कीर्ति-पुंज—खजान सिंह

लेखक-एम० पी० नथैनियल

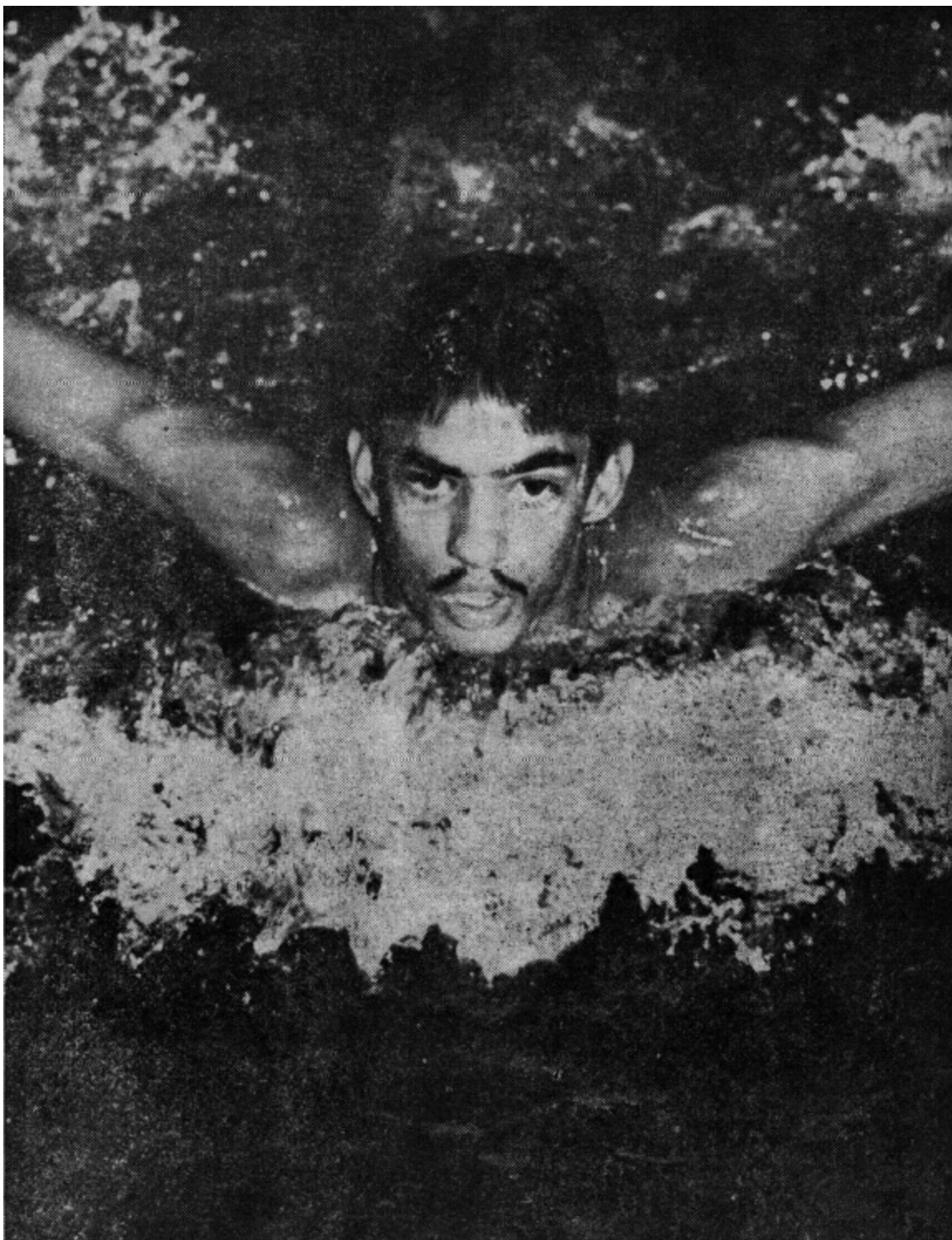
न्यू कांसिल, आस्ट्रेलिया में वहाँ के प्रसिद्ध ऐरिक आर्नोल्ड द्वारा प्रशिक्षित होने के पश्चात् और तदुपरान्त भारत में उसी प्रशिक्षक से फिर पिछले दो मासों में प्रशिक्षण पाने के अनन्तर, भारत की तैराकी के बादशाह खजान सिंह की ओर, सियोल में होने वाली आगामी एशियाई खेलों में पदक प्राप्ति के लिए सब की दृष्टि लगी थी।

आस्ट्रेलिया में (जुलाई 1985 से मार्च 1986 तक) आठ महीनों के दीर्घ प्रशिक्षण के साथ-साथ, विश्व के जाने माने तैराकों से प्रतिद्वन्द्वता ने, खजान सिंह की दक्षता पर

भारी प्रभाव डाला है। राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में स्वर्ण पदक विजेता माइकेल ग्रास और जॉन सवीन से मुकाबला, खजानसिंह का हुआ। जबकि ओलिम्पिक तैराकों को कोई पदक नहीं मिले, खजान ने 100 तथा 200 मी० बटरफ्लाय की अपनी प्रिय स्पर्धाओं में रजत पदक पाए।

5वीं आस्ट्रेलिया की (खुले राष्ट्रीय) ओपन नेशनल्स प्रतियोगिता में, जो राष्ट्रमण्डल खेलों के लिए (जिसमें आस्ट्रेलियाई तैराकों ने भाग लिया) चयन परीक्षाएँ सिद्ध हुईं, खजान ने 100 मी० बटरफ्लाय में सातवाँ और 200 मी० बटरफ्लाय में पांचवाँ स्थान पाया।

फ्रीस्टाइल और व्यक्तिगत मेडले स्पर्धाओं में वह अपने समय में बड़ा सुधार लाया। किन्तु उसने प्रशिक्षण के समय 100 मी० और 200 मी० बटरफ्लाय स्पर्धाओं के 57.08 से० और 2 मि० 5 से० में क्रमशः पूरा किया। इस प्रकार, उसने 100 मी० बटरफ्लाय में 57.27 सेकण्ड वाले एशियाई रिकार्ड को सुधारा और 200 मी० बटरफ्लाय में 2 मि० 4.9 से० वाले एशियाई कीर्तिमान से केवल एक सेकण्ड पीछे रह गया। खजान सिंह को विश्वास था कि निकट भविष्य में वह 200 मी० बटरफ्लाय में एशियाई रिकार्ड भंग करेगा और सियोल में उसने कर दिखाया।



खजान सिंह

आस्ट्रेलिया में प्रतियोगिता में बार-बार भाग लेने से, उसमें से वह हिचक और भय निकल गया है, जो प्रतियोगिताओं के समय हावी हो जाता है और कार्यदक्षता को दुष्प्रभावित करता है।

भारत में सर्वश्रेष्ठ होने के कारण कोई भी महत्वपूर्ण विरोध नहीं पाकर, खजान सिंह को आस्ट्रेलिया में अपने से उत्तम तैराकों से प्रतिस्पर्धा कर, अपनी कुशलता को सुधारने के लिए स्वाभाविक तौर पर उत्तम अवसर मिले हैं।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के इस 22 वर्षीय इन्स्पेक्टर को ऐसी प्रतीति है कि अपनी दक्षता में सुधार लाने पर, अन्य भारतीय भी अपनी तैराकी क्षमता में सुधार लाने का यत्न करेंगे, जिससे राष्ट्रीय तैराकी स्तर को कुल मिलाकर संभालने में मदद मिलेगी।

श्री एरिक आर्नोल्ड के अधीन सहनशील प्रशिक्षण से, दक्षिण दिल्ली में स्थित मुनीरका के इस किशोर का तैराकी-प्रदर्शन उज्ज्वल रहा है। पिछले एशियाई खेलों में, यही एक भारतीय था, जिसे चतुर्थ स्थान मिला था। 400 मी० व्यक्तिगत मेडले को उसने यह विशिष्ट स्थान 5 मि० 4 से० में तैर कर पाया था।

ब्रिस्बेन में सितम्बर 1982 में आयोजित राष्ट्रमंडल खेलों में 4x100 मी० फ्रीस्टाइल और 4x100 मी० मेडले रिले में, उसने भारतीय रिले टीम को छठे स्थान दिलाने में सहयोग दिया। मास्को में अगस्त 1984 में आयोजित खुले (ओपन) अन्तर्राष्ट्रीय चैम्पियनशिप में, खजान को 100 मी० बटरफ्लाय में नवाँ स्थान मिला।

पांच तैराकी स्पर्धाओं में उसका राष्ट्रीय रिकार्ड बनाना कोई कम महत्व की बात नहीं है। 2 मि० 05.3 से० 200 मी० फ्रीस्टाइल में, 59.7 से० 100 मी० बटरफ्लाय में, 2 मि० 12.35 से 200 मी० बटरफ्लाय में, 2 मि० 22.90 से 200 मी० व्यक्तिगत मेडले में और 5 मि० 07 से० 400 मी० व्यक्तिगत मेडले में, उसके द्वारा बनाए गए कीर्तिमान अभी तक भंग नहीं हुए हैं। आस्ट्रेलिया में उसने प्रशिक्षण के समय 100 मी० बटरफ्लाय को 57.08 से० में पूरा कर राष्ट्रीय रिकार्ड को सुधारा है। 200 मी० बटरफ्लाय को उसने 2 मि० 05 से० में पूरा किया है।

सियोल में अप्रैल 1984 में आयोजित एशियाई तैराकी चैम्पियनशिप में, वह 200 मी० बटरफ्लाय में चौथे तथा 100 मी० बटरफ्लाय पांचवें स्थान पर रहा। सभी तीनों रिले स्पर्धाओं में, भारतीय रिले टीम को चौथे स्थान दिलाने में, रोगी होते हुए भी, उस छह फुटे युवक ने अपने हृष्ट पुष्ट मांस पेशियों से योगदान किया। इन्हीं दिनों हुई अखिल भारतीय तैराकी ने उसमें अतुलनीय विश्वास कूट-कूट कर भर दिया है। दांव पर लगे 12 स्वर्ण पदकों में से, उसने दस तो स्वयं ले लिए और शेष दो ब्रेस्ट स्टोक तैराक अपने सहयोगी एस. राधाकृष्णन को लेने के लिए छोड़ दिए। इस तैराकी सफलता में, खजान सिंह ने 10 नये पुलिस प्रतियोगिता वाले रिकार्ड स्थापित किए, जिनमें पांच तो वर्तमान राष्ट्रीय कीर्तिमानों से उत्तम रहे।

इसी मास की 25 तारीख को, सियोल में चमशिल अन्तरंग तरणताल पर आयोजित 10वें एशियाई खेलों के छठे दिन, खजान सिंह ने 200 मी० बटर फ्लाय में रजत पदक पाकर, भारत के लिये पड़ रहे पदक दुर्भिक्ष को समाप्त किया। 1951 में नई दिल्ली में खेले गये प्रथम एशियाई खेलों में भारत द्वारा एक तैराकी पदक पाने के 35 वर्ष बाद, भारत को अब दूसरी बार तैराकी में कोई अन्य पदक मिला। इसका महत्व इस लिए

और भी बढ़ जाता है कि 10वें एशियाई खेलों में, सभी स्पर्द्धाओं को मिलाकर, यह पहला रजत पदक है, जो भारत को प्राप्त हुआ। यह और भी गौरव की बात है कि एक ही दिन में खजान सिंह ने 1982 में दिल्ली में आयोजित पिछले एशियाई खेलों में स्थापित 2 मिनट 6.12 से० वाले रिकार्ड को, दो बार भंग किया; प्रथम तो सुबह की हीट्स में उसने 2 मिनट 03.51 से० में पूरा किया और फिर फाइनल में 2 मिनट 02.38 से० का समय लिया, जबकि स्वर्ण पदक विजेता हीरोशी सातो (जापान) का समय, केवल 28 से० ही आगे 2 मिनट 01.06 से० रहा। इस प्रकार, आस्ट्रेलिया के एरिक आर्नोल्ड से प्राप्त महीनों का प्रशिक्षण व्यर्थ नहीं गया। खजान सिंह के कथनानुसार, यदि आर्नोल्ड वहाँ उपस्थित होते, तब उसके प्रदर्शन में और भी निखार आता। भारत की तैराकी में निश्चय ही वह एक ऐतिहासिक दिन रहा।

इसी प्रकार, 4X200 मी० फ्री स्टाइल की दूरी 56.84 से० में पूरी कर, खजानसिंह ने अपने जीवन का सर्व श्रेष्ठ प्रदर्शन किया; पर संजीव चक्रवर्ती, राणा जय पुंजा और गौरव कपूर के इतने अच्छे प्रदर्शन नहीं रहने के कारण, उसकी चौकड़ी 8 मिनट 02.15 से० में तैरकर जापान, चीन और सिंगापुर के बाद, केवल चौथा ही स्थान पास की।

उसका यह अभिमत है कि अपने तैराकों को प्रशिक्षण के लिए विदेश भेजने के स्थान पर, यह उत्तम रहेगा कि हमारे प्रशिक्षक विदेशी प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षित किए जाएँ और ये प्रशिक्षक, भारतीय तैराकों को उसी प्रकार प्रशिक्षित करें।

इस देश में खेलों की प्रगति के विषय में, खजानसिंह का यह सुझाव है कि ऐसे खेल संस्थान खोले जाएँ जिनमें दस-बारह वर्ष के बालकों को शुरू से प्रशिक्षित किया जाए। इन बालकों को शिक्षा, आवास, भोजन तथा खेल की सामग्री मुफ्त दी जाए, जिससे उनका सारा ध्यान केवल खेलों में ही केंद्रीभूत रहे।

के० रि० पु० बल के खिलाड़ी मारीशस में

मारीशस में 25 तथा 26 सितम्बर 1986 को होनेवाली पंचराष्ट्रीय प्रतियोगिता में भारत की ओर से खेलने के लिये भारतीय अमेच्यर एथ्लेटिक्स फेडरेशन ने के० रि० पु० बल के इन्स्पेक्टर सुरिन्दर सिंह और सब-इन्स्पेक्टर गुरुमुख को चुना था।

जबकि सुरिन्दर सिंह ने 400 मी० और 400 मी० बाधा में भाग लिया, गुरुमुख सिंह ने 800 मी० तथा 1,500 मी० दौड़ों में मुकाबला किया और दोनों ने दो-दो रजत पदक पाये।

खिलाड़ियों को वेतन वृद्धि

जबकि राष्ट्रीय प्रातियोगिताओं में प्रथम तीन स्थान पाने वाले खिलाड़ी एक वेतनवृद्धि पायेंगे, अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में ये ही स्थान पाने वाले खिलाड़ियों को, दो वेतनों की वृद्धियाँ मिलेंगी।

भारत सरकार ने स्पष्ट किया है कि ये वेतन-वृद्धियाँ, वेतनमान की अधिकतम सीमा के बाद भी स्वीकृत की जा सकती हैं; किंतु किसी भी खिलाड़ी की सेवावधि में ऐसी वेतन-वृद्धियाँ पाँच से अधिक नहीं दी जायेंगी।

ए. पी. एस. चीमा मलेशिया में

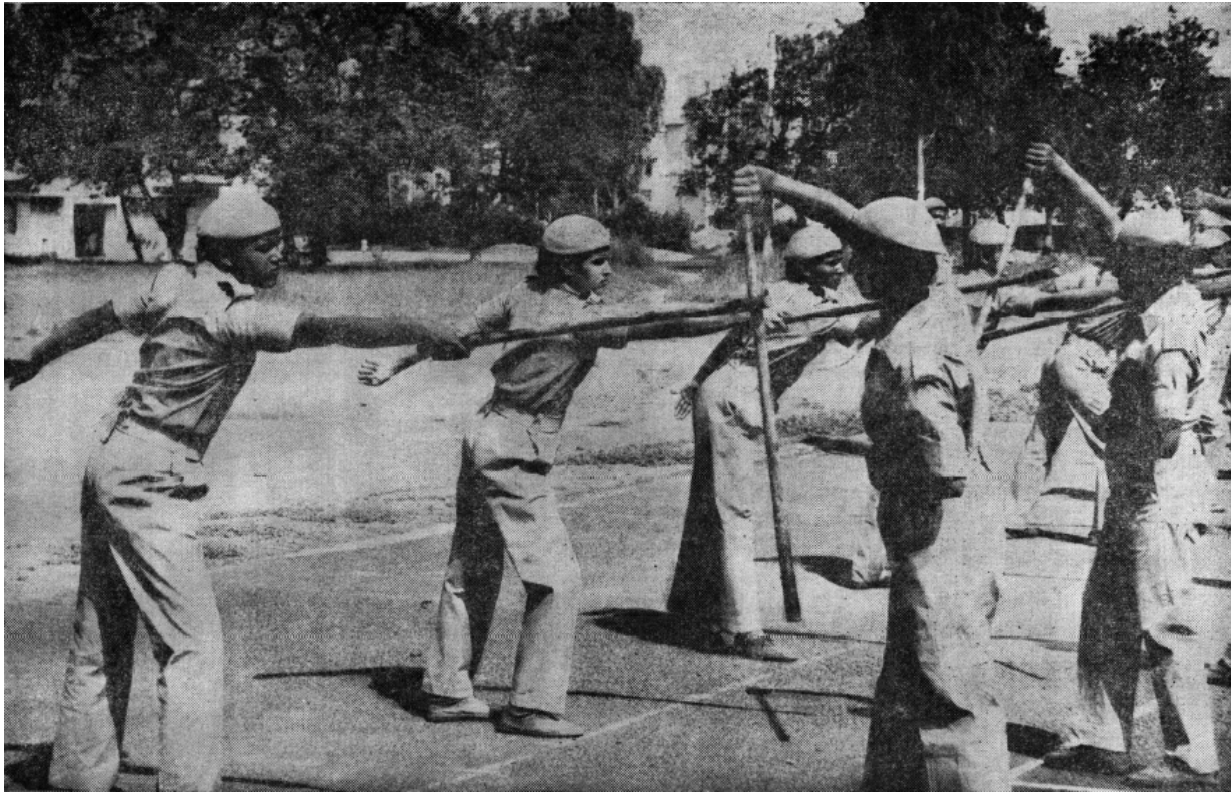
कुआलालम्पुर (मलेशिया) में अगस्त 1986 में आयोजित खुली राष्ट्रीय [ओपेन नेशनल] चैम्पियनशिप में भाग लेने के लिये भारतीय एथलीटों की टुकड़ी के प्रबन्धक के रूप में, श्री एस. पी. एस. चीमा, पुलिस उपअधीक्षक, के० रि० पु० बल, उस टुकड़ी के साथ गये हैं।

दौड़कूद (एथलीट) प्रशिक्षक संघ के उपाध्यक्ष— एच.पी.एस. चीमा

नई दिल्ली में 14 अगस्त 1986 को दौड़कूद (एथलीटिक) प्रशिक्षक संघ ने अपनी वार्षिक साधारण बैठक में, श्री एच.पी.एस. चीमा, सहायक कमान्डेंट, के०रि०पु० बल को अपना उपाध्यक्ष चुना है।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में महिला बटालियन का गठन

ले०—ज्ञान सिंह रावत, निरीक्षक उपमहानिरीक्षालय, गौहाटी



लाठी ड्रिल करती हुयीं महिला बटालियन की किशोरियाँ

परिवर्तन प्रकृति का पहला नियम है। प्रतिदिन नये-नये परिवर्तन हर तरफ नजर आते हैं। ऐसे समय में, यदि किसी फोर्स की परम्परा में भी कोई परिवर्तन आ जाये, तब कोई आश्चर्य की बात नहीं। 22 मई 1985 का दिन, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य है, जब भारत सरकार ने इस बल में प्रथम महिला बटालियन के सृजन की स्वीकृति दी। उससे पूर्व, इस बल में महिलायें केवल चिकित्सा क्षेत्र में अथवा अन्य विशेष परिस्थितियों में (जैसे मृतक कर्मियों के आश्रितों को) लिपिक वर्ग के लिये भर्ती की जाती रही थीं।

के० रि० पु० बल में इस नवोदित प्रथम महिला बटालियन का (जिसे 88 नम्बर दिया गया है) मुख्यालय, देश की राजधानी के ग्रुप केन्द्र, झड़ोदा कलाँ में है; जब कि अन्य छः सर्विस कम्पनियों के हेडक्वार्टर्स जम्मू (जम्मू-कश्मीर), रामपुर (उ०प्र०), दुर्गापुर (बंगाल), गौहाटी (असम), भुवनेश्वर (उड़ीसा) तथा पल्लीपुरम (केरल) में स्थित इस बल के केन्द्रों में हैं। इस बटालियन के लिये, महिलाओं की भर्ती, देश के सभी राज्यों से की गई है; एवम् उन्हें उनके राज्य के नजदीक के ग्रुप केन्द्रों की कम्पनी में तैनात किया गया है।

अभी तक केवल महिलायें, कांस्टेबल पदों पर ही भर्ती की गई हैं। अन्य सभी रैंकों में, लांसनायक से कम्पनी कमांडर तक के रिक्त स्थानों पर, महिलाओं की सीधी भर्ती या अन्य राज्यीय पुलिस संगठनों से प्रतिनियुक्ति के प्रयास किये जा रहे हैं।

सभी कम्पनियों की बेसिक ट्रेनिंग प्रायः समाप्ति पर है। यहाँ गौहाटी में स्थित

माहेला कम्पनी के आधार पर, एक झलक प्रस्तुत है—

भर्ती : नियमानुसार महिलाओं की भर्ती के लिये स्थानीय समाचार पत्रों, रोजगार कार्यालयों, रेडियो व दूरदर्शन के माध्यम से प्रचार-प्रसार करने के होते हुये भी, आम आदमी को सन्देह था कि क्या घर-आंगन में रहने वाली भारतीय महिलायें इस अर्द्ध-सैनिक बल में भर्ती होने को जायेंगी; किन्तु हम दाँतों तले उंगली दबाते रह गये, जब अकेले गौहाटी में 27 रिक्त स्थानों की पूर्ति के लिये, लगभग चार सौ महिलायें 20 फरवरी 1986 की निश्चित तिथि तथा समय पर भर्ती बोर्ड के समक्ष, पंक्तिबद्ध आ खड़ी हुयीं।

इनमें 8 वीं कक्षा से लेकर स्नातक तक की महिलायें थीं, जिनकी आयु 18 से 25 वर्ष तक की थी। भर्ती की हुई अधिकांश महिलायें मध्यम वर्ग की हैं। यह कहना सर्वथा अनुचित होगा कि उनकी भर्ती का कारण, पारिवारिक या आर्थिक समस्या ही थी; क्योंकि कुछ तो माँ बाप की इकलौती बेटियाँ हैं। बहुतों को तो लालवर्दी में जन सेवा का शौक यहाँ खींच लाया, जिनमें देशभक्ति भी शामिल है।

श्रीगणेश : 31 मार्च, भविष्य में इस कम्पनी की सालगिरह के रूप में, मनाया जाया करेगा, क्योंकि उसी दिन कम्पनी का श्री गणेश हुआ। श्री चिन्तामणि पाण्डेय, तत्कालीन अपर पुलिस उपमहानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र गौहाटी के तत्वावधान में, कम्पनी की ट्रेनिंग आरंभ हुयी। सूबेदार आर. ए. सिंह ने प्रथम कम्पनी कमांडर (कार्यवाहक) के रूप में बागडोर संभाली। इस कम्पनी में सात सहोदर प्रदेश यानी असम, अरुणाचल, मेघालय, मणिपुर, नागालैंड, मिजोरम तथा त्रिपुरा के सभी समुदायों की 91 महिलायें शामिल हैं। इनमें केवल चार के अलावा, अन्य सभी अविवाहित हैं।

कार्यक्षमता : विभिन्न पर्वतीय प्रदेशों में महिलायें, पुरुषों के बराबर कार्य करती हैं और बहुत ही परिश्रमी होती हैं। इस बात की पुष्टि कम्पनी कमांडरों द्वारा की गई है। हिन्दी का भला ज्ञान न होने के कारण, सभी अपना पाठ एक दूसरे से पूछ कर लेती हैं और अपनी ट्रेनिंग में दिलचस्पी लेती हैं। महिला होने के कारण, सहनशीलता और अनुशासन-प्रियता, उनमें कूट-कूट कर भरी है।

प्रशिक्षण : अर्द्ध-सैनिक बल होने के नाते, इस बल की शिक्षादीक्षा स्थल सेना से मिलती जुलती है। फुटड्रिल, आर्म्स ड्रिल, लाठी ड्रिल, टीयर स्मोक, बेनेट, फायरिंग, के अलावा, बिना हाथियार की लड़ाई तथा जूडो-कराते का भी प्रशिक्षण दिया जाता है।

सिर पर हेलमेट धारे, शरीर पर कवच (बाडी प्रोटेक्टर) पहने, जब वे बनावटी शत्रु की (डम्मी) पर प्रहार करती हैं, तब वे झाँसी रानी लक्ष्मीबाई की याद हरी कर देती हैं। इसी तरह वे बेनेट फायरिंग में, संगीन लगी राइफल को हाथों में ताने (डम्मी) शत्रु को ललकारती हुयी भेदन करती हैं, तब शैलपुत्री कामाख्या के अनेक रूप, दानवों का दमन करते नजर आते हैं।



रेजीमेंटल (सैनिक) पुलिस का सेवाभार उठाती हुयीं महिला बटालियन की दो सदस्यायें तीरन्दाजी के लिये, पूर्वोत्तर क्षेत्र बहुत प्रसिद्ध है। रायफल फाइरिंग में कम से कम पौने-इन्च का ग्रुप बनाने में तभी तो कुछेक को सफलता मिली है।

खेल के मैदान में, कुछ दौड़ का अभ्यास करती हैं और कुछ वालीबाल में अधिक रुचि रखती हैं।

इस तरह, आराम के समय के अलावा, फालतू समय होता ही नहीं है। उनका दिन, परेड मैदान में 'वन्देमातरम्' की धुन से शुरू होकर, सायंकाल 'जनगणमन' की धुन पर, परेड मैदान में ही समाप्त होता है।

खुशहाली : क्या वे बाबुल का 'अंगना' छोड़ कर यहाँ खुश हैं ? इस प्रश्न के उत्तर में, एक कमाण्डर ने बताया कि वे बहुत ही खुश व अपने आप को पहले से अधिक सुरक्षित पाती हैं।



सशस्त्र प्रशिक्षण लेती हुयीं महिला बटालियन की युवतियाँ

अपने वेतन का एक भाग, वे नियामित रूप से अपने संरक्षकों को भेजती हैं और कुछ अंश अल्प बचत योजना के अन्तर्गत, बैंक में जमा करती हैं। उनके कल्याण का पूरा पूरा ध्यान, यहाँ के अधिकारी रखते हैं।

कर्त्तव्य व जिम्मेदारी : महिला बटालियन का कार्यक्षेत्र सम्पूर्ण भारत है। अनेकानेक कारण से, कानून व व्यवस्था की स्थिति नाजुक दौर से गुजर रही है। ऐसे समय में घरद्वार का सुख चैन त्याग कर, जिन महिलाओं ने देश सेवा के लिये यहाँ स्वयं को समर्पित कर दिया है, उन पर हमें नाज होना चाहिये।

वह दिन दूर नहीं, जब इन महिला कम्पनियों को, शान्ति-व्यवस्था के रखरखाव के लिये तैनात किया जायेगा। हमें पूर्ण आशा है कि ये भारतीय महिलायें, अशान्ति, अराजकता तथा आतंकवाद का दमन कर, शान्ति व्यवस्था कायम करने की कठोर अग्निपरीक्षा में, पूरी तरह सफल होंगी।

अर्द्धसैनिक बलों में महिला बटालियनों का विस्तार व भविष्य, उनकी कार्यकुशलता पर निर्भर करेगा। पिछले बीस वर्षों में, के० रि० पु० बल में पुरुषों की लगभग 70 बटालियनों की बढ़ोत्तरी हुई है। क्या इसी गति से महिला बटालियनों की भी बढ़ोत्तरी हो सकेगी ? देखें, समय और क्या-क्या परिवर्तन लाता है ?

छापों से प्राप्तियाँ

फजलिका के एक सज्जन सिंह से पूछताछ के फलस्वरूप, फजलिका के खरशवाली धानी के कर्नल सिंह के घर पर, 16 जुलाई 1986 को, 5 बटालियन, के० रि० पु० बल और स्थानीय पुलिस की संयुक्त टुकड़ी ने छापा मारा।

निम्नलिखित गोला-बारूद प्राप्त हुये— .32 बोर की एक रिवाल्वर, एक .303 पिस्तौल, 12 बोर की एक पिस्तौल और भारी संख्या में राउण्ड ।

उसी टुकड़ी ने भारतीय खाद्य निगम के कार्यालय से .32 बोर की एक पिस्तौल भी बरामद की।

इस सम्बन्ध में पकड़े सात मनुष्यों को, गोला बारूद के साथ, पंजाब पुलिस को सौंप दिया गया।

तीन मौलिक सिद्धान्त

कमांडेंटों को लिखे अपने पत्र में, महानिदेशक, के० रि० पु० बल ने सामान्य रूप से और विशेषकर पंजाब स्थिति से सुलझने के समय, तीन सिद्धान्तों को ध्यान में रखने पर बहुत बल दिया है। पहला सिद्धान्त है 'कारगरता और कार्य निपुणता';

दूसरा है 'ईमानदारी और निष्पक्षता'; तथा तीसरा है—'सहयोग और समन्वय ।' पंजाब में निरत कमांडेंटों को लिखे पत्र में उन्होंने 'ईमानदारी और निष्पक्षता' पर खास तौर पर जोर दिया है। सचमुच में, यह एक मुख्य सिद्धान्त है और उसका पालन किये बिना, अन्य दो सिद्धान्त प्रभावहीन हो जाते हैं।

महानिदेशक ने यह स्मरण कराया कि पंजाब में हम देश के इतिहास में एक बहुत ही नाजुक दौर से गुजर रहे हैं। के०रि०पु० बल के बारे में कभी यह राय बनाने का मौका नहीं देना चाहिये कि यह बल, विवेकहीन कार्यों से अथवा सही रूप में कार्यवाही में असफल रह कर, स्थिति को सही मार्ग में लाने में अपना योगदान नहीं करता है। उन्होंने सभी कमांडरों को अपने निचले रैंक के कर्मचारियों से सम्पर्क बनाये रखने पर बल दिया, जिससे प्रत्येक व्यक्ति उस तंत्र का भागीदार बना रहे, जिसका ताना-बाना पूर्वोक्त तीनों सिद्धान्तों के आधार पर तैयार किया गया है।

हरेक को यह याद रखना होगा कि हम पंजाब पुलिस को सहयोग देने आये हैं, जो हमारे साथी तथा भाई हैं तथा हमें अत्यन्त ईमानदारी और निष्पक्षता के साथ, उत्तम व्यवसायी की भाँति, कारगर रूप से काम करना है। जब भी हमें प्रहार करना या गोली चलाना होगा, तब सही प्रकार से आघात और फायर करना होगा; किन्तु हमें कभी क्रोध या रोष में किसी गलत मनुष्य पर वार या गोली नहीं चलानी होगी।

यह भी खूब रही

मतिदास की पत्नी को पति के नाम के आगे 'श्री' लगाने से बड़ी चिढ़ थी। कारण पूछने पर वह बौखला उठी 'आप मतिदास को मतिदास ही रहने दें, श्रीमती दास नहीं बनायें।

“आप समाचार पत्र लेते हैं क्या”

“जी हाँ, पर आपके पूछने का कारण”

“कुछ नहीं, मैंने आज ही यह आपके पड़ौस का घर किराये पर लिया है।”

पंजाब में के०रि०पु० बल की सेवायें

पंजाब में कानून-व्यवस्था की स्थिति बिगड़ने के समय से ही, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को सेवा में लगाया गया और शान्ति फिर से स्थापना करने के लिये, यह भगीरथ यत्न कर रहा है।

यह बल स्वयं और स्थानीय पुलिस की सहायता से, कितने ही आतंकवादियों को

पकड़ने के साथ-साथ, भारी गोला-बारूद प्राप्त कर रहा है। इतना ही नहीं, ब्लू स्टार की कार्रवाई के ठीक उपरान्त, जब जन-जीवन अस्त-व्यस्त हो गया था, तब तो इस बल ने गाँव-गाँव जाकर हजारों रोगियों की मुफ्त चिकित्सा ही नहीं की, बल्कि उपद्रवग्रस्त मनुष्यों को आटा, चावल, मिट्टी का तेल, दूध जैसी आवश्यक वस्तुएँ उचित दरों पर प्राप्त करायीं। जलती हुयी दुकानों और घरों से बहुमूल्य वस्तुएँ निकाल कर बचायीं तथा खोये हुये बालकों तथा नर-नारियों को निज घर पर पहुंचाया।

तदुपरान्त, 1985 में हुये मतदान को सुचारु रूप से कराने में, इस बल ने महान सहयोग दिया, जिसकी प्रशंसा क्या गृह मंत्रालय और क्या पंजाब के तत्कालीन राज्यपाल ने की।

अकाली दल के सत्तारूढ़ हो जाने पर भी, आतंकवादियों की गतिविधियाँ जारी हैं, जिनसे यह बल नित्यप्रति जूझ रहा है। अराजक तथा अलगाववादी तत्वों से कारगर ढंग से सुलझने के लिये, एक पुलिस महानिरीक्षक के अधीन एक नया पाँचवां सेक्टर चण्डीगढ़ में स्थापित किया गया है। पंजाब के अतिरिक्त, इस सेक्टर में चण्डीगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश तथा जम्मू कश्मीर हैं। चण्डीगढ़ और अमृतसर में एक-एक पुलिस उप महानिरीक्षक, पुलिस महानिरीक्षक से० V की सहायता को नियुक्त किये गये हैं।

के० रि० पु० बल के अभियानों की मुख्य घटनायें पिछले संस्करणों में छपती रही हैं। कुछ ही समय पहले, भयंकर बिल्ला का वध इस बल के 48 बटालियन के जवानों द्वारा किया गया, जिसकी 35 मामलों में तलाश थी तथा जिसके सिर पर 50,000 रु० का पुरस्कार था।

अमृतसर में 9 जुलाई 1986 को आयोजित एक समारोह में महानिदेशक पंजाब के साथ, श्री एस०डी० पाण्डेय महानिदेशक के० रि०पु० बल ने 50,000 रु० का नकद पुरस्कार तथा प्रमाणपत्र प्रदान किये।

इधर जालंधर छावनी में 8 अगस्त 1986 को तथाकथित 'खालिस्तान कमांडो फोर्स' के सेनापति मनबीर सिंह चहेड़ू को 'खालिस्तान के स्वयंभू प्रतिरक्षा मन्त्री सेवा निवृत्त मेजर बलदेव सिंह घुम्मन के साथ 47 बटालियन के जवानों ने पंजाब पुलिस के सहयोग से बन्दी बनाया। महानिदेशक, पंजाब ने मिलकर मनबीर व घुम्मन को पकड़ने वाले जवानों को शाबाशी दी और 8,800 रु० के नकद पुरस्कार देने की घोषणा की। श्री सुरजीत सिंह बरनाला, मुख्यमंत्री, पंजाब ने इस कार्य को निश्चय ही प्रशंसनीय बताया।

इन कार्रवाइयों में, के०रि०पु० बल को कितने ही बलिदान करने पड़े हैं। पिछले मार्च में ही हमारे छह जवान आतंकवादियों से मूठभेड़ करते वीरगति को प्राप्त हुये, 8 जिनमें दो जम्मू-कश्मीर के, दो हरियाणा के और शेष दो में, एक-एक पंजाब और केरल का था। इस प्रकार विभिन्न क्षेत्रों और आस्थाओं वाले ये छह जवान सम्पूर्ण भारत का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। दूसरे शब्दों में, उनमें आतंकवादियों से जूझता हुआ सारा भारत देखा जा सकता है।

कुल मिलाकर, इस बल को 165 कम्पानेयों और 5 सेक्शन पंजाब में प्रावेस्तारित हैं।:—

हाल में ही, के० रि० पु० बल द्वारा की गई कुछ प्रमुख कार्रवाइयाँ इस प्रकार हैं:—

अमृतसर के बसन्त एवेन्यू में 18 जुलाई 1986 को, के० रि० पु० बल की एक प्रहरी टुकड़ी ने एक उत्पाती राजिन्दर सिंह को उस समय बन्दी बना लिया, जब वह 5000 की धन राशि वाला झोला लेने आया।

उसने उसी ही कालोनी के निवासी से उसी दिन उक्त धन को किसी विशेष स्थान पर दोपहर 3 बजे तक रखने के लिये कहा था।

के० रि० पु० बल की प्रहरी टुकड़ी ने उक्त धन राशि लेने आये हुये उस उत्पाती को ललकारा; किन्तु उसने बायसकिल पर बच भागने की चेष्टा की; परन्तु उसके गोली लगी और वह घायल हुआ।

पट्टी रेलवे स्टेशन (अमृतसर) के निकट, उन तीन तथाकथित उग्रवादियों में से, जिन्होंने 27 जुलाई 1984 की शाम को राम प्रकाश नामक व्यापारी को छुरा घोंपा था, घटना होने के दो घंटे के अन्दर ही, 19 बटालियन के० रि० पु० बल की 'बी' कम्पनी ने एक को मार डाला और दूसरे को बन्दी बना लिया। तीसरा बच भागने में सफल हुआ।

के० रि० पु० बल के नाकेबन्दी करने पर मृतक उग्रवादी ने जवानों पर गोलियाँ चलाई थीं।

12 बोर की देशी पिस्तौल तथा छह कारतूस (जिनमें दो खाली थे) मृतक व्यक्ति से प्राप्त हुये थे।

घटनास्थल पर, के० रि० पु० बल के तुरन्त पहुँचने पर, स्थिति बिगड़ने से बच गई।

15 अगस्त 1986 को, चण्डीगढ़ के पंजाब राज्य भवन में निषेधाज्ञा का उल्लंघन कर जबरदस्ती घुसती हुयी, एक निपट अनियंत्रित अकाली दल के बादल ग्रुप की भारी भीड़ को, 44 बटालियन (के० रि० पु० बल) की दो प्लाटूनों ने ऐसा करने से रोका।

यद्यपि आन्दोलनकारी उत्तेजित नारे लगा रहे थे, पुलिस उपाधीक्षक एस. आर. कलोखे के कमान में, के० रि० पु० बल के कमिकों ने, बड़े संयम से काम लिया और स्थिति को बिगड़ने से बचा लिया।

आन्दोलनकारियों द्वारा के० रि० पु० बल के घरे को भंग करने की सभी चेष्टायें विफल रहीं और वे कुछ घण्टों के बाद तितर बितर हो गये।

गुरदासपुर के निकट सीमा सुरक्षा बल की चौकी को 13 सितम्बर 1986 की रात को दो आतंकवादियों ने ध्वंस करने की योजना बनाई थी; किन्तु केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की टुकड़ी को देखते ही, वे वाइसिकल और गोला बारूद से भरे एक थैले को छोड़ कर, भाग खड़े हुये।

दीमक की दुर्ग-रचना

ले०—उपनिरीक्षक मीना राम यादव 51 बटा०

प्राचीन काल में राजा-महाराजा, स्वयं तथा प्रजा की सुरक्षा के लिए दुर्गों का निर्माण किया करते थे। उसका ज्ञान महाभारत, रामायण या अन्य ग्रन्थों के अध्ययन से मिलता है, किन्तु मैं आपके सामने उन प्राचीन किलों एवं भव्य इमारतों का जिक्र नहीं कर रहा हूँ, जो मानव द्वारा निर्मित किये गये हैं; बल्कि एक ऐसे दुर्ग का विवरण प्रस्तुत कर रहा हूँ, जो एक छोटे से कीटाणु दीमक द्वारा भव्य एवं विशाल दुर्ग बनाया जाता है। इस दुर्ग के सामने, मानव-प्रयास फीके व हल्के पड़ जाते हैं।

1 अगस्त 1985 को, श्री के. आर. के प्रसाद, उप-महानिरीक्षक के आगमन के उपलक्ष्य में, मैंने असम के एक छोटे से छटागाँव में अपने जवानों को अपनी सुरक्षा के लिए बनाये गये मोर्चों की मरम्मत के आदेश दिये। तब जवानों ने एक ऐसे स्थान से मिट्टी लाना प्रारम्भ किया, जो एक मिट्टी का ढेर जैसा लग रहा था; किन्तु उसकी रचना ऐसी कारीगरी से की गई थी कि शायद कोई कुशल अभियन्ता भी इतनी निपुणता से निर्मित नहीं कर सकता था।

वह कोई साधारण ब्यूह न होकर, एक विशाल दुर्ग था, जिसे सैनिक ठिकानों पर भी इतनी कुशलता से नहीं बनाया जा सकता था। यदि किसी को भवन-निर्माण की शिक्षा लेनी हो, तब वह इस छोटी किन्तु बुद्धि में बहुत बड़ी दीमक से ग्रहण करे। जो क्रमबद्ध योजना दीमक ने अपने नगर निर्माण में दिखाई है, वह बेबिलोन, मिश्र, चीन, सिंधु घाटी से किसी भी भाँति कम नहीं है। उम्र में सम्राट से लेकर एक सैनिक तक के रहने की व्यवस्था है।

अपने सम्राट, के लिये, एक भव्य इमारत की रचना की है, जिसमें उसकी सभी सुख-सुविधाओं का ख्याल रखा गया है। उसके लिये विश्रामगृह, अतिथि-कक्ष, मनोरंजन-कक्ष, भोजनालय आदि की पूर्ण व्यवस्था है। साथ में, स्वच्छता और स्वास्थ्य का भी ध्यान रखा गया है।

इसके अतिरिक्त, अपने सेवादारों व सलाहकारों के लिये भी आस-पास विशेष कमरे बने हैं। इसके साथ-साथ, अलग अलग मंत्रालय बने हैं, जिनका अन्दाज योजना से लगता है। अन्य बारिकें, ब्रिगेड से बटालियन, प्लाटून, सेक्शन तथा सब सेक्शन के स्तर तक, टप्स को रखने के लिये निर्मित हैं। कहीं-कहीं, बड़े भवन, काफी सदस्यों को एक साथ रहनेके लिये बने हैं; तब कहीं पर पांच/दस के लिये एक साथ रहने का प्रबन्ध है।

आवागमन के साधन अत्यन्त सुलभ हैं। इस भवन में, लम्बी-चौड़ी दोहरी सड़कें बनी हैं, जिनमें एक तरफ से एक साथ दल के दल मार्च कर सकते हैं, तथा दूसरी

तरफ से आने वाले पा सकते हैं। यह रचना, दुर्ग में केवल दो-तीन खास स्थानों पर ही है। इनके अलावा, कुछ छोटे रास्ते भी हैं, जो सिंगल कमरों तक भी जाते हैं—ये निर्माण-कुशलता के संकेत हैं। आपात्कालीन स्थिति का मुकाबला करने के लिये, दीमकों ने अपने बड़े भण्डार भी निर्मित किये हैं। उपयुक्त कमरों में सभी को आना-जाना आसान नहीं है। इन्हें बड़े रचनात्मक ढंग से बनाया है, जिसका पूर्ण ज्ञान इन्हीं को है। अन्दर आने वाले किसी नये कीटाणु एवं जीव जन्तु के लिये, दुर्ग में प्रवेश करना मुश्किल है, क्योंकि जितना अन्दर से खुला, उतना ही प्रवेश-द्वार तंग भी है।

इस दुर्ग में प्रहरी-व्यवस्था अत्यन्त कड़ी एवं सजगता से की है। हरेक महत्वपूर्ण स्थान पर पक्की प्रहरी व्यवस्था है। राजा से लेकर एक सेक्शन स्तर तक पर, प्रहरी तैनात हैं और लगातार गश्त लगाते रहते हैं। सभी साधन उपलब्ध होने पर भी, मानव ऐसा कड़ा प्रबन्ध नहीं कर सकता। इनमें किसी प्रकार का विश्वासघात या लापरवाही देखने को नहीं मिलती है।

यदि आप चाहें, तब कभी किन्हीं दीमकों द्वारा निर्मित बाम्बी का निरीक्षण कर सकते हैं। धन्य है यह रचना, जिस को इस छोटे जीव के मस्तिष्क ने बनाया है, जो मानव द्वारा बनायी गयी योजना से कहीं जटिल और शक्तिशाली है।

विज्ञान के बढ़ते चरण

आपरेशन से पूर्व, निष्पेष्ट करने के लिये, अभी तक इन्जेक्शन लगाये जाते हैं, जिससे बहुत लोग घबड़ाते हैं और कभी-कभी दुष्परिणाम भी हो जाते हैं। अब इसकी जगह एक क्रीम बनाई गई है, जिसके लेप से कोई भी अंग सरलता से शून्य हो जाता है।

धूम्रपान की आदत रोकने के लिए, गैम्बेसिन नामक गोली रूस में बनाई गयी है, जिसका स्वाद निकोटिन जैसा होता है; किन्तु इसमें मादकता उसका तीसवां हिस्सा भी नहीं होती है।

शीशे का विकसित उत्पादन 'पाली स्टेट,' स्पात से चौगुना मजबूत पाया गया है पश्चिमी जर्मनी में तो पालीस्टेट का पुल बनाया गया है। यह हल्का होता है, इसमें जंग नहीं लगती, उष्णता का अच्छा प्रतिरोध करता है और चमकीले प्रकाश से इसमें पाये खराबी-खोट सरलता से ढूँढे जा सकते हैं।

सूक्ति-सुधा

अपने धैर्य के बिना, कोई भी संकटग्रस्त मनुष्य का उद्धार नहीं कर सकता।

—योग वशिष्ठ

इस संसार में दूसरे लोग भी धानियों के नातेदार बन जाते हैं; किन्तु निधनों के अपने कुटुम्बी भी सर्वदा दुष्टवत् आचरण करते हैं ।

—पंचतंत्रम्

बहुत नम्र होने से सदा अनादर होता है तथा उग्र होने से सर्वदा बैर पैदा होता है। मनुष्य के लिये इन दोनों को छोड़ कर, मध्यम वृत्ति को अपनाना चाहिये।

—अनुश्रुतानि

॥पहेलियाँ॥

पीली तलैया, पीले ही अण्डे ।
खायो अरु बताओ, वर्ना खाओ डण्डे ॥1॥
रखे शीश पर नर सदा, नाम रखा है पाव ।
गर्मी-वर्षा-शीत से, नरका करे बचाव ॥2॥
गोरे नभ पर, काले तारे।
लख लख बनते, ज्ञानी सारे ॥3॥
होंठ नहीं, पर लाल हूं, आलू नहीं, पर गोल ।
कच्चा-पक्का हर तरह, व्यंजन मैं अन्मोल ॥4॥

उत्तर—(1)कढ़ी (2) पग (साफा) (3) पुस्तक (4) टमाटर ।

लेखनी के धनी-पलिस अधिकारी राजेश जोशी

ले०-एम. पी. नथैनियल



पुलिस कर्मी लाठी चालन के लिये प्रसिद्ध हैं, मुख्यकर के.रि.पु. बल के सेवी; क्योंकि स्थिति के गम्भीर रूप धारण करने पर ही उन्हें बुलाया जाता है। के.रि.पु. बल के राजेश जोशी वह पुलिस अधिकारी हैं, जो अपने लेखनों चालन के लिये अधिक जाने जाते हैं। विजयबाट के पास आजकल स्थित के.रि. पु. बल के शिविर में निरत, यह 32 वर्षीय पुलिस उपाधीक्षक, हिन्दी के उपन्यास कार हैं, जिनके दो उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं और दो ही निकट भविष्य में प्रकाशित होने वाले हैं।

स्कूल के दिनों में काव्यक्षेत्र में लेखनी चलाने के उपरान्त, दसवीं कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद ग्रीष्मावकाश में उन्होंने उपन्यास लिखने का प्रयास किया। किन्तु जिस प्रकाशक से सम्पर्क किया, उसने उसे प्रकाशित करने से मना कर दिया। इस से हतोत्साहित होकर, उन्होंने दीर्घकाल तक फिर कुछ नहीं लिखा। 1980 में, उन्होंने लघु-कवायें लिखना प्रारंभ की; किन्तु कहीं भी प्रकाशित करने का यत्न नहीं किया।

1981 में, उनके विवाह ने उनका कायाकल्प ही कर दिया। उनकी पत्नी ने दिल्ली से प्रकाशित होने वाली पाक्षिक पत्रिका में उन्हें अपनी कहानियाँ भेजने को मना लिया और तदुपरान्त उस उदीयमान लेखक का भाग्योदय हुआ। उनकी कहानियाँ स्वीकृत होने लगीं।

तब वह एक उपन्यास लिखने को गंभीर रूप से बैठ गये; परन्तु उसे अधूरा ही छोड़ दिया। 1983 में उन्होंने फिर लेखनी उठायी और पूरा किया। उसका नाम 'कालाधन्धा' उन्होंने दिया। अगले वर्ष, चार/पाँच मास में उन्होंने 'नई सुबह' नामक उपन्यास पूरा किया।

विगत दो वर्षों में, उन्होंने दो अन्य उपन्यास समाप्त किये हैं, जिन में एक का शीर्षक तो दिया है "मेरा मसीहा" और दूसरे का अभी देना है।

अपनी छोटी सी स्पष्ट भेंट में, राजेश जोशी ने यह स्वीकार किया है कि उनके व्यवसायिक वातावरण ने ही उपन्यास का रूप धारण किया है। परन्तु वह सदा इस बात के लिये जागरूक हैं कि पुलिस संगठन की छवि को कैसे सुधारा-संभाला जाये। अतएव उनके उपन्यास, पुलिसकर्मी को सच्चा और ईमानदार दिखाते हैं। उनके कथनानुसार, उनके उपन्यास साधारण जनता को मुग्ध करने के लिये ही केवल लिखे जाते हैं। अतः उन्होंने आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है। यद्यपि कोई सामाजिक सन्देश उनके उपन्यास नहीं देते हैं, परन्तु उन्होंने यह भी देखा है कि

उनसे समाज के सामाजिक या नैतिक मूल्यों को कोई क्षाति नहीं पहुंचे । बहरहाल, कोई भी पाठक उनके उपन्यास में किसी सामाजिक सन्देश को देने का कोई प्रत्यक्ष प्रयास नहीं देख पाता; परन्तु सामाजिक मूल्यों को बनाये रखने का परोक्ष रूप से चतुर प्रयत्न अवश्य परिलिखित है।

उनसे यह पूछे जाने पर कि एक के० रि०पु० बल के अधिकारी होने के नाते, अपने व्यस्त कार्यक्रम में वह कैसे लिख लेते हैं, उनका कहना है कि जब कभी भी उनका मन लिखने को करता है, वह समय मिलने पर लेखनी चला लेते हैं। लिखने के लिये देर तक जागते रहने के पक्ष में वह नहीं हैं। 'जल्द सो और जल्द जागो' का उनका सिद्धान्त है; परन्तु लिखने की इच्छा से, वह कभी जल्द नहीं जागते । यथाशक्ति अन्य उपन्यासों को लिखने की उनकी इच्छा है। उनकी लेखन-रुचि को देखते हुये, उनका यह लक्ष्य पूर्ण कर लेने में, कोई आश्चर्य नहीं होगा।

भारतीय प्रहरी-केरिपु

[रचयिता—श्यामाथ सिंह, वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक, महानिदेशालय]

गीतः

सत्ता व्यवस्था को बनाना ही हमारा धर्म है ॥

अखंडता व एकता का, प्रहरी बनाया है हमें,

क्षेत्रीयता संकीर्णता से मुक्त रहते हम सदा ।

धर्म-भाषा-जाति से संगम बना है केरिपु,

शत-शत शिराएं जोड़कर सरिता बना है केरिपु।

त्नासदी-पीड़ा मिटाना ही हमारा कर्म है,

सत्ता व्यवस्था को बनाना ही हमारा धर्म है ॥ 1 ॥

निर्वाध गति से चलती रहेंगी केरिपु की टुकड़ियाँ,

विष-वमन और द्रोह की, उड़ाती रहेंगी धज्जियां।

वाद आतंकवाद का, या सम्प्रदायवाद का,

केरिपु जौहर दिखाकर बनाते इन्हें बे-वाद का ।

लोक-रुचि का अनुगमन ही बापू का संदर्भ है,

सत्ता व्यवस्था को बनाना ही हमारा धर्म है ॥ 2 ॥

आज सत्याचरण करते गरज कर है कह रहा,

हिन्द-देश एक है, लहू एक बह रहा ।
धर्म-भाषा-जाति पर भाई क्यों सीमा मांगता,
उन्माद सिर पर आ रहा खो चुका क्यों अस्मिता।
भटके हुआओं का मार्ग-दर्शन, करके मिटाता जुर्म है,
सत्ता व्यवस्था को बनाना ही धर्म है ॥ 3 ॥
अर्जुन अवाक् ! अकिंचन, कुरुक्षेत्र दृश्य देखकर,
गांडीव नीचे गिर रहा चहुँ ओर निज जन देखकर
निरीह जनता लूट का आलम न बनने पाएगी,
के रि पु के सामने रिपु की न चलने पाएगी।
माँ को समर्पित केरिपु का आज खून गर्म है,
सत्ता व्यवस्था को बनाना ही हमारा धर्म है ।

यार जब पैदल चलेंगे

लेखक—देवेन्द्र कुमार

पिछली सात जुलाई की गमभरी शाम । दिल्ली के पृथ्वीराज रोड पर स्थित ईसाई कब्रिस्तान में शोकाकुल भीड़ । ज्यादातर लोग यूनीफार्म में तथा अन्य सादे कपड़ों में, बाजू में काली पट्टी बाँधे । अन्ततः जे०एस० डॉसन की अन्तिम यात्रा में शामिल होने जो आये हैं वे !

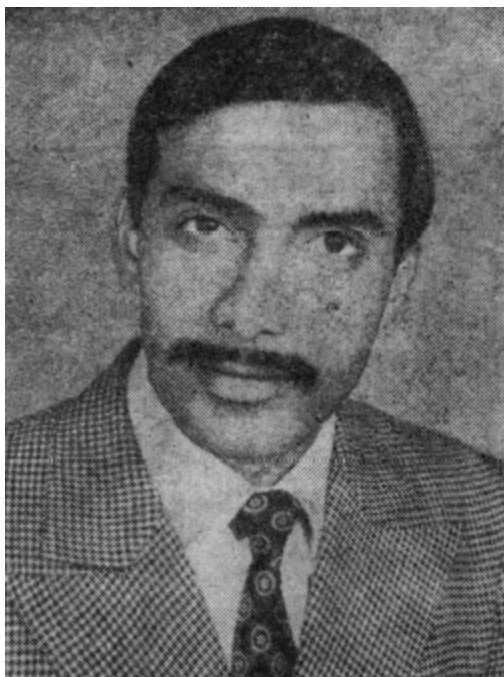
थोड़ी ही देर में, डॉसन के पार्थिव शरीर को लेकर गाड़ी आ पहुँची। गाड़ी से फूलों भरा ताबूत उतारा गया। बहुत से लोग कन्धा देने के लिये आगे बढ़े। पास ही खड़ी महिलाओं की मण्डली से सिसकियाँ विलख उठीं। श्रीमती गीता डॉसन तो इतनी शोकाकुल थीं कि उनको संभालना मुश्किल हो रहा था। हथियारबन्द टोली ड्रम की दुःखभरी ताल पर सड़क से कब्रिस्तान की ओर बढ़ी। पीछे-पीछे ताबूत को कन्धे पर लिये लोग बारी-बारी से एक के बाद एक हटते और दूसरों को मौका देते । महानिदेशक से सिपाही तक, सभी शोक सागर में डूबे हुये। धीरे-धीरे मौन अनुगमन ड्रम की ताल पर कदमों की आवाज केवल—लेफ्ट; राइट; लेफ्ट ।

कब्रिस्तान के चबूतरे पर ताबूत रखा गया; उसका ढक्कन खोला गया। अपने शादी वाले सूट में डॉसन चिरनिद्रा में सोये से लगते थे।

न जाने शकल मौत की,
कितनी हसीन थी।
आँखें खुली और देख के,
पथराकर रह गयीं।

ग्रीनपार्क स्थित गिरजे के फादर द्वारा अन्तिम प्रार्थना करने के बाद, तैयार की गई पक्की कब्र में ताबूत को नीचे उतारा गया। एक-एक मुट्ठी मिट्टी वहाँ लगभग सभी लोगों ने डाली। मिट्टी का शरीर, मिट्टी को सौंप दिया गया। हथियार बन्द टुकड़ी ने फायर किया; बिगुलर ने लास्ट पोस्ट बजाया। कब्रिस्तान के पेड़ों पर बैठे पक्षी डरकर उड़ गये। भारी किये मन, लोग लौट पड़े। केवल नीरवता को वहाँ छोड़कर। उड़े पक्षी अवश्य फिर पेड़ों पर आ गये। पर लगे टुकर-टुकर नयी कब्र को देखने।

और लोगों की तरह, मेरे मन में भी डॉसन के बहमुखी व्यक्तित्व के कई पहलू याद आते हैं। दिसम्बर 69 की बात है तथा स्थान है नीमच (मध्य प्रदेश)। हम लगभग दो दर्जन लोग, डी०ए०जी०ओ० के दूसरे बैच की बेसिक टेनिंग के लिये वहाँ इकट्ठे हुये थे और उनमें थे एक व्यक्ति डॉसन, जो फोर्स में आने से पहले ही खेल के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर की तिकड़ी कूद के एथलीट थे। अखबारों में उनके फोटो छपते थे। आने से पूर्व, मद्रास में अच्छी भली नौकरी करते थे तथा उन्हें अमेरिका में प्रशिक्षण के लिये जाना था। दोनों को छोड़कर, उन्होंने सी० आर० पी० क्यों चुना? शायद दूसरा कोई नहीं चुनता। मैं तो उनकी प्रतिष्ठा से आतंकित था; पर मिलने-जुलने पर, वह तो अतीव सरल व्यक्ति निकले—नितान्त निराभिमानी।



जे. एस. डॉसन

आरंभ में, डॉसन को हिन्दी बिल्कुल नहीं आती थी। जब भी उस्ताद उनसे पूछता

कि कुछ समझ पड़ा, डॉसन गदेन हिला देते। उस्ताद उनकी नासमझी को खूब समझते थे और एक दिन हँसी में कह ही बैठे 'गंगाराम की समझ में न आये।' सबने डॉसन को गंगाराम कहना शुरू कर दिया। पहले तो डॉसन भी आनन्द लेते रहे, पर व्यंग्य के समझने पर, उनके आँसू छलछला आये। फिर सबने यह कहना छोड़ दिया।

डॉसन टेनिंग को बहुत निष्ठा से करते थे। ऊँची कदमताल से तो उन्होंने पैर भी खराब कर लिये और उनकी कूद का स्तर गिर गया। टेनिंग के दौरान हुई अखिल भारतीय खेलकूद प्रतियोगिता में, उनका स्थान दूसरा रहा और इनडोर के सर्वोत्कृष्ट प्रशिक्षणार्थी का पदक भी, उन्होंने जनरल मानेकशा से पाया।

मेरी दूसरी मुलाकात 1972 में हुई और फिर नीमच में ही। वह अन्तर्रैञ्ज प्रतियोगिता में भाग लेने आये थे और मैं पुलिस पदक। तीसरी मुलाकात, 1973 में दिल्ली में हुई : यहाँ मेरी पोस्टिंग थी। और वह अन्तर्रैञ्ज खेलकूदों में अजमेर रेंज का नेतृत्व कर रहे थे। इस बार वह शादी करके सपत्नीक आये थे। बातों ही बातों में मैंने डॉसन से कह दिया "भई, तुम्हें तो मेडल ही मेडल मिलते हैं; यहां दिल बहलाने को एक नहीं।" प्रतियोगिता की समाप्ति पर जब मैं डॉसन और उनकी पत्नी को विदा कर कार्टर पहुंचा, तब वहाँ डॉसन के छोटे से नोट के साथ, एक गोल्ड मेडल मिला, जो वह मेरे लिये वहाँ छोड़ गये थे। वह तगमा, दोस्ती के स्मारक-चिन्ह के रूप में अब भी मेरे पास सुरक्षित है।

नौकरी तो नौकरी है; इसके बाद, बहुत वर्षों तक मुलाकात ही नहीं हुई। एकाध पत्र, नये वर्ष का बधाई पत्र ही आये गये। अखबार क्रैपलर या कोई सहकर्मी मिलता, तब डॉसन के बारे में पता लगता।

लगभग एक दशक तक क्रीड़ा-क्षेत्र में छाये रहने के बाद, अब डॉसन एक कार्यकुशल, कर्मठ, ईमानदार तथा सहृदय साथी के रूप में ज्यादा जाने लगे थे। जिस भी बटालियन में रहते, उसके क्या अधिकारी और क्या जवान, सभी उनकी तारीफ करते थे।

1983 की बात है, जब डॉसन 28 बटालियन में सिक्किम की राजधानी गंगतोक में तैनात थे। स्वास्थ्य अच्छा था; टेनिस खेलने के लिये राज निवास से गवर्नर का निमन्त्रण तक पाता था। वह सब तरह से सन्तुष्ट थे। तभी अचानक गाज गिरी। एक दिन रक्तदान देते समय रक्त-जाँच से घातक बीमारी रक्तकैंसर [ल्यूकिमिया] का पता चला। किसी को विश्वास नहीं हुआ। सब आवाक रह गये।

सिक्किम से कलकत्ता और कलकत्ता से बेस अस्पताल, उन्हें लाया गया। पता लगते ही मैंने पत्र लिखा; उसका जवाब भी आया। दिसम्बर 83 में, मैं असम से दिल्ली आया। धड़कते दिल से घण्टी बजाई। मेरा विचार था कि डॉसन रोगशय्या पर लेटे होंगे, पर श्रीमती डॉसन से पता चला कि वह मेस में बिलियर्ड रूम में होंगे। सचमुच में, सिर व गले को ढके, वह अपने बच्चों के साथ, बिलियर्ड खेल रहे थे। बहुत ही आश्चर्य एवं प्रसन्नता हुई। उन्होंने बताया कि पहले वह सोचते थे कि वह अस्पताल से निकल ही नहीं पायेंगे। जो समय मिल रहा है, वह 'बोनस' है।

छह मास बाद, मैं भी टेम्पोरेरी टॉसफर पर दिल्ली आ गया। तब उनका इलाज सफ़दरजंग अस्पताल में योग्य डॉक्टर बसु द्वारा चल रहा था। लगभग दो साल तक, डॉसन नार्मल रहे और ड्यूटी नियम-पूर्वक करते रहे। खुद क्वार्टर मास्टर थे; पर फटे टेण्ट में रहते थे। सुदूर दक्षिण में, कन्या कुमारी के निकट जन्मे, डॉसन कुछ अलग ही मिट्टी के थे।

जनवरी 1986 में, डॉसन फिर गम्भीर बीमार पड़े और उसी अस्पताल में भर्ती हुये। वहीं अपने जीवन के अन्तिम क्षण उन्होंने बड़ी हिम्मत तथा खेलभावना के साथ बिताये।

विगत 1 जुलाई को मैं सपरिवार उनसे मिलने गया। वह काफी स्वस्थ थे। वेतन आयोग से लेकर फुटबाल के वर्ल्डकप तक की बातें करीं। उनके घर में प्रसन्नता का वातावरण था। मैं बड़ा सन्तुष्ट होकर घर लौटा। पर अपने मन कुछ और है, और कर्ता के कुछ और। 4 जुलाई की रात डॉसन को बुखार चढ़ा और परेशानी की हालत में, उन्हें अगली सुबह अस्पताल ले जाया गया। बुखार के कारण खून नहीं चढ़ाया जा सका; फिर खून मिलने में भी शायद देरी हुयी। दोपहर कठिनता से कटी; कोई दो वजे, डॉसन इस असार संसार से कूच कर गये।

डॉसन को मृत्यु ने अवश्य छीन लिया; पर हम सब उनके साथी उन्हें कभी भुला नहीं पायेंगे। वह एक नेक इन्सान, अच्छे पति व पिता, सहृदय दोस्त तथा निष्ठावान क्रिश्चियन थे और थे क्या क्रीड़ा क्षेत्र और क्या जीवन—दोनों में वह उत्तम खिलाड़ी।

आज 7 जुलाई को कन्धा देते समय, ये पंक्तियाँ मेरे हृदय को कचोट रही हैं—

दोस्तों तकलीफ़ दूंगा,

आज मैं सिर्फ़ एक बार।

यार जब पैदल चलेंगे,

हूँगा मैं कंधों सवार।

खेलों के लिये के०रि०पु० बल द्वारा अंशदान



मेजर जनरल नरिन्दर सिंह महानिदेशक, भारतीय क्रीडा प्राधिकरण को ड्राफ्ट देते हुये श्री बी. जे. एस. सियाल, महानिरीक्षक (मुख्यालय)

श्री बी. जे. एस. सियाल, पुलिस महानिरीक्षक (मुख्यालय) के० रि० पु० बल ने मेजर जनरल नरिन्दरसिंह, महानिदेशक, भारतीय क्रीडा प्राधिकरण को इन्हीं दिनों नई दिल्ली में 2,455 रु० का ड्राफ्ट दिया है।

यह राशि के० रि० पु० बल के उन जवानों ने इकट्ठी की थी, जिन्होंने विगत 26 मई को अजमेर में 'समय के विरुद्ध दौड़' (रेस अगेन्स्ट टाइम) में भाग लिया था।

मेजर जनरल नरिन्दर सिंह ने इस ड्राफ्ट को लेते हुये, के० रि० पु० बल द्वारा मानव-कल्याण हेतु धन एकत्र करने के इस प्रयास की प्रशंसा की।

के०रि०पु० बल के जवान की सेवानिष्ठा

नीमच के गुरद्वारा रोड पर 8 अगस्त 1986 की शाम को रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र 1, नीमच के नायक गजराज ने देखा कि तेजी से ले जाते हुये ट्रक ड्राइवर किसी अन्य ध्यान में मग्न, पास से निकलते हुये स्कूटर को कुचलने जा रहा है। उसने तुरन्त अपनी जान पर खेलते हुये छलांग मार कर, स्कूटर चालक को दूसरी ओर खींच लिया, उसी क्षण स्कूटर को ट्रक ने चकनाचूर कर दिया।

स्कूटर चालक की पत्नी ने गजराज को पाते के प्राण बचाने के लिये, 500 रु० देना भी चाहे, किन्तु उस सेवानिष्ठ जवान ने उसे अपना कर्तव्य बताते हुये, रुपयों को लेने से मना कर दिया। स्थानीय प्रेस व जनता ने जीवन रक्षक गजराज की बड़ी प्रशंसा की।

मुख्य सम्पादक : एच. एस. सेठी।

सम्पादक : एम. पी. नथैनियल तथा जे. एस. शर्मा।

मुद्रक : सी. आर. पी. एफ. प्रेस, झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-110072

मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक, के०रि०पू० बल, ब्लॉक-1, सी. जी. ओ. कम्पलेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से एच. एस. सेठी।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की मासिक पत्रिका

सीआरपीएफ समाचार

खण्ड I

अंक 4

[30 नवम्बर, 1986] [8 अग्रहायण, 1908]



सियोल एशियाड में उदीयमान जूडो खिलाड़ी— बन्नु सिंह

लेखक—एम०पी० नथैनियल

सियोल में हुये एशियाई खेलों में भारत की असफलता के साथ-साथ, कुछ उभरते खिलाड़ियों की कोई विशेष चर्चा नहीं हुयी। पी. टी. ऊषा (एथलेटिक्स), कर्तार सिंह (कुश्ती) खजान सिंह (तैराकी) और सोमा दत्त (शूटिंग) के अतिरिक्त, कुछ अन्य ऐसे भी खिलाड़ी थे, जिन्होंने भारत का नाम ऊँचा किया, किन्तु जिनकी ओर ध्यान नहीं दिया गया। उन्हीं में है जूडो का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी बन्नु सिंह, जिसने खुले भार वर्ग में कांस्य पदक पाया।

यह ध्यान में रखते हुये कि सियोल के एशियाई खेलों में जूडो पहली बार खेला गया तथा इस खेल ने भारत में इन्हीं कुछ पिछले वर्षों में ही लोकप्रियता पाई है और जापान, चीन तथा कोरिया जैसे देशों के भाग लेने पर, भारत द्वारा कोई भी पदक पाने के अवसर बहुत ही क्षीण थे, तब बन्नु सिंह द्वारा कांस्य पदक पा लेना कोई कम गौरव की बात नहीं है। इन जैसे जूडो खिलाड़ियों ने सिद्ध कर दिया है कि भविष्य में ये अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में उत्तम नाम कमाएँगे। बन्नु सिंह के हौसले बढ़े हुये हैं और ओलम्पिक खेलों में वह भारत के लिये पदक जीतने की आकांक्षा रखता है।

उत्तर प्रदेश के गाज़ीपुर जनपद के कनेरी ग्राम में 15 जुलाई 1944 को एक साधारण परिवार में जन्मे, बन्नु सिंह ने कुश्ती लड़ना पन्द्रह वर्ष की आयु में शुरू किया। ग्राम में प्राथमिक शिक्षा के उपरान्त, उसने सादात में स्थित बापू इन्टर कॉलेज में प्रवेश लिया; परन्तु कठिन आर्थिक स्थितियों के कारण, यह अपनी शिक्षा पूरी नहीं कर सका।

अक्टूबर 1966 में कान्स्टेबल के रूप में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में भर्ती होने पर, इसे कुश्ती के लिए बहुत कम समय मिला, क्योंकि पूर्वोत्तर अंचल में इसे प्रायः राजद्रोह निरोधक कार्रवाइयों में भाग लेना पड़ता था।

1972 में, के०रि०पु० बल के दंगल में भाग लेने का इसे अवसर मिला तथा अतिशय भारी (सुपरहेवी) भार में वह तृतीय स्थान पर आया। इस 110 कि०ग्रा० भार के मल्ल को (जो अब जूडो खिलाड़ी है) फिर कभी पीछे नहीं देखना पड़ा। 1981 तक जब कि ईश्वरसिंह का बोलबाला था, के० रि० पु० बल के दंगलों में यह द्वितीय या तृतीय स्थान पाता रहता था।

1981 में, के० रि० पु० बल के जूडो प्रशिक्षक श्री डी० आर० यादव की दृष्टि इस जवान पर पड़ी और उन्होंने सोचा कि यह जूडो खिलाड़ी के रूप में खूब चमकेगा।

यद्यपि इसे शुरू-शुरू में जूडो से अरुचि सी रही, इसने एक अन्य जूडो प्राशिक्षक इन्स्पेक्टर आर० एस० नायर के कुशल प्रशिक्षण में, जूडो का प्रारम्भिक ज्ञान लेना शुरू किया। शीघ्र ही, यह प्रसिद्ध खिलाड़ी बन गया।

नई दिल्ली में 1981 में आयोजित प्रथम जिगारो कानो कप जूडो प्रतियोगिता में, इसने अपने पहले ही प्रयास में रजत पदक पाया, जबकि स्वर्ण पदक दिल्ली के सहगल को मिला; किन्तु दूसरे ही वर्ष, स्वाधीनता दिवस कप प्रतियोगिता में, इसने अपनी पराजय का बदला ले लिया तथा स्वयं स्वर्ण पदक जीत कर, अपने भार वर्ग में सहगल को दूसरे स्थान पर धकेल दिया।

1983 में हुयी स्वाधीनता दिवस प्रतियोगिता में, जबकि के०रि०पु० बल की टीम को सिरमौर मिला, यह अपने ही साथी गोरखनाथ से दूसरे स्थान पर धकेल दिया गया। उसी वर्ष, बैंगलूर में आयोजित 'नेशनल्स' में भी, इसे रजत पदक पर ही सन्तोष करना पड़ा, जबकि सेना के श्याम सिंह ने प्रथम स्थान पाया। किन्तु तभी पानीपत में खेली गई अन्तर्राज्यीय प्रतियोगिता में, अपने भार में वह सर्वश्रेष्ठ माना गया और के० रि० पु० बल की टीम चैम्पियन रही।

यद्यपि पिछले वर्ष गुना (मध्य प्रदेश) में पश्चिमी क्षेत्र जूडो चैम्पियनशिप में उसने स्वर्ण पदक जीता, नई दिल्ली में आयोजित 'नेशनल्स' में, प्रथम तीन स्थानों में इसका नाम कहीं था।

चयन परिक्षाओं में, बहरहाल, इसकी जूडो कुशलता ने सियोल में आयोजित एशियाई खेलों में इसे स्थान दिलाया, जहाँ जापान के 150 भार वाले भारी भरकम मोशिगी मासाकी को परास्त कर, यह कास्य पदक विजेता बना।

5 फुट 10 इंच से ऊँचे बन्नू सिंह का कहना है कि जापानी प्रशिक्षक होरोयुकि मिजूनो से जो दांव इसने एशियाई खेलों में जाने से पूर्व सीखे थे, उन्होंने इसकी खेल-दक्षता में चार चाँद लगा दिये। नेहरू स्टेडियम में उस जापानी प्रशिक्षक की विशेष देख-रेख में गहन प्रशिक्षण के फलस्वरूप ही, इसके तकनीकी में अत्यन्त तेजी आयी तथा अपनी त्रुटियों से यह मुक्त हो गया।

भारत में, महाराष्ट्र का जूडो खिलाड़ी गावस ही विभिन्न प्रतियोगिताओं में इसका प्रमुख प्रतिद्वन्दी है।

बन्नू सिंह चार बालकों का पिता है, जिसमें से एक के०रि०पु० बल में कांस्टेबल है। यह अपना अवकाश पुस्तकें पढ़ने में बिताता है। सियोल के इन्हीं दिनों हुए एशियाई खेलों में अपने उत्तम प्रदर्शन के हेतु, अब बन्नू पदोन्नति पाकर सब-इन्स्पेक्टर है। खेल मंत्रालय ने इसे 50,000 रु० का नकद पुरस्कार देने की घोषणा की है।

अपने ग्राम में भी बन्नू सिंह के लिए 19 अक्टूबर को अभिनन्दन-समारोह आयोजित हुआ, जहाँ उत्तरप्रदेश के गन्ना विकास एवं आबकारी मंत्री श्री राम नाथ मुंशी ने राज्यसरकार की ओर से इसे हर संभव सहायता दिलाने का आश्वासन दिया।

बन्नू सिंह का सुझाव है कि यदि स्कूलों में जूडो का प्रशिक्षण अनिवार्य रूप से दिया

जाये, तब यह खेल देश में शीघ्र तथा उपयुक्त प्रकार से विकासेत हो सकेगा।

बलजीत को रजत पदक

कुआला लम्पुर में पिछले अगस्त में आयोजित अखिल मलेशियाई खुली दौड़कूद प्रतियोगिता में, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के सब-इन्स्पेक्टर बलजीत सिंह ने पोलवाल्ट में रजत पदक पाया। प्रथम स्थान सिंगापुर के खिलाड़ी ने पाया। बलजीत ने 4.25 मी० की ऊँचाई पार की।

महानिदेशक द्वारा ग्रुप केन्द्रों का निरीक्षण

श्रीनगर

19 से 22 जुलाई 1986 तक, महानिदेशक, के० रि० पु० बल श्री एस० डी० पाण्डेय ने जम्मू और श्रीनगर में स्थापित के० रि० पु० बल की यूनिटों का निरीक्षण किया।

उन्होंने 19-20 जुलाई 1986 को भारतीय लोक प्रशासन संस्थान की श्रीनगर शाखा द्वारा आयोजित एक विचार गोष्ठी में भाग लिया।

बाद को, वह वहाँ के राज्यपाल श्री जगमोहन से मिले और राज्य में निरत के० रि० पु० बल की यूनिटों के लिये और अधिक भूमि के दिलाने की आवश्यकता पर बल दिया।

के० रि० पु० बल के अधिकारियों को उन्होंने सम्बोधित किया तथा वेतन-आयोग और पदोन्नतियों के विषय में भलीभाँति समझाया।

पंजाब में अपनी तैनाती के समय, 76 बटालियन द्वारा किये गये उत्तम कार्य तथा अत्यधिक रक्तदान करने से अच्छी लोकप्रियता पाने के लिये, उन्होंने प्रशंसा की।

21 जुलाई 1986 को, 22 बटालियन के जवानों द्वारा दिखाये गये प्रदर्शन को भी देखा, जिसमें यह दिखाया गया था कि इस वर्ष शुरू में अमृतसर में वे एक घात में कैसे फँसे थे और उन्होंने उससे किस प्रकार सफलतापूर्वक लोहा लिया। बाद को, उन्होंने एक सम्वाददाता-सम्मेलन को सम्बोधन किया।

84 बटालियन के एक सैनिक सम्मेलन को भी उन्होंने सम्बोधित किया।

भुवनेश्वर

महानिदेशक ने ग्रुप केन्द्र, भुवनेश्वर का निरीक्षण 13-14 जुलाई 1986 को किया ।

उन्होंने वनमहोत्सव-समारोह में भाग लिया और एक पौधा भी लगाया। वनमहोत्सव-अभियान में महिलाओं और बालकों को प्रेरित करने की योजना को उन्होंने सराहा।

एक सैनिक-सम्मेलन को सम्बोधित करते हुये, उन्होंने गठन के समय से इस बल द्वारा बनाये रखी हुयी राष्ट्रीय अखण्डता की विशेषताओं का मुख्य उल्लेख किया और जवानों से भविष्य में उन परम्पराओं को बनाये रखने का आग्रह किया।



ग्रुप केन्द्र भुवनेश्वर में पौधा लगाते हुए श्री एस० डी० पाण्डेय, महानिदेशक

उन्होंने जवानों को समझाया कि महानिदेशालय ने चौथे वेतन आयोग की सिफारिशों की सीमाओं में उन्हें उत्तम वेतनमानों को दिलाने के लिये क्या यत्न किये। उन्होंने बताया कि रिस्क फण्ड के लाभों में भारी वृद्धि की गई है। जब भी जैसे ही आर्थिक स्थिति अच्छी हुयी, तब उन लाभों में और भी बढ़ोत्तरी करने के यत्न किये

जायेंगे। कुछ जवानों द्वारा पुत्रों और दामादों को भर्ती करने के अनुरोध को उन्होंने नहीं माना और समझाया कि अन्धाधुन्ध छूटें देना लोकहित में नहीं है। बहरहाल, उनके पुत्रों के लिये छूटों के विषय में विचार किया जायेगा, जिन्होंने सेवावधि में या किसी कार्रवाई में मृत्यु पाई है।

दुर्गापुर

15 अगस्त 1986 को, महानिदेशक ने ग्रुप केंद्र दुर्गापुर का निरीक्षण किया। ग्रुप केन्द्र के जवानों तथा 88 महिला बटालियन के रंगरूटों के सैनिक सम्मेलन में, उन्होंने शारीरिक स्वस्थता बनाये रखने के लिये सेवा के दौरान प्रशिक्षण की जरूरत पर जोर दिया। उत्तम प्रकार के अनुशासन के विषय में, उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण और अनुशासन, बल के चलाने के लिये दो पहिये हैं। अतः इन महत्वपूर्ण मामलों में कोई समझौता नहीं होना चाहिये।

कानून-व्यवस्था पर बोलते हुये, उन्होंने कहा कि यह जटिल होती जाती रही है और के०रि०पु० बल के जवानों और महिलाओं को पंजाब तथा देश के अन्य भागों में आतंकवादियों की चुनौतियों का डट कर मुकाबला करना होगा।

उन्होंने बताया कि विभिन्न केन्द्रीय पुलिस संगठनों के अध्यक्षों ने श्री बूटासिंह, गृहमंत्री से चौथे वेतन आयोग की सिफारिशों के सम्बन्ध में इन संगठनों के कर्मियों के वेतनमानों के सुधार की विनय की है। एरिया को साफ-सुथरा रखने के लिये उन्होंने जवानों को बधाई दी।

बाढ़ पीड़ितों की सहायता

जब विगत अगस्त में पश्चिम गोदावरी जिला, गोदावरी नदी की बाढ़ से डूब गया, तब श्री डी.वी. जे. एन. राजू, सहायक कमांडेंट के कमान में हैदराबाद की शान्ति सेना के जवानों ने बाढ़ पीड़ितों की भगीरथ सहायता की।

डॉक्टर एस. एन. पटनायक, डॉ. आर. सी. मोहन्ती (नेत्रविशेषज्ञ) तथा दो अर्द्धचिकित्सकों सहित एक टुकड़ी ने उस जिले में पहुंच कर जनता की चिकित्सा की। रोगियों की चिकित्सा और अन्यो को रोगों से बचाने के टीके लगाने के लिये, उस टुकड़ी को गहरे-गहरे पानी में जाकर बड़ी जोखिम उठानी पड़ी। कई स्थानों पर उसने भूखे बाढ़पीड़ितों को भोजन के पैकेट भी वितरित किये।

स्थानीय तथा राज्य अधिकारियों द्वारा इन सेवाओं की बड़ी सराहना हुई।

ले० कर्नल कहलों के घर की तलाशी

मनबीरसिंह और मेजर बलदेवसिंह के बन्दी बनाने पर पूछताछ के उपरान्त, 9 अगस्त 1986 को स्थानीय पुलिस के साथ लेफ्टीनेन्ट कर्नल एच. एस. कहलों के घर पर छापा मारा गया।

श्री सन्तोष सिंह, सहायक कमांडेंट के नेतृत्व में 61 बटालियन के० रि० पु० बल की एक टुकड़ी ने लुधियाने में उस अफसर के घर की नाकेबन्दी कर दी, किन्तु ले० कर्नल कहलों छापे से तीन घण्टे पहले ही घर से बच निकले। लेकिन उनके घर से भारी मात्रा में गोला बारूद मिला।

के रि०पु० बल और पंजाब पुलिस की संयुक्त टुकड़ी द्वारा इन गोला-बारूदों की प्राप्ति की, श्री जे. एफ. रिबेरो, महानिदेशक, पंजाब पुलिस तथा अन्य राज्य अधिकारियों द्वारा भूरि-भूरि प्रशंसा की गई।

गृह राज्यमंत्री द्वारा के०रि०पु० बल की सराहना



श्री पी. चिदाम्बरम्, गृहराज्यमंत्री ने देश में कानून-व्यवस्था बनाये रखने में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की भूमिका की सराहना की है।

2 नवम्बर 1986 को केन्द्रीय प्रशिक्षण कॉलेज, आवड़ी (मद्रास) में उप-निरीक्षकों

तथा अधीनस्थ अधिकारियों की दीक्षान्त परेड में बोलते हुये, उन्होंने कहा कि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल एक उत्तम बल है, जो सेवा-भक्ति की उत्तम आदर्शोक्ति का अनुपालन कर रहा है। देश की एकता और अखण्डता बनाये रखने के लिये, के० रि० पु० बल द्वारा किये गये सेवाभारों की उन्होंने भूरि-भूरि प्रशंसा की। उन्होंने कर्मियों को आश्वासन दिलाया कि उनकी समस्याओं पर तुरन्त ध्यान दिया जायेगा।

श्री के० आर० के० प्रसाद, पुलिस उपमहानिरीक्षक, मद्रास रेंज द्वारा उठाये गये सभी पदों के लिए छुट्टी-रिजर्व बनाने के प्रश्न पर, उन्होंने जन-शक्ति में बढ़ोतरी, छुट्टी के एवज में नकद भुगतान आदि समेत, एक मुश्त प्रस्ताव उनके पास भेजने का सुझाव दिया।

इससे पूर्व, कॉलेज के वाइस प्रिंसीपल, श्री एस०एस० रावत के नेतृत्व में हुई परेड की सलामी उन्होंने ली और उसका निरीक्षण किया। उस अवसर पर, 195 उपनिरीक्षकों, और अधीनस्थ अधिकारियों ने भाग लिया, जिनमें 56 मणिपुर रायफल्स के अधिकारी थे।

के० रि० पु० बल के प्रशिक्षाथियों में, सब इन्स्पेक्टर ए०के० शर्मा ने सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षार्थी होने के नाते, महानिदेशक की टाफी और सब-इन्स्पेक्टर डी०वी०थामस ने द्वितीय स्थान पर सर्वोत्तम प्रशिक्षार्थी होने के उपलक्ष्य में, प्रिंसीपल की ट्राफी पाई।

मणिपुर रायफल्स के प्रशिक्षार्थियों में, स० इ० जी०के० गोपाल और स० इ० तोम्बी सिंह को क्रमशः महानिदेशक और प्रिंसीपल की ट्राफियाँ प्रदान की गईं।

गृहराज्य मंत्री के आगमन पर, श्री एस०डी० पाण्डेय, महानिदेशक, के०रि० पु० बल ने उनका स्वागत किया। उन्होंने कुछ अधिकारियों को प्रबन्ध, कम्प्यूटर आदि के पाठ्यक्रमों में भारत और विदेशों में शिक्षा लेने का सुझाव दिया। मंत्री महोदय ने इस सुझाव को सराहा और सहयोग देने का आश्वासन दिया।

6 लाख रु० की पोस्त भुसी बरामद

जब 77 बटालियन के जवानों ने एक असैनिक ट्रक को अपने पास आते देखा, उन्होंने उस ट्रक के चालक को रोकने के लिये संकेत किया।

चालक तथा अन्य सवारियों के उतरते ही, एक मनुष्य लघुशंका करने के बहाने बच भागा। उससे सेक्शन कमांडर ना० रामसिंह का सन्देह हुआ। ट्रक में रखे बोरों की जांच पड़ताल की गई तो उनमें बोरों के मालिक द्वारा किये गये इस दावे के स्थान पर कि उनमें चोजों का भोजन है, पोस्त की भुसी को पाया गया। 40 किलोग्राम वाले सभी 60 बोरों को पकड़ा गया और स्थानीय पुलिस को सौंप दिया गया।

गोरखा मोर्चे की हिंसा पर नियंत्रण

कालिम्पांग में 27 जुलाई 1986 को गोरखा राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चे के समर्थकों से मुठभेड़ में, 4 बटालियन, के० रि० पु० बल के 17 जवानों के चोटें आयीं, जिनमें कां० पारसनाथ राय के गले और दोनों हाथों में गम्भीर आघात आये। उन उपद्रवों में, 60 बटालियन, के० रि० पु० बल के चार अन्य जवान भी घायल हुए।

जब उस मोर्चे के नेताओं ने 1950 की भारत-नेपाल संधि की सातवीं धारा को जलाने के लिये कालिम्पांग में प्रदर्शन करने का निर्णय लिया, तब 25 जुलाई 1986 को जिला अधिकारियों ने उन्हें बुलाकर, 27 जुलाई 1986 को उस प्रदर्शन को नहीं करने का अनुरोध किया। एहतियात के तौर पर, 144 धारा (दण्ड प्रक्रिया संहिता) भी लगा दी।

27 जुलाई 1986 को नगर में तथा चारों ओर के० रि० पु० बल के 4 और 60 बटालियनों के जवान तैनात कर दिये गये।

माइलस्टोन 9 के पास, जब कालिम्पांग की ओर जाता हुआ एक जलूस हिंसा पर उतारू हो गया, तब 4 बटालियन के एक सेक्शन ने चार बार गोलियां चलायीं। उसमें दो की मृत्यु हो गई। गोली चालन का समाचार दागाग्रि की भाँति नगर में फैलते ही, उस मोर्चे के समर्थक सड़कों में आकर, एक बड़ी भीड़ के रूप में कालिम्पांग के पुलिस थाने की ओर बढ़े, जहाँ वरिष्ठ जिला सिविल और पुलिस अधिकारी उपस्थित थे। उन अधिकारियों को मारने पर उतारू उस हिंसक भीड़ को वश में करने के लिये, उस पुलिस थाने पर निरत के० रि० पु० बल के जवानों को गोलियाँ चलानी पड़ी। प्रदर्शनकारियों के पास भाले, नंगी खुखरियाँ और तलवारें थीं।

भीड़ को भयंकर रूप से बढ़ते देखकर, एक सेक्शन कमांडर ना० तारकेश्वर कुमार ने का० पारसनाथ को तीन गोलियाँ दागने का आदेश दिया। जब दो बार गोलियाँ चलाने के बाद, वह तीसरी बार रायफल को भर रहा था, तब किसी उपद्रवी ने एक खुखरी से उसके बायें हाथ पर प्रहार किया। अपनी चोट का बिना ध्यान किये, कां० पारसनाथ ने तीसरी बार फायर किया। तत्क्षण दूसरे उपद्रवी ने उसके दायें हाथ पर प्रहार कर गम्भीर रूप से घायल किया। जब उपद्रवी ने पारसनाथ के गले को घायल करने की कोशिश की तब ना० चन्दरभान ने बीच में आकर अपनी रायफल के कुन्दे से धावे को रोक दिया।

कई स्थानों पर गोली चालन द्वारा स्थिति नियंत्रण में लायी गई, जिसमें 12 नागरिक मारे गये और 36 घायल हुये। के० रि० पु० बल द्वारा नगर में हिंसा को भड़कने से रोकने की इस भूमिका की कालिम्पांग के जिला प्रशासन ने खूब प्रशंसा की।

महानिदेशक, पश्चिम बंगाल पुलिस ने का० पारसनाथ को 10,000 रु० का नकद पुरस्कार दिया।

उग्रपंथियों का आक्रमण विफल

29 अगस्त 1986 को कपूरथला जिला के कबीरपुर में स्थित 18 बटालियन, के० रि० पु० बल की प्लाटून चौकी पर उग्रपंथियों द्वारा किये गये आक्रमण को, के० रि० पु० बल के सतर्क जवानों ने विफल कर दिया।

मण्ड क्षेत्र के निकट स्थित उस चौकी पर तीन ओर से 3 बजे तड़के धावा बोला गया। चौकी के निकटस्थ भवनों पर उग्रपंथी चढ़कर उस चौकी पर गोलियाँ बरसाने लगे। के० रि० पु० बल के जवान तब तक जवाबी फायरिंग करते रहे, जब तक कम्पनी मुख्यालय से अन्य सहायता नहीं आ गई और तब श्री केसरसिंह, पुलिस उपाधीक्षक के नेतृत्व में प्रतिकारात्मक आक्रमण किया गया। उग्रपंथी अन्धकार का लाभ उठा कर बच भागे।



दार्जिलिंग में पहरा देते हुए के० रि० पु० बल के सतर्क जवान

बीसवीं अन्तर्राष्ट्रिय जिम्नास्टिक प्रतियोगिता



विजेता टीम हैदराबाद रेंज के कप्तान स० इ० के० राजेन्द्रन को चैम्पियनशिप ट्राफी देती हुयी श्रीमती प्रेमलता प्रसाद

ग्रुपकेन्द्र आवड़ी में, बीसवीं अन्तर्राष्ट्रि जिम्नास्टिक प्रतियोगिता 8 से 15 सितम्बर 1986 तक आयोजित की गई। इसमें सभी 12 टीमों ने भाग लिया।

इस प्रतियोगिता का उद्घाटन एयर कर्माडोर एच. सत्पथी, अध्यक्ष, वायुसेना स्टेशन, आवड़ी के द्वारा बड़ी धूमधाम से 8 सितम्बर को सम्पन्न हुआ।

इस प्रतियोगिता का समापन समारोह 15 सितम्बर को श्री के. आर. के. प्रसाद, पुलिस उपमहानिरीक्षक, मद्रास रेंज द्वारा सम्पन्न हुआ। श्रीमती के. आर. के. प्रसाद ने विजेता खिलाड़ियों को पदक वितरित किये।

हैदराबाद रेंज 409 अंक पाकर प्रथम रही, जबकि अजमेर रेंज 342.4 अंक पाकर द्वितीय तथा नीमच रेंज 283.9 अंकों के आधार पर तृतीय रही।

ना० विजय कुमार (मद्रास रेंज) सर्वांगीण श्रेष्ठ खिलाड़ी उद्घोषित हुआ।

परिणाम इस प्रकार रहे:—

फ्लोर एक्सरसाइज़स : देशबन्धु दास (कलकत्ता) I, विजय कुमार (मद्रास) और कमलजीत कुमार (हैदराबाद) दोनों II और अब्दुल हुसैन (गौहाटी) III.

हारीज़ान्टल बार : देशबन्धु दास (कलकत्ता) I, विजयकुमार (मद्रास) II और के० राजेन्द्रन (हैदराबाद) III.

रोमन रिंगज़ : के० राजेन्द्रन (हैदराबाद) I; विजयकुमार II और अब्दुल हुसैन (गौहाटी) III.

वाल्डिंग हास : अन्दुल हुसैन (गौहाटी) I; देशबन्धु दास (कलकत्ता) II और विजयकुमार (मद्रास) III.

पोमेल्ल हास : विजय कुमार (मद्रास) I; के० राजेन्द्र (हैदराबाद) और कमलजीत कुमार (हैदराबाद) (दोनों) II और देशबन्धु दास (कलकत्ता) III.

पैरेलल बार : अब्दुल हुसैन (गौहाटी) I; विजयकुमार (मद्रास) II और के० राजेन्द्रन (हैदराबाद) III.

अन्तर्रैञ्ज वालीबॉल टूर्नामेंट

ग्रुपकेन्द्र नागपुर में 18 से 23 अगस्त 1986 तक खेले गये अन्तर्रैञ्ज वालीबॉल टूर्नामेंट में अजमेर रेंज चैम्पियन रही, जबकि मद्रास और हैदराबाद रेंजें क्रमशः द्वितीय और तृतीय रहीं।

सदा मीठे बोलने वाले मनुष्य सहज में ही मिल जाते हैं; किन्तु अप्रिय वचन वाला होता हुआ भी हितकारी जो हो ऐसे वचन को बोलने और सुनने वाला व्यक्ति दुर्लभ है।

बिदुरनिति ।

वांछित आतंकवादी बन्दी

बटाला में 13 सितम्बर 1986 को जब एक सिख आतंकवादी साइकिल पर एक अन्य आतंकवादी के साथ 12 बटालियन, के० रि०पु० बल के मुख्यालय से जा रहा था, बन्दी बनाया गया।

जब रेजीमेंटल पुलिस (RP) के जवान ने उन दोनों को रुकने को कहा, इन्होंने भागने का यत्न किया, जिसपर एक दूसरे सिपाही ने फायरिंग की स्थिति संभाली। दोनों आतंकवादी साइकिल छोड़, धान के खेत की ओर भागे। के० रि०पु० बल के जवानों ने पीछा करने के बाद, एक को बन्दी बना लिया, जिसने स्वयं को बटाला के नधवल ग्राम का दैविन्दर सिंह बताया।

पूछताछ के समय, बन्दी ने बताया कि इस गोलाबारूद को वे दयालगढ़ के किसी अन्य पुरुष को देने जा रहे थे और देवयोग से, के० रि०पु० बल के परिसर में ठहर गये

दूसरा आतंकवादी अन्धकार का लाभ उठाकर बच भागा। स्थानीय पुलिस ने बाद को बताया कि बन्दी आतंकवादी एक अत्यन्त वाँछित अपराधी था।

मुठभेड़ में एक आतंकवादी गिरफ्तार

पिछले अगस्त की एक रात को एक मुठभेड़ में 48 बटालियन के०रि०पु० बल की 'सी' कम्पनी ने अमृतसर के शाहबाजपुर ग्राम के एक उग्र आतंकवादी अमरसिंह को गिरफ्तार किया।

यह सूचना पाते ही कि दो सशस्त्र आतंकपंथी अमृतसर के बागीपुर ग्राम के पास के एक खेत में छिपे हुए हैं, हेड कान्स्टेबल बैजनाथ के नेतृत्व में जवान वहाँ जा धाये। जब वे संदिग्ध क्षेत्र की खोजबीन कर रहे थे, तभी खेत में कुछ गतिविधि पाई और आतंकपंथियों से आत्मसमर्पण को कहा। जवाब में आतंकपंथियों ने उन पर गोलियाँ चलाई; तब ला० ना० गगन बहादुर ने संदिग्ध स्थल पर दो राउण्ड फायर किये।

आतंकवादियों की फायरिंग के कुछ समय बाद, के०रि० पु० बल के जवान चोरी चोरी उक्त स्थल पर पहुंचे और उनमें एक को बन्दी बना लिया, जो घायल पड़ा था। दूसरा अन्धकार का लाभ उठाकर बच भागा था।

हास्य-व्यंग्य :

सिगरेट पुराण

ले०—राजेश जोशी, पुलिस उपाधीक्षक

(79 बटालियन, के.रि.पु. बल)

तीस दिन के उस महिने में छत्तीसवीं बार मैंने प्रण किया कि सिगरेट को अब हाथ नहीं लगाऊंगा। प्रण करने से पहले चार-पाँच सिगरेटें लगातार पीं, इस ताव में तब अति हो जाये और उससे घृणा हो जाये। जब उबकाई प्राने लगी, तो दर्पण में खुद को ही क्रोध में डाँटा, बस, और नहीं पियोगे? तत्पश्चात् उस सिगरेट के पैकेट को गला घोटने के अन्दाज में मरोड़ा और पूरी ताकत लगा कर खिड़की से दूर फेंक दिया। अलविदा सिगरेट ! बहुत सताया तूने।

फिर ऐश-टे साफ करके, बक्से में सबसे नीचे दबाकर रख दी। इसकी अब क्या जरूरत? अपने मह को ताजा करने के लिये एक बार फिर दाँत मांजे खुशबू के लिये,

एक छोटी इलायची मुँह में डाल ली। ठंडक के लिये, एक विक्स की गोली भी चूसी। अब तो सिगरेट की गंध से मुँह सड़ने का सवाल ही नहीं था। शीशे में पीले दाँत देखे। दो-चार महिने में वही पुरानी सफेद चमक लौट आयेगी, दोनों टाइम दाँत जो माँजूंगा।

फिर मैंने हिसाब लगाना शुरू किया। एक दिन में पांच रुपये की सिगरेट पी जाता था। माचिस का खर्च अलग, माचिस को खैर छोड़ो। अब मेरे डेढ़ सौ रुपये महीना बचेंगे। यानी कि एक साल में अठारह सौ। मैं चौंक गया। इक्कीस साल बाद जब मैं रिटायर होऊँगा, तो हर आठ साल में ये अठारह सौ रुपये बढ़कर चौदह हजार चार सौ रुपये हो जायेंगे। फिर मैंने सेवाकाल का हिसाब—किताब किया कि यदि ये अठारह सौ रुपये मैं हर साल जमा कराता जाऊँ, तो रिटायरमेंट तक लगभग लाखों रुपये हो जायेंगे। सिर्फ सिगरेट छोड़ने की बदौलत, बाप रे! मैं खुशी से झूम उठा; सिर्फ ये ही नहीं, कैंसर और दमा के डर का कीड़ा जो दिमाग में घूमता रहता है, सदा को दफा हो जायेगा। सुबह की खौं-खौं से अब छुट्टी मिल जायेगी। अचानक ही मुझे धूम्रपान की मूर्खता करनेवालों पर तरस आने लगा। चलो, मैं समय रहते चेत गया।

फिर मैंने बीते चौदह सालों में पी गई सिगरेट का हिसाब लगाया। यदि नहीं पी होती, तो ब्याज लगाकर आज हजारों रुपया मेरे पास होता। इस नुकसान पर मैं लग-भग रो दिया

तीन-चार घण्टे बाद सिगरेट पीने की ललक उठी। पर अब तो सवाल ही नहीं था। मैं कमरे से बरामदे तक चक्कर काटता रहा। तभी मेरा मित्र आ गया। मन में सोचा—आ मुफ्तखोर, बहुत सिगरेट पी हैं तूने मेरी, आज से मैंने छोड़ दी है, मांग के देख, ठेंगा दिखाऊँगा। पर आज उल्टा हा, मेरे मित्र ने अपनी जेब से लाल चमकती डनहिल की डब्बी निकाली। “ले बे पी! मर्वेन्ट नेवी ! मेरा दोस्त दे गया है, हम लोग तो इसे खरीद भी नहीं सकते।”

डनहिल ! वो भी इस मंगतू मित्र की ओर से। ‘कभी-कभी सिगरेट पीने में कोई हर्ज नहीं है’ मैंने सोचा और फिर सोसाइटी में मूव करने के लिये कभी-कभी सुलगाने में ठीक ही रहता है—यह सोचकर मैंने एक सिगरेट सुलगाई और गहरा कश लिया। फिर दूसरी सुलगाई, उसके बाद जब मित्र को छोड़ने आया, तो लौटने पर पान की दुकान से एक नया सिगरेट का पैकेट लेता आया। सोचा, कल पहली तारीख है; नये-महीने की शुरूआत सिगरेट छोड़ने से करूँगा। आज चाहे जितनी पी लू, कल से तो छूने का सवाल ही नहीं है।

महान फोर्स

[रचायेता : ना० रामपाल, 3 सिगनल बटालियन]

फोर्स महान हो गई, भारत की शान हो गई
ना ये पंजाब की, ना ये मद्रास की
ना ये गुजरात की, ना ये आसाम की
इसको सब जानते हैं ये है हिन्दुस्तान की
फोर्स महान हो गई, भारत.....
अनुशासन अनूठा इसका, वेश भूषा निराली
सेवा भक्ति पक्की निष्ठ, अचूक वफादारी
भारत के कोने-कोने में, पहचान हो गई
फोर्स महान हो गई, भारत
इसके दृढ़ संकल्प के आगे, डटे ना अत्याचारी
मुहँ की खाई सबने, जिसने की देश की गद्दारी
देश की शान बचाने को, कुर्बान हो गई
फोर्स महान हो गई, भारत.....
आधुनिक हथियारों से लैस, इसके कर्मचारी
खेल-कूद के मैदान में भी, बाजी इसने मारी
कानून-व्यवस्था में इसकी, मांग हो गई
फोर्स महान
सी० आर० पी० कहते इसको, नाम से दुश्मन डरते
जहाँ भी जाती, अत्याचारी दुम दबा कर भगते
देश को इस आरक्षी बल पर नाज हो गई
फोर्स महान.....

ईमानदारी के लिये पुरस्कृत



18 जुलाई 1986 पुलिस उपमहानिरीक्षक श्रीनगर के कार्यालय के पास का० रामप्यारे प्रसाद, 52 बटालियन ने 700 रु० पड़े पाये। उसने उनको स्टाफ आफिसर के पास जमा कर अनुकरणीय ईमानदारी दिखायी। श्री के. एल. दुबे, पुलिस उपमहानिरीक्षक, श्रीनगर ने इस सिपाही को उसको ईमानदारी के लिये 50 रु० का नकद पुरस्कार प्रदान किया।

सूक्तिसुधा

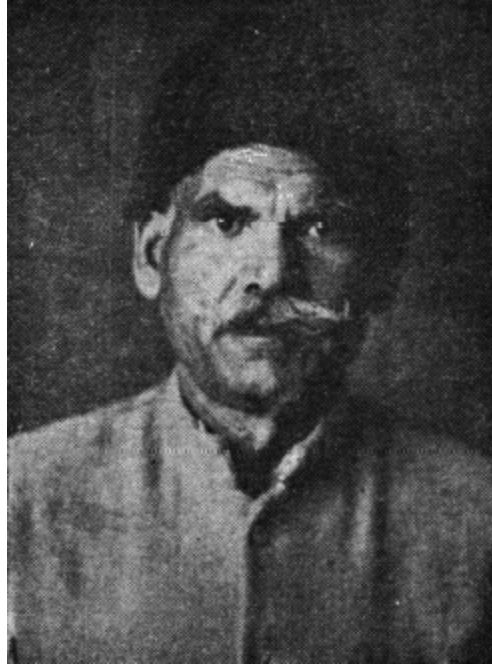
यदि दण्ड देने वाला नहीं हो, तब जनता मछलियों की तरह एक दूसरे को खाने लग जाये।

महापुराण

ना तो सबका विश्वास करें, ना ही सबके प्रति सन्देह करें।

योगवसिष्ठ

बल का आधार स्तम्भ



लाल किले पर 100 मीटर दौड़ के लिये हरियाणा का एक 17 वर्षीय दुबला पतला युवक खड़ा था। सीटी बजते ही, वह बिजली की तरह आगे बढ़ा और सबसे पहले दूरी पार कर गया। दो अंग्रेजों में से एक जो डाक्टर था, उसने युवक की पीठ थपथपायी। डॉक्टरी परीक्षा के बाद, वह के० रि० पु० बल (तत्कालीन सम्राट प्रतिनिधि पुलिस) में भर्ती कर लिया गया। वह तरुण अगड़ी राम था और तिथि थी 22 दिसम्बर 1939। दोनों अंग्रेज के० रि० पु० बल प्रथम बटालियन के श्री चर्चिल और डॉ० मोरगन थे।

64-वर्षीय अगड़ीराम, 54 से अधिक आयु का नहीं दीखता है। उसकी चुस्त देहाकृति और प्रसन्न मुख, उसके सैनिक अतीत की गाथा बताते हैं, जिसे वह गर्व के साथ वर्णन करता है।

नीमच में प्रशिक्षण पाने के शीघ्र बाद, वह अपनी कम्पनी के साथ जाओरा में डाकुओं के उपद्रवों से निपटने गया। दो वर्ष के उपरान्त, वह कम्पनी सिन्ध, हैदराबाद (अब पाकिस्तान में) गई।

विभाजन के समय, के० रि० पु० बल की कम्पनियों ने उन रेलगामियों की यात्रा रक्षा की, जो यात्रियों को पाकिस्तान से ले जा रही थीं।

1975 में उपनिरीक्षक के रूप में रिटायर होने से पहले, अगड़ीराम उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम-विभिन्न स्थानों पर निरत रहा। नेत्र बिचका कर, वह बताता है कि के० रि० पु० बल में भर्ती होने के समय, वह अनपढ़ था।

अपने यत्नों से, उसने पढ़ना-लिखना शुरू किया और विभागीय परीक्षामों में उत्तीर्ण हुआ। इन तमाम वर्षों में, जब से वह सेवा-निवृत्त हुआ है, के० रि० पु० बल में भारी परिवर्तन आये हैं। जबकि अनुशासन बहुत कुछ कम हो गया है, जन-कल्याण ने बहुत महत्व पा लिया है।

350 रु० को पेंशन से अगडोराम अपनी पत्नी और दो पुत्रों का लालन-पालन करता है, जिनमें एक इन्हीं दिनों के० रि० पु० बल में भर्ती हुआ है।

उसे के० रि० पु० बल से अलग होने का दुःख है, यद्यपि उसे के० रि० पु० बल की गतिविधियों से सदा अवगत रहने की इच्छा है।

प्रतिरक्षा बल के सेवानिवृत्त सैनिकों की उत्तम देखरेख होती है, किन्तु के० रि० पु० बल में ऐसा कुछ नहीं है। उसके कथनानुसार, के० रि० पु० बल के भूतपूर्व जवानों की भलाई के लिये भी कुछ किया जाना चाहिये।

पुस्तकीय राज्यसाहाय्य

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की सभी यूनिटों को, उपनिदेशक (प्रशासन) ने सिग्नल भेज कर पुस्तक-राज्यसाहाय्य के लिये दावे मांगे हैं। यह सहायता चतुर्थश्रेणी के उन कर्मचारियों के लिये बढ़ायी गयी है, जिनके बालक 1 से लेकर 4 कक्षा तक में पढ़ते हैं। वे 30 रु० प्रति वर्ष पायेंगे। जिन के बच्चे उच्चतर कक्षाओं में पढ़ते हैं, बालकों की कक्षाओं के अनुसार वे उच्चतर आर्थिक साहाय्य पायेंगे।

पंजाब की उदारता

पंजाब सरकार द्वारा प्रकाशित एक स्थायी आदेश में, उस राज्य में सेवा करते समय किसी कार्रवाई में मारे गये के० रि० पु० बल के किसी भी कर्मी को एक लाख रुपये की धनराशि दी जायेगी।

इस प्रकार के आदेश, जम्मू-कश्मीर सरकार द्वारा भी जारी करने की आशा है।

राशनराशि में बढोत्तरी

भारत सरकार ने राशन राशि में अंशदान को बढ़ा कर योग्यता-प्रदायी क्षेत्रों में निरत कर्मियों के लिये 183 रु० प्रतिमास प्रतिव्यक्ति और अयोग्यताप्रद क्षेत्रों में नियुक्त सेवीवर्ग के लिये 161 रु० प्रतिमास प्रतिव्यक्ति कर दिया है।

स्थिर यूनिटों में निरत अराजपत्रित योधाकृत कर्मियों को 80 रु० प्रतिमास प्रतिव्यक्ति वाली वर्तमान दर ही चालू रहेगी।

महिला बटालियन की सामारोहिक वर्दी

माहेला बटालियन को माहेला पुलिस के लिए पुरुष बटालियन के सदस्यों को ठीक जैसी सामारोहिक वर्दी रहेगी।

अन्तिम निर्णय लेने तक, महिलायें पुरुषों के समान ही पगड़ी सिर पर धारण करेंगी।

सब को आसमानी डोरी

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कर्मियों की वर्दी में सीटी की खाकी डोरी का स्थान आसमानी डोरी लेगी। सीधे हाथ की आस्तीन पर स्कन्ध बैज के नीचे, के०रि०पु० बल एम्बिलम नीले रंग में धारण किये जायेंगे।

दुर्घटनाग्रस्त सैनिकों की सेवा शुश्रूषा

मिज़ोरम में सरधिप के पास जब गहरे नाले में 19 अगस्त 1986 को सेना सेवा कोर (ए. एस. सी.) की गाड़ी जा गिरी तब 58 बटालियन के जवानों ने पाँच शव और 26 घायल सैनिकों को जा निकाला। जब लुंगलेह जाने वाले उस बटालियन के कानवाय कमांडर, ना० वाई. वाई. एरियर को नाले में उस गाड़ी के गिरने की सूचना मिली, तब उसने के०रि०पु० बल के वाहनों द्वारा मृतकों और घायलों को सरधिप सिविल अस्पताल में पहुँचाने का प्रबन्ध किया। बाद में हताहतों को एज़ल के सैनिक अस्पताल में ले जाया गया।

घायलों में, 58 बटालियन का कां० ई० ए० कण्डोलना भी था। सैनिक अधिकारियों ने के०रि०पु० बल के जवानों द्वारा दी गई सामयिक सहायता की भूरि-भूरि सराहना की।

मुख्य सम्पादक : एच. एस. सेठी।

सम्पादक : एम. पी. नथैनियल तथा जे. एस. शर्मा।

मुद्रक : सी. आर. पी. एफ. प्रेस, झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-110072

मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक, के०रि०पु० बल, ब्लाक-1, सी. जी. ओ. काम्पलेक्स, लोधी रोड़, नई दिल्ली-110003 की ओर से एच. एस. सेठी।